विद्वद्विनोदिनी

- संयोजक -

पंडित मुनि श्री कल्याण ऋषिजी महाराज साब

सम्पादक

डॉ. भागचन्द्र जैन,

एम. ए., पी. एच. डी. (Ceylon)

अध्यक्ष, पालि-प्राकृत विभाग,

नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर.

प्रकाशक

श्री. अमोल जैन ज्ञानालय,

धुलिया (महाराष्ट्र)

पुस्तक :–

विद्वद्विनोदिनी

संयोजक :–

पं. मुनि श्री कल्याण ऋषिजी म.सा.

सम्पादक :–

डॉ. भागचन्द्र जैन

प्रथम संस्करण :–

२००० प्रतियाँ,

नवम्बर १९६८

मूल्य ५.००

प्रकाशक :–

श्री अमोल जैन ज्ञानालय धुलिया, (महाराष्ट्र)

मुद्रक :–

विश्वास मुद्रण, न्यु इतवारी रोड, नागपुर-२.

आर्थिक सहयोग-दाता

५०० श्री. एक धर्मानुरागी श्राविका, बालाघाट

२५१ श्री. भंवरलालजी मुणोत नागपुर

१५१ श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ, इतवारी, नागपुर

१०१ श्री. शांतीलाल सुखलाल कामदार नागपुर

१०१ श्री. फुलचंदजी बुंदेला नागपुर

१०१ श्री. मावजी लखमशी भाई शाह नागपुर

१०१ श्री. वल्लभजी खीमजी भारा नागपुर

१०० श्री. शांतीलालजी सिसोदीया आर्वी

५१ श्री. चंपाबाई ध्र. पदमचंदजी बैद बालाघाट

५१ श्री. मुणोत बंधु, धारस्कर रोड, नागपुर

शेष व्यय संस्था द्वारा किया गया।

उपरोक्त सज्जनोंने इस पुस्तक के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की, इसलिए श्री. अमोल जैन ज्ञानालय उनका हार्दिक आभारी है।

— प्रकाशक

—: विषय - सूची :—

उपस्थापना

व्यक्ति स्वभावतः रहस्यात्मक प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख होता है। वह प्रत्येक कार्य और उसकी दिशाके मूल सूत्रको अधिकाधिक गोपनीय रखनेका प्रयत्न करता है। ताकि साधारण समाज उसे न समझ सके। प्रहेलिका या पहेलीका जन्म ऐसी ही प्रवृत्ति से हुआ जान पड़ता है। डॉ. फ्रेजरका मन्तव्य है कि पहेलियों का प्रारम्भ उस समय हुआ होगा जब वक्ताको अभीप्सित अर्थकी स्पष्ट अभिव्यक्तिमें किसी प्रकारकी कठिनाई हुई होगी।[1] यह अनुमान भी बहुत अंशोंमें सही कहा जा सकता है। प्रायः यह देखा जाता है कि जब किसी वस्तु विशेष का वर्णन करना हो, और उसके लिए कोई उपयुक्त शब्द मनमें नहीं आ रहा हो, तो उस वस्तु विशेष का मात्र वर्णन कर दिया जाता है। यही बादमें प्रहेलिका बन जाती है। प्रहेलिका की व्युत्पत्ति भी यही अर्थ व्यक्त करती है। प्रहिलति अभिप्रायं सूचयतीति प्रहेलिका। प्र + हिल् अभिप्राय सूचने + क्वुन्, टापि, अत्, इत्वं।

दण्डी ने प्रहेलिका उसे कहा है जिसमें कुछ छिपाकर कहा जाय— प्रहेलिका तु सा ज्ञेया वच : संवृतकारी यत्।[2] विदग्धमुखमण्डन ने इसे स्वरूपार्थ के गोपन के उद्देश्यसे कहा गया कथन माना है।[3]

भारतीय हर वस्तुकी प्राचीनता सिद्ध करनेके लिए वेदों की ओर दौड़ते हैं। यदि यह सत्य माना जाय तो प्रहेलिका के भी

---

१. दि गोल्डन बाऊ-भाग ९ पृ. १२१
२. काव्यादर्श
३. व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्।
यत्र बाह्यान्तरावर्थौ कथ्येते सा प्रहेलिका॥ १५२

बीज वेदों, उपनिषदोंमें देखे जा सकते हैं। वैदिक युगमें अश्वमेध यज्ञ के पूर्व 'होता' और 'ब्राह्मण' ब्रह्मोदय पूछा करते थे जो अनुष्ठानका एक विशेष व आवश्यक अंग माना जाता था।[४] यही ब्रह्मोदय और कुछ नहीं मात्र, प्रहेलिका है।

वैदिक ऋषियोंने ऋचाओंको रूपकों द्वारा अपने विचार अभिव्यक्त कर उन्हें दुर्बोध बना दिया है। उदाहरणार्थ—

> चत्वारि शृङ्गा त्रयो यस्य पादा,
> द्वे शीर्षे सप्तहस्ता सो अस्य।
> त्रिधा बद्धो ऋषभो रोरवीति,
> महादेवो मर्त्या आविवेश॥

प्रस्तुत ऋचा में 'ऋषभ कौन है' इस विषयमें विद्वानों में मतैक्य नहीं है। साधारण समाज के लिए यह दुर्बोध ही है। यही पहेली है। "कस्मै देवाय हविषा विधेम" भी प्रहेलिका का एक रूप ही है। उपनिषदोंकी रहस्यात्मक भाषामें नचिकेता—यम के संवाद में उपस्थित हुए प्रश्न प्रहेलिकाओं का स्मरण दिलाते हैं।

भारतीय पौराणिक साहित्यमें भी प्रहेलिकायें उपलब्ध होती हैं। युधिष्ठिर और सारस यक्ष की कहानी हम जानते ही हैं। वनवास कालमें नकुल सहदेव आदि पाण्डव किसी तालाब के किनारे अपनी प्यास बुझाने गये। तालाब के देवता—सारस यक्ष—ने यह तभी संभव बताया जब उसके प्रश्नोंका उत्तर दे दिया जाय। सभी भाई उत्तर देनेमें असफल रहे। अन्तमें युधिष्ठिर गये और उनके समक्ष भी यक्षने अपने प्रश्न रखे। प्रश्न ये थे—

---

४. डॉ सत्येन्द्र-बृज और लोकसाहित्यका अध्ययन पृ. ५२०

का वार्ता ? किमाश्चर्यं ? कः पन्था ? कश्च मोदते ?
इति मे चतुरः प्रश्नान् उत्तरं दत्वा जलं पिब ॥

इस संसार में नयी बात क्या है ? आश्चर्यकी कौन सी वस्तु है ? प्रशस्त मार्ग कौन है ? सुखपूर्वक कौन निवास करता है ? प्रस्तुत प्रश्नोंका उत्तर युधिष्ठिर ने क्रमशः निम्नप्रकार दिया—

अस्मिन् महामोहामये कटाहे,
सूर्याग्निना रात्रिदिवेन्धनेन ।
मासर्तुदर्वी परिघट्टनेन,
भूतानि कालः पचतीति वार्ता ॥१॥

अहनि अहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम् ।
शेषाः स्थातुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम् ॥२॥

वेदाः विभिन्ना स्मृतयो विभिन्नाः
नैको मुनि र्यस्य वचः प्रमाणम् ।
धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायां,
महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥ ३ ॥

पञ्चमे ऽहनि षष्ठे वा, शाकं पचति वै गृहे ।
अनृणी चाप्रवासी च, स वारिचर ! मोदते ॥ [५]

संस्कृत प्राकृत साहित्यमें इस प्रकार की प्रहेलिकायें भरी पड़ी हैं। कथासरित्सागर में विनीतमति और विद्योतमा राजकुमारी के संवादमें इसी प्रकार का वाणी चातुर्य देखा जाता है। ऐसे ही प्रसंगमें विनीतमति ने राजकुमारी को पराजित किया और एक भिक्षु ने विनीतमति को भामह ने इन पहेलियोंका उद्भावक रामशर्मा

---

५. देखिये चम्पूभारतम् आदि

च्युति को बताया है ।[६] पर शायद यह प्रहेलिकाके विकसित रूपके सन्दर्भ में कहा गया होगा । पाश्चात्य कथा साहित्य में भी ऐसी अनेक कथायें प्रचलित है जिनमें श्रोताकी बुद्धिकी परीक्षा ली गई है । रानी सेबा की कथा, स्प्रिक्स व सेमसन के कथनों ने आज पहेली का रूप ले लिया है ।

प्रहेलिका को काव्य रूप स्वीकारनेमें आलंकारिकों के बीच मतभेद है । भामहने "नाना धात्वर्थ गम्भीरा यमकव्यपदेशिनी" प्रहेलिका के इस स्वरूप का खण्डन करते हुए इसे काव्यत्व श्रेणीसे दूर कर दिया है[७] परन्तु दण्डीने इसे काव्यदोषसे पूर्व और यमकचित्र आदि अलंकारों के व्याख्यान के बाद प्रहेलिका को काव्य रूप मानते हुए उसके भेदों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन किया है । आचार्य विश्वनाथ को प्रहेलिकामें 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' नहीं दिखाई देता और इसलिए वे इसे "उक्तिवैचिभ्यमात्र ही स्वीकार करते हैं, अलंकार नहीं ।[८] दूसरी ओर आचार्य केशव प्रहेलिकाको काव्यकी श्रेणी में रखना स्वीकार करते हैं और उसका स्वरूप भी प्रदर्शित करते हैं ।[९] आचार्य शुक्लने भी, लगता है, प्रहेलिका को काव्य रूपमें मान्यता दी है ।[१०]

वस्तुत: प्रहेलिका को काव्य के रुपमें स्वीकार किया ही जाना

६. कायवलंकार । २१९

७. वही, २२-०

८. साहित्यपर्पण १०-१७

९. बरविय वस्तु दुराय जहँ कौन हु एक प्रकार ।
तासों कहत प्रहेलिका कविकुल बुद्धि उदार ॥

१०. हिन्दी साहित्यका इतिहास, पृ. ९१

चाहिए। उसमें गूढोक्तिका पुट देकर उक्ति-वैचित्र्य निहित ही है। और उक्ति वैचित्र्यको अलंकार कहा गया है। अप्पय दीक्षित प्रभृति आलंकारिकोंने लोकोक्ति को अलंकार माना है।[११] प्रहेलिका लोकोक्तिसे दूर नहीं। उसीका भेद है। डॉ. सत्येन्द्रने पहेली साहित्य को लोकोक्ति साहित्य का ही अंग माना है। क्योंकि लोकोक्तियोंमें शब्द संकोच द्वारा अर्थ विस्तार का जो तत्त्व निहित है वह पहेलीमें विद्यमान है।[१२]

क्रीड़ा गोष्ठी विनोदेषु तज्ज्ञैराकीर्ण मन्त्रणे।
परव्यामोहने चापि सोपयोगा : प्रहेलिका :॥

प्रहेलिका विनोदगोष्ठी में विभिन्न प्रकार के मनोरञ्जन, गुप्त भाषण, वक्ता के बुद्धि–विलास, श्रोताकी बुद्धि परीक्षा तथा दूसरों को अनभिज्ञ बनाकर उपहास का विषय बनानेका साधन है। इसलिए दण्डीने रसस्वादनमें परिपन्थी होने के बावजूद उसका निरूपण करना निरर्थक नहीं माना। पूर्वाचार्यों के अनुसार दण्डीने प्रहेलिका के दो भेद निर्धारित किये हैं। शुद्ध प्रहेलिकायें और दुष्ट प्रहेलिकायें। शुद्ध प्रहेलिकाओं के सोलह भेद हैं और दुष्ट प्रहेलिकाओं के चौदह[१३]। उदाहरणार्थ–

जिस प्रहेलिकामें पदोंमें सन्धि हो जानेसे विवक्षित अर्थ प्रच्छन्न हो जाय उसे समागता पहेली कहते हैं। और जहाँ पर योगसे विवक्षितार्थका बोध होता है परन्तु रूढि के द्वारा पर-

११. लोकप्रवदानुकृति र्लोकोक्तिरिति भण्यते, ९७
१२. व्रज लोकसाहित्यका अध्ययन पृ. ५-२०
१३. एताः षोडशनिर्दिष्टाः पूर्वाचार्यैः प्रहेलिका।
दुष्प्रहेलिकाश्चान्यास्तैरधीताश्चतुर्दश॥ काव्यादर्श ३-१०६

व्यञ्जना की जाय उसे वञ्चिता नामक पहेली कहते हैं। जो पहेलिका असम्बद्ध पदोंसे व्यवहित सम्बद्ध पद होने के कारण अर्थज्ञानमें कठिनाई उत्पन्न करती हो उसे व्युत्क्राता कहते हैं और जिसके पद समुदाय दुर्बोध अर्थ वाले हों उसे प्रमुषिता नामक पहेली कहते हैं।

जो प्रहेलिका गौणार्थ उपचरित पदोंसे ग्रथित हो उसे सादृश्यमूलक होनेसे समानरूपा नामक प्रहेलिका कहते हैं और जहाँ शास्त्रीय सूत्रोंसे भिन्न होनेपर भी उसका वह योगार्थ अप्रसिद्ध हो उसे परुषा प्रहेलिका कहते हैं।

संख्याता नामक प्रहेलिकामें वर्णगणना अथवा संख्यावाचक पद प्रयोग व्यामोहकारी होते हैं और प्रकल्पिता नामक प्रहेलिकामें प्रथम प्रतीत होनेवाले अर्थ से भिन्न अर्थ पर्यवसानमें प्रतीत होता है।

नामान्तरिता नामक प्रहेलिकामें अनेकार्थक शब्द से नाममें अनेक प्रकारके अर्थोंकी कल्पना की जाती है और निभृतार्था नामक प्रहेलिका में प्रकृताप्रकृत साधारण धर्मप्रतिपादक शब्द द्वारा प्रकृत अर्थका गोपन किया जाता है।

प्रयुक्त शब्दोंमें पर्यायिकृत योजना विशेष द्वारा जो प्रहेलिका बन जाती है उसे समानशब्दा और जिसमें वाचक शब्दों द्वारा अर्थ- निर्देश होने पर भी भोक्ताओंको मूढ़ हो जाना पड़े उसे संमूढा नामक प्रहेलिका कहते हैं।

जहाँ यौगिक शब्दोंकी परम्परा एक-एक रूढ़ अर्थ को बतानेके अभिप्रायसे प्रयुक्त हो उसे परिहारिका कहा जाता है और

जहाँ आधेय तो स्पष्ट रूपसे कहा जाता हो परन्तु आधार प्रच्छन्न हो उसे एकच्छन्ना प्रहेलिका कहते हैं।

जिसमें आश्रित और आश्रय दोनोंका गोपन किया जाता है उसे उभयच्छन्ना नामक प्रहेलिका कहा जाता है और जिसमें समागता आदि अनेक प्रहेलिकाओंके लक्षण एक साथ समाविष्ट हों उसे संकीर्णा प्रहेलिका कहा जाता है।

विदग्धमुखमण्डन (१५२) में प्रहेलिकाके दो भेद किये गये हैं-आर्थी प्रहेलिका और शाब्दी प्रहेलिका। आर्थी प्रहेलिका का उदाहरण है :-

तरुण्यालिङ्गितः कण्ठे नितम्बस्थलमाश्रिता।
गुरूणां सन्निधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः॥

इसका उत्तर है जलघट। शाब्दी प्रहेलिकाका भी उदाहरण दिया गया है और वह यह है :-

सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता
नितान्तरक्ताप्यसितैवनित्यम्।
यथोक्तवादिन्यपि नैव दूती
का नाम कान्तेति निवेदयन्ति॥

इसका उत्तर है सारिका। इसी प्रकार और भी भेद किये गये हैं अन्तःप्रश्न, बहिप्रश्न, बहिरन्तःप्रश्न, जातिप्रश्न, पृष्टप्रश्न, उत्तरप्रश्न इत्यादि। सुभाषित भाण्डार में कुछ प्रहेलिकायें संग्रहीत हैं जिन्हें अन्तर्लापिका और बहिर्लापिका जैसे भेदोंमें विभाजित किया गया है।

संस्कृत का प्रहेलिका शब्द ही हिन्दी में 'पहेली' बन गया है। संस्कृतमें ब्रह्मोद्य, प्रश्न व कूट शब्द भी प्रचलित हैं। हरियानामें इसे फाली आडना अथवा गाहा खेलना कहा जाता है। मराठी व गुजरातीमें इसके लिए उखाणा, सिन्धी में उखाणी, बंगलामें पहेली, तमिल व मलयालम में विडिकदाई व विडिकदा तथा तेलगूमें विडिकथ शब्द मिलते हैं। कन्नड में ओगणु, ओडकथे, ओडगते, प्रहलिके और सौचिगार्थ ये पांच शब्द है। अंग्रेजी में इसके लिए Riddle, Quiz, Enigma, Puzzle, Conundrum आदि शब्द मिलते हैं। इसीको हमने एक और नाम दिया है-विद्वद्विनोदीनी।

पहेलियां प्रायः ग्रामीण व्यक्तियों के बुद्धि-कौशल का परिचय अधिक देती हैं। रामनरेश त्रिपाठीने लिखा है।" गांववालोंको न सूर मिले, न तुलसी, न कबीर, न केशव, उन्होंने युगोंसे चली आती हुई ज्ञानकी इस घुमावदार सलौनी नदी को अभी तक सूखने नहीं दिया। ऋग्वेदका यह देवता देहाती रूपमें आज भी हमारे सामने है। सभ्य और शिक्षित समाजके लिए ग्रामीणों के पास यह अनमोल निधि है।"

पहेलियोंके निर्माणमें सुरम्य ग्रामीण वातावरण अपेक्षित होता है। यही सुरम्य वातावरण नयी प्रतिमाओं को जनता के समक्ष लाता है। भले ही उन प्रतिमाओं के नाम अज्ञात बने रहें। श्याम परमार ने ठीक ही लिखा है कि पहेलियों की निर्मात्री बुद्धि परम्परा प्रचलित लोक साहित्यमें आत्मीय वातावरणमें विकसित होती है। उसके लिए दृष्टिका पैनापन, और उक्तिवैचित्र्य तथा विनोदकी भावनायें आवश्यक हैं। पहेली वैसे तो वस्तुका वर्णन

होती है। पर उसे उपमानों के सहारे प्रस्तुत किया जाता है।

हिन्दी पहेलियों के अनेक प्रकार प्रदर्शित किये गये हैं। उदाहरणार्थ रामा शंकर त्रिपाठी ने सात प्रकारकी पहेलियाँ कही हैं।

१. कृषि सम्बन्धी।
२. भोजन सम्बन्धी।
३. घरेलु वस्तु सम्बन्धी ॥
४. प्राणी सम्बन्धी।
५. प्रकृति सम्बन्धी।
६. अंगप्रत्यंग सम्बन्धी।
७. विविध।

डॉक्टर शंकरलाल यादव इन भेदों में पौराणिक कथा संम्बधी पहेलियाँ और जोड़ देते हैं। उदाहरणार्थ–

आप क्वांरा बाप क्वांरा और कंवारी महतारी।
पुत्र पिता ने गोद लिया रहया देखो न वेदधारी॥
इसमें मकरध्वज और हनुमानकी पौराणिक कथा है।

पहेलियोमें शब्दचित्र होता है। श्लेष, रूपक, उपमा आदि अलंकारों के आधारपर ग्रामीण प्रतिभायें अपना बुद्धि-चातुर्य प्रदर्शित करते हैं। उदाहरणार्थ—

दिल्ली बोई बेल, मंगर पै नाल गये।
हथनापुर फूले फूल पटा ले पाम गये॥

मनोरञ्जनार्थं निर्मित पहेली—

कक्का जी हमने कक्कू देखा, कहो भतीजा कैसे देख्या।
बिना चोंचके चुनते देखा, बिना परोंके उड़ते देख्या॥
यहां कृषक के कुएका चाक है।

रुपक शैली द्वारा—

कच्चे फल सुहावने, गद्दर हुए मिठान।
वे फल कौनसे जो पक्के हों करवान॥

यहां कच्चे, गद्दर व पके फलोंसे तात्पर्य बाल्य, युवा, और वृद्धावस्था गत रूपसे है।

इस तरह की हिन्दी पहेलिकाओंके क्षेत्रमें अमीर खुसरो (१२-१३ वीं शती) का नाम सर्वाधिक प्रचलित है। आचार्य शुक्लने उनके सम्बन्धमें लिखा है — "जिस ढंग के दोहे, तुक-बन्दियां और पहेलियाँ आदि साधारण जनता की बोलचालमें इन्हें प्रचलित मिलीं उसी ढंगकी पद्य-पहेलियां आदि कहनेकी उत्कण्ठा इन्हें भी हुई।

भारतीय भाषाओंमें इस प्रकारकी प्रहेलिकायें लोक साहित्यके रुपमें अपार पड़ी हुई हैं। साहित्यका इतना महत्वपूर्ण अंग आज उपेक्षित-सा दिखाई दे रहा है। देहातोंमें घूमघूमकर प्रौढ़ और वृद्ध-वृद्धाओंसे सम्पर्क किया जाय तो एतद्विषयक विपुल सामग्री संकलित की जा सकती है। अन्यथा यह साहित्य हमारे वृद्ध व्यक्तियोंके साथ ही कालकवलित हो जायेगा।

इसी विचारसे प्रेरित पूज्य मुनि कल्याण ऋषिजी ने पहेलियोंका एक ऐसा संकलन करने-कराने का विचार अभिव्यक्त किया जिसमें संस्कृत, मराठी, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं के लोकसाहित्यमें निहित सामग्री एकत्रित की जा सके।

१९६६ के चातुर्मास पूर्ण होनेके लगभग डेढ़ माह पूर्व यह विचार उन्होंने मेरे समक्ष रखा। मुनिजी का यह विचार नहीं, आदेश था। अस्वीकार करनेका कोई प्रश्न ही नहीं था। और यह भी आवश्यक था कि यह संकलन चार्तुमास होने के पूर्व समाप्त हो जाये इसलिए कुछ सामग्री का निर्देशन मुनिजी ने दिया और कुछ मैंने खोजी। और इस तरहसे समय की सीमा के भीतर ही यह कार्य सम्पूर्ण हो गया। सच तो यह है कि मुनिजी का संयोजन निर्देशन, व आशीर्वाद ही इस कार्य को इतनी जल्दी समाप्त करा सका। इसलिए श्रद्धा व भक्ति के साथ प्रस्तुत संकलन उन्हीं के लिए समर्पित करता हूँ।

समय कम होने के कारण देहातोंमें स्वयं जाकर पहेलियों-का संकलन अधिक नहीं कर सका। फलतः प्रकाशित साहित्य ही प्रस्तुत संकलनका आधार बनाना पड़ा। एतदर्थ मैं उन सभी लेखकोंका आभारी हूँ जिनके ग्रन्थोंसे सामग्री लेकर संकलित की गई है। विशेषरुपसे श्री रामनरेश त्रिपाठी का। प्रस्तुत संकलन चातुर्मास पूर्ण होने के पूर्व ही कर लिया गया था और कभी का प्रकाशित भी हो जाता परन्तु अचानक कुछेक अवरोध आ जानेके कारण यह नहीं हो सका।

संकलनका नाम "विद्वद्विनोदिनी" मेरे अग्रजतुल्य डॉ. अजयमित्र शास्त्री की सूझका परिणाम है। यह कैसा है? इस प्रश्नका उत्तर मैं पाठकोंपर ही छोड़ता हूँ।

प्रस्तुत संकलनमें संस्कृत, हिन्दी और गुजराती लोक साहित्यसे प्रहेलिकाओंका संग्रह किया गया है। इसमें पालि व प्राकृत साहित्यसे भी प्रहेलिकाओंका संग्रह किया था परन्तु उन्हें इस संकलनमें सम्मिलित नहीं किया जा सका। संस्कृत पद्योंका अनुवाद मेरा अपना है। उसमें मैंने कहीं कहीं शब्दश: अनुवाद न कर भावार्थ दे देना ही उचित समझा। सभी पहेलियोंके उत्तर खोजनेके लिए परिशिष्ट रखे हैं ताकि बुद्धिचातुर्य परीक्षा मूल भागसे ही की जा सके।

समयाभाव के कारण इस सकलन में अनेक त्रुटियां रह गई हैं। पाठक उनका उत्तरदायी मुझे समझें। और यदि उन्हें इसमें कुछ अच्छी सामग्री दिखाई दे तो उसे महाराज सा. का ही आशीर्वाद मानें।

इस योजना में नागपुर के जैन बन्धु शाह श्री प्रेमजी वसंतजी भाई, श्री पं. रूपचंद्र दीपचन्द्र व मेरी पत्नी सौ. पुष्पलता जैन का भी सहयोग प्रशंसनीय है।

संस्कृत विभाग

१ का वार्ता? किमाश्चर्यं? कः पन्था? कश्च मोदते?
इति मे चतुरः प्रश्नान् उत्तरं दत्त्वा जलं पिब ॥

२ कृष्णमुखी न मार्जारी द्विजिह्वा न च सर्पिणी ।
पञ्च भर्त्री न पाञ्चाली यो जानाति स पण्डितः ॥

३ अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः ।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः ॥

४ वने जाता वने त्यक्ता वने तिष्ठति नित्यशः ।
पण्यस्त्री न तु सा वेश्या यो जानाति स पण्डितः ॥

५ गोपालो नैव गोपालकस्त्रिशूली नैव शंकरः ।
चक्रपाणिः स नो विष्णुर्यो जानाति स पण्डितः ॥

६ वने वसति को वीरो योऽस्थिमांसविवर्जितः ।
असिपत्रमुखे कार्यं कार्यं कृत्वा वनं गतः ॥

७ रविजा शशिकुन्दाभा तापहारी जगत्प्रिया ।
वर्धते वनसङ्गेन न तापी यमुनापि न ॥

८ तरुण्यालिङ्गितः कण्ठे नितम्बस्थलमाश्रितः ।
गुरूणां सन्निधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः ॥

९ आपाण्डु पीनकठिनं वर्तुलं सुमनोहरम् ।
करैराकृष्यतेऽत्यर्थं किं वृध्दैरपि सस्पृहम् ॥

१० एकचक्षुर्न काकोऽयं बिलमिच्छन्न पन्नगः ।
क्षीयते वर्धते चैव न समुद्रो न चन्द्रमाः ॥

११ छत्रधारी न राजासौ जटाधारी न चेश्वरः ।
सृष्टिकर्ता न स ब्रह्मा छिद्रकर्ता न तस्करः ॥

१२ सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता
नितान्तरक्तापि सितैव नित्यम् ।
यथोक्तवादिन्यपि नैव दूती
का नाम कान्तेति निवेदयाशु ॥

१३ पर्वताग्रे रथारुढो भूमौ तिष्ठति सारथिः ।
चक्रवद् भ्रमते पृथ्वी तस्याहं कुलबालिका ॥

१४ पर्वताग्रे रथो याति भूमौ तिष्ठति सारथिः ।
चलते वायुवेगेन पदमेकं न गच्छति ॥

१५ अपूर्वोऽयं मया दृष्टाः कान्तः कमललोचने ।
शोऽन्तरं यो विजानाति स विद्वान्नात्र संशयः ॥

१६ दन्तैर्हीनः शिलाभक्षी निर्जीवो बहुभाषकः ।
गुणस्यूतिसमृद्धोऽपि परपादेन गच्छति ॥

१७ न तस्यादि नं तस्यान्तो मध्ये यस्तस्य तिष्ठति ।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद ॥

१८ वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराज
स्त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणि ।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी
जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघा ॥

१९ सर्वस्वापहरो न तस्करगणो रक्षो न रक्ताशनः
सर्पो नैव बलेशयोऽखिलनिशाचारी न भूतोऽपि च ।
अन्तर्धानपटुर्न सिद्धपुरुषो नाप्याशुगो मारुतस्
तीक्ष्णास्यो न तु सायकस्तमिह ये जानन्ति ते पण्डिताः ॥

२० सर्वस्वापहरो न दस्युकुलजः खट्वाङ्ग भृङ्गेश्वरो
दोषानिष्टकरो न धर्मनिरतः कीलालपो नासुरः ।
नृणां पृष्ठपलाशनो न पिशुनः शीघ्रंगमा नो हयः
शश्वद्रात्रिचरो न राक्षसगणः कोऽयं सखी ब्रूहि मे ॥

२१ चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णु
र्महाबलिष्ठो न च भीमसेन ।
इच्छानुसारी न यति नं योगी,
सीतावियोगी न च रामचन्द्रः ॥

२२ उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वमनं शवकर्पटम् ।
काकविष्ठासमुत्पन्नः पञ्चैतेऽतिपवित्रकाः ।।

२३ अर्धचंद्रसमायुक्तं पुंनाम चतुरक्षरम् ।
ककारादि लकारान्तमिह जानाति पण्डित; ।।

२४ चतुर्मुखो न च ब्रह्मा वृषारूढो न शंकरः ।
निर्जीवी च निराहारी अजस्रं धान्यभक्षणम् ।।

२५ य एवादिः स एवान्तो मध्ये भवति मध्यमः ।
य एतन्नाभिजानिया तृणमात्रं न वेत्ति सः ।।

२६ श्यामञ्च वर्तुलाकारं पुंनाम चतुरक्षरम् ।
शकारादि मकारान्तं यो जानाति स पण्डितः

२७ अनेकसुषिरं वाद्य कान्तं च ऋषिसंज्ञितम् ।
चक्रिणा च सदाराध्यं यो जानाति स पण्डितः ।।

२८ दुर्वारवीर्यं सरुषि त्वयि का प्रसुप्ता
श्यामा ·सपत्नहृदये सुपयोधरा च ।
तुष्टे पुनः प्रणतशत्रुसरोजसूर्ये
सेवाद्यवर्णरहिता वद नाम का स्यात् ।।

२९ नरनारीसमुत्पन्ना सा स्त्री देहविवर्जिता ।
अमुखी कुरुते शब्दं जातमात्रा विनश्यति ।।

३० युधिष्ठरः कस्य पुत्रो गंगा वहति कीदृशी ।
हंसस्य शोभा का वाऽस्ति धर्मस्य त्वरिता गतिः ।।

३१ कं सञ्जघान कृष्णः का शीतलवाहिनी गंगा।
के दारपोषणरताः कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ॥

३२ लंकाभूपनिशाचरो रघुपतिं युद्धे कथं दृष्टवान्
दीनं पाति पितेव वः पशुपति' कस्तस्य वाहःप्रियः।
केनाऽपूर्वफलं नरैः सुकृतिभिः कस्मिन् स्थले भुज्यते,
जारा ये भुवि तान् प्रशास्ति कतमो ह्यपेषा
मिहैवोत्तरम् ॥

३३ का पाण्डुपत्नी गृहभूषणं किं
को रामशत्रुः किमगस्त्यजन्म।
कः सूर्यपुत्रो विपरीतपृच्छा
कुन्ती सुतो रावण कुम्भकर्णः ॥

३४ भोजनान्ते च किं पेयं जयन्तः कस्य वै सुतः।
कथं विष्णुपदं प्रोक्तं तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥

३५ करोति शोभामलके स्त्रियः कोऽ
दृश्या न कांता विधिना च कोक्ता।
अङ्गे तु कस्मिन् दहनः पुरारेः
सिन्दूरबिन्दूर्विधवा ललाटे ॥

३६ कः खे चरति का रम्या का जप्या किं भूषणम्।
को वन्द्यः कीदृशी लङ्का वीरमर्कटकम्पिता ॥

३७ रवेः कवेः किं समरस्य सारं
कृषे र्भयं किं किमुशन्ति भृङ्गाः ।
खलाद्भयं विष्णुपदं च केषां
भागीरथीतीरसमाश्रितानाम् ॥

३८ क्व वसति लघुजन्तुः किं निदानं हि वान्ते
झटिति वद पशुं कं लम्बकण्ठं वदन्ति ।
प्रसवसमयदुःखं वेत्ति का कमिनीनां
तिलतुषपुटकोणे मक्षिकोष्ट्रं प्रसूता ॥

३९ गच्छन्ति क्वाऽजिवन्हौ हुतनिजतनवः कामिनीनां स्वकूलं
किं स्याद्योज्यं विकल्पे क्रकचनखचयैः किं नृसिंहेन भिन्नम् ॥
कीदृग् दित्याः प्रसूतिः किमनलशमनं का नृपैः पालनीयः
को वन्द्यः कः प्रमार्ष्टि त्रिभुवनकलुषं स्वर्धुनीवारिपूरः॥

४० कः प्रार्थ्यते मदनविह्वलया युवत्या
भाति क्व पुण्ड्रकमुपैति कथं बताऽऽयुः ।
क्वाऽनादरो भवति केन च रज्यतेऽब्जं
बाह्याऽस्थि किं फलमुदाहर नालिकेरम् ॥

४१ कस्य मरौ दुरधिगमः कः कमले कथय विरचिताऽऽवासश्च
कैस्तुष्यति चामुण्डा रिपवस्ते वद कुतो भ्रष्टाः ॥

४२ कुत्रोदेत्युदयाचलस्य तरणी रम्या गतिः कस्य खे
कान्याभान्ति च किं करोति गणको यष्टि विधृत्यैति कः।
कस्मिन् जाग्रति जन्तवो न च कदा सूते च काकः प्रियः
शृङ्गाग्रे तुरगस्य भानि गणयत्यन्धोऽन्हि वन्ध्यासुतः ।।

४३ विवाहे पुरन्ध्रीजनै र्लिप्यते का
न के मानमायांति गर्वोन्नता का ।
घने वारिधौ रामतः कम्पते का
हरिद्रा दरिद्राः सरिद्रावणश्रीः ।।

४४ कस्तूरी जायते कस्मात्को हन्ति करिणां कुलम् ।
किं कुर्यात्कातरो युद्धे मृगान्सिहः पलायनम् ।।

४५ अन्यस्त्रीस्पृहयालवो जगति के पद्भ्यामगम्या च का
को धातुर्दशने समस्तमनुजैः का प्राथ्यंते्ऽहर्निशम् ।
दृष्ट्वैकां यवनेश्वरो निजपुरे पद्माननां कामिनीं
मित्रं प्राह किमादरेण सहसा यारानदीदंशमा ।।

४६ कस्मिन् शेते मुरारिः क्व न खलु वसतिर्वायसी
को निषेधः ।
स्त्रीणां रागस्तु कस्मिन् क्व नु खलु सितिमा शौरिसंबो-
धनं किम् ।।
सम्बुद्धिःका हिमांशोर्विधिहरवयसां चाऽपि सम्बुद्धयःका।
ब्रूते लुब्धः कथं वा कुरुकुलहननं केन तत्केशवेन ।।

४७ पुंसःसम्बोधनं किं विदधति करिणां के रुचोऽग्ने द्विषत्किं
का शून्या ते रिपूणां नरवर् नरकं कोऽवधीद्रोचकं किम् ।
के वा वर्षासु न स्युर्विसमिव हरिणा किं नखाग्रैर्विभग्नं
विन्ध्याद्रेः को विसर्पन् विघटयति तरूत्समेदावारिपूरः ॥

४८ अस्य कांता तिथिः कान्त्या के सेवन्ते न सेवकैः ।
को मोहयति लोकांस्त्रीन् मामामा मीनकेतनः ॥

४९ पृथ्वीसंबोधनं कीदृक् कविना परिकीर्तितम् ।
केनेदं मोहितं विश्वं प्रायः केनाप्यते यशः ॥

५० भवत इवातिस्वच्छं कस्याभ्यन्तरमगाधमतिशिशिरम् ।
काव्यामृतरसमग्नस्त्वमिव सदा कः कथय सरसः ॥

५१ वीरे सरुषि रिपूणां नियतं का हृदयशायिनी भवति ।
नभसि प्रस्थितजलदे का राजति हृस्त वद तारा ॥

५२ भ्रमरहितः कीदृक्षो भवतितरां विकसितः पद्मः ।
ज्योतिषिकः कीदृक्षः प्रायो भुवि पूज्यते लोकैः ॥

५३ प्रभवः को गंगाया नगपतिरतिसुभगश्रृङ्गधरः ।
के सेव्यन्ते सेवकसार्थैरत्यर्थमर्थरतैः ॥

५४ अयमुदितो हिमरश्मि र्वनितावदनस्य कीदृशः सदृशः ।
नीलादिकोपलम्भः स्फुरति प्रत्यक्षतः कस्य ॥

५५ गैरिकमनः शिलादिः प्रायेणोत्पद्यते कुतो नगतः ।
यः खलु न चलति पुरुषः स्थानादुक्तः स कीदृक्षः ॥

५६ कः कौ के कं कौ कान् हसति च हसतो हसन्ति
हरिणाक्ष्याः ।
अधरः पल्लवमङ्घ्रीहंसौ कुन्दस्य कोरकान्दन्ताः ॥

५७ सन्तश्च लुब्धाश्च महर्षिसंघा
विप्राः कृषिस्थाः खलु माननीया ।
किं किं सतिच्छन्ति तथैव सर्वे
नेच्छन्ति किं माधवदाधयानम् ॥

५८ कस्मिन्वसन्ति वद मीनगणा विकल्पं
किं वा पदं वदति किं कुरुते विवस्वान् ।
विद्युल्लतावलयवान्पथिकाङ्गनाना
मुद्वेजको भवति कः खलु वारिवाहः ॥

५९ शब्दः प्रभूगत इति प्रचुराभिधायी
कीदृग्भवेद्वदत शब्दविदो विचिन्त्य ।
कीदृग्बृहस्पतिमते विहिताभियोगः
प्रायः पुमान् भवति नास्तिकवर्गमध्यः ॥

६० को निर्दग्धस्त्रिपुररिपुणा कश्चकर्णस्य हन्ता
नद्याः कूलं विघटयति कः कः परस्त्रीरतश्च ।
कः संनद्धो भवति समरे भूषणं किं कुचानां
कः दुःसङ्गाद् भवति महतां मानपूजापहारः ॥

६१ कःकान्तारमगात्पितु र्वचनतः संश्लिष्य कण्ठस्थलीं
कामी किं कुरुते च गृध्रहस्तश्छिन्नं प्ररूढं च किम्।
कः रक्षःकुलकालरात्रिरभवच्चन्द्रातपं द्वेष्टि को
रामश्चुम्बति रावणस्य वदनं सीता वियोगातुरः ॥

६२ कीदृङ् मत्तमतंगजः कमभिनत्पादेन नन्दात्मजः
शब्दं कुत्र हि जायते युवतयः कस्मिन्सति व्याकुलाः।
विक्रेतुं दधि गोकुलात्प्रचलिता कृष्णेन मार्गे धृता
गोपी काचन तं किमाह करुणं दानी अनोखे भये ॥

६३ किं कुर्बन्त्युषसि द्विजाः प्रतिदिनं के माननीयाः प्रभोः
को वा साहसिको निशासु सततं द्यौः कीदृशी वर्तते।
कुत्रास्ते मधु नालिकेरजफले कैः स्यात्पिपासाशमः
सन्ध्यावन्दनमाचरन्ति विवुधा नारीभगान्तर्जलैः ॥

६४ किं तृष्णाकारि कीदृग्रथचरणमहो रौति कः काब्धिकान्त्विः।
कोऽपस्मारी भुजङ्गे किमु कलिशमनं त्वार्यसंबोधनं किम् ॥
का सुन्दर्यामपीन्दुः कथमचलभृतः का च संबुद्धिरग्ने
र्बीजं किं कावनीजारमणमतिहृरा हेमसारङ्गलीला॥

६५ ताराविष्णूरणत्विट्खगहृदयरमास्कन्दसंबुद्धाय क्व
क्व स्याद्धातुत्रयं लुग्विकरणपठितं कुत्र तत्वावबोधः।

चत्वारस्तद्धिताः स्युः क्व नु खलु विगतैकैकवर्णस्वरूपाः
किं सूत्रं पाणिनीयं विकसति न सहस्रोक्तिभिभा-
स्वरेऽपि ॥

६६ किमिच्छति नरः काश्यां भूपानां को रणे हितः।
को वन्द्यः सर्वदेवानां दीयतामेकमुत्तरम् ॥

६७ विराजराजपुत्रारेर्वन्नाम चतुरक्षरम्।
अर्थं वसतु शत्रुणामुत्तरं तव मन्दिरे ॥

६८ कः खे भाति हतो निशाचरपतिः केनाऽम्बुधौ मज्जति
कः कीदृक् तरुणी विलासगमनं किं कार्यते सज्जनैः।
पत्रं किं नृपतेः किमर्जुनधनुः को रामरामाहरो
मत्प्रश्नोत्तरमध्यमाऽक्षरपदं यत्तत्तवाशीर्वचः ॥

६९ वुधः कीदृग्वचो ब्रूते को रोगी कश्च नास्तिकः।
कीदृक् चन्द्रं नमस्यन्ति किं सूत्रं पाणिने वद ॥

७० किं त्राणं जगतां न पश्यति च कः के देवता विद्विषः
किं दातुः करभूषणं निरुदरः कः किं पिधानं दृशाम्।
के खे खेलनमाचरन्ति सुदृशां किं चारुताभूषणं
बुद्धया ब्रूहि विचार्य सूक्ष्ममतिमंस्त्वेकं द्वयोरुत्तरम् ॥

७१ गतक्लेशाऽयासा विमलमनसः कुत्र मुनय
स्तपस्यन्ति स्वस्थाः सुररिपुरिपोः का च दयिता।

कविप्रेयः किं स्याश्रवलघुयुतैरष्ट गुरुभि
र्बुधावृत्तं वर्णैः स्फुटघटितबन्धं कथयत् ॥

७२ उरसि मुरभिदः का गाढमालिङ्गिताऽऽस्ते
सरसिजमकरन्दाऽऽमोदिता नन्दने का ।
गिरिसमलघुवर्णैरर्णवाख्यातिसंख्यै
र्गुरुभिरपि कृता का छन्दसां वृत्तिरस्ति ॥

७३ नीचेषु यावनी वाणी का कः स्याच्छुभदो जने ।
शंभोरावरणं किं कं भजन्ते व्याधयो जनम् ॥

७४ सततं श्लाघते कस्मै नीचो भुवि किमुत्तमम् ।
कर्तर्यपि रुचादीनां धातूनां किं पदं भवेत् ॥

७५ न श्लाघते खलः कस्मै सुप्तिङन्तं किमुच्यते ।
लादेशानां नवानां च तिङ्गां किं नाम कथ्यताम् ॥

७६ को नयति जगदशेषं क्षयमथ बिभराम्बभूव कं विष्णुः ।
नीचः कुत्र सगर्वः पाणिनिसूत्रं च कीदृक्षम् ॥

७७ कः कर्णारिपिता गिरीन्द्रतनया कस्य प्रिया कस्य तुक्ः
को जानाति परेङ्गितं विषमगुः कुत्रोदभूत कामिनाम् ।
भार्या कस्य विदेहजा तुदति का भौमेन्हि निन्द्यश्च क
स्तत्प्रत्युत्तरमध्यमाऽक्षरपदं सर्वार्थसंपत्करम् ॥

७८ लावण्यं क्व नु योषितां नभसि के संचारमातन्वते
का सामुद्रतरा भवन्ति निनदाः क्व क्रीडतो दम्पती ।

केषु स्वं प्रकटीचकार भगवान् सीतापतिः पौरुषं
मत्प्रश्नोत्तर मध्यवर्णघटितो देवोऽस्तु वः श्रेयसे ॥

७९ कः स्यादम्बुदवाचको युवतयः कं कामयन्ते पतिं
लज्जा केन निवार्यतेऽतिनिकटे दासे कथं यावनी ।
भाषा दर्शयतेति वस्तुषु महाराष्ट्रेकथं वा भवे
दाद्यन्तक्षरयोगलोपरचना चातुर्यतः पूर्यताम् ॥

८० जाता शुद्धकुले जघान पितरं हत्वापि शुद्धा पुनः
स्त्री चैषा वनिता पितैव सततं विश्वस्य या जीवनम् ।
सङ्गं प्राप्य पितामहेन जनकं प्रासूत या कन्यका
सा सर्वैरपि वन्दिता क्षितितले सा नाम का नायिका ॥

८१ आद्येन हीनाजलधावदृश्यं मध्येन हीनं भुवि वर्णनीयम् ।
अन्तेन हीनं ध्वनते शरीरं हेमाभिधः स श्रियमातनोति ॥

८२ प्रायः कार्ये न मुह्यन्ति नराः सर्वत्र कीदृशाः ।
नाधा इति भवेच्छन्दो नौवाची वद कीदृशः ॥

८३ पूजायां किं पदं प्रोक्तमस्तनं को बिभर्त्युरः।
क आयुधतया ख्यातः प्रलम्बासुरविद्विषः ॥

८४ को दुराढ्यस्य मोहाय का प्रिया मुरविद्विषः ।
पदं प्रश्नवितर्के किं को दन्तच्छदभूषणम् ॥

८५ पक्षिश्रेष्ठसखीवभूसुरा वाच्याः कथं वद ।
ज्येष्ठे मासि गताः शोषं कीदृशोऽल्पजला भुवः ॥

८६ विश्वंभराप्रलम्बघ्नव्रीहिमानुषसंयुगाः ।
कथं वाच्या भवन्त्येता दिनान्ते विकसन्ति काः ॥

८७ आनन्दयति कोऽत्यर्थं सज्जनानेव भूतले ।
प्रबोधयति पद्मानि तमांसि च निहन्ति कः ॥

८८ अटवी कीदृशी प्रायो दुर्गमा भवति प्रिये ।
प्रियस्य कीदृशी कान्ता तनोति सुरतोत्सवम् ॥

८९ कीदृक्किं स्यान्न मत्स्यानां हितं स्वेच्छाविहारिणाम्
गुणैः परेषामत्यर्थं मोदते कीदृशाः पुमान् ॥

९० अगस्त्येन पयोराशेः किर्यत्किं पीतमुज्झितम् ।
त्वया वैरिकुलं वीर समरे कीदृशं कृतम् ॥

९१ लक्ष्मणेत्युत्तरं यत्र प्रश्नः स्यादत्र कीदृशः ।
ग्रीष्मे द्विरदवृन्दाय वनाली कीदृशी हिता ॥

९२ कामुकाः स्युः कया नीचाः सर्वः कस्मिन्प्रमोदते ।
अर्थिनः प्राप्य पुण्याहं करिष्यध्वे वसूनि किम् ॥

९३ को दुःखी सर्वं कार्येषु किं भृशार्थस्य वाचकम् ।
यो यस्माद्विरतो नित्यं ततः किं स करिष्यति ॥

९४ वारणेन्द्रो भवेत्कीदृक्प्रीतये भृङ्गसंहतेः ।
यद्यवश्यं तदास्मै किमकरिष्यमहं धनम् ॥

९५ काले देशे यथायुक्तं नरः कुर्वन्नुपैति काम् ।
भुक्तवन्तावलप्स्येतां किमन्नमकरिष्यताम् ॥

९६ हिमानीस्थगिरौ स्यातां कीदृशौ शशिभास्करौ ।
कः पूज्यः कः प्रमाणभ्यो न प्रभाकरसंमतः ॥

९७ के प्रवीणाः कुतो हीनं जीर्णं वासोऽशुमांश्च कः ।
निराकरिष्णवो बाह्यं योगाचारादच कीदृशाः ॥

९८ किमव्ययतया ख्यातं कस्य लोपो विधीयते ।
ब्रूत शब्दविदो ज्ञात्वा समाहारः क उच्यते ॥

९९ कौ विख्यातावहे शत्रू शोकं वदति किं पदम् ।
कोऽभीष्टोऽतिदरिद्रस्य सेव्यन्ते के च भिक्षुभिः ॥

१०० किं मुञ्चन्ति पयोवाहाः कीदृशी हरिवल्लभा ।
पूजायां किं पदं कोऽग्निः कः कृष्णेन हतो रिपुः ।

१०१ वद वल्लभ सर्वत्रसाधु भवति कीदृशः ।
गोविन्देनानसि क्षिप्ते नन्दवेश्मनि का भवत् ॥

१०२ यत्नादन्विष्य का ग्राह्या लेखकैर्मसिमल्लिका ।
घनान्धकारे निःशङ्कं मोदते केन बन्धकी ॥

१०३ किमनन्ततया ख्यातं पादेन व्यङ्गमाह्वय ।
जनानां लोचनानन्दं के तन्वन्ति वनात्यये ॥

१०४ प्रायेण नीचलोकस्य कः करोतीह् गर्वताम् ।
आदौ वर्ण द्वयं दत्वा ब्रूहि के वनवासिनः ॥

१०५ सानुजः काननं गत्वा नैकषेयाञ्जघान कः ।
मध्ये वर्णत्रयं दत्त्वा रावणः कीदृशो वद ॥

१०६ धत्ते वियोगिनीगण्डस्थलपाण्डुफलानि का ।
वद वर्णो बिधायान्ते सीता हृष्टा भवेत्कया ॥

१०७ विष्णोः का वल्लभा देवी लोकत्रितयपावनी ।
वर्णावाद्यन्तयोर्दत्त्वा कः शब्दस्तुल्यवाचकः ॥

१०८ पुरुषः कीदृशो वेत्ति प्रायेण सकलाः कलाः ।
मध्यवर्णद्वयं त्यक्त्वा ब्रूहि कः स्यात्सुरालयः ॥

१०९ यजमानेन कः स्वर्गहेतुः सम्यग्विधीयते ।
विहायाद्यन्तयोर्वर्णौ गोत्वं कुत्र स्थितं वद ।

११० कस्मिन्स्वपिति कंसारिः का वृत्तिरधमे नृणाम् ॥
किं ब्रूते पितरं बालः किं दृष्ट्वा रमते मनः ॥

१११ राज्ञः सम्बोधनं किं स्यात् सुग्रीवस्य तु का प्रिया ।
अधनास्तु किमिच्छन्ति आर्तैः किं क्रियते वद ॥

११२ किमस्ति यमुनानद्यां आरान् किं वक्ति जारिणी ।
आन्ध्रगीर्वाणभाषाभ्यामेकमेवोत्तरं वद ॥

११३ केदारे कीदृशो मार्गः कुत्र शेते जनार्दनः ।
स्त्रीचित्तं कुत्र रमते स्वामी किं वक्ति चेटिकाम् ॥

११४ चादय इति यत्र स्यादुत्तरमथ कीदृशः प्रश्नः ।
कथय त्वरितं के स्युर्नौकाया वाहनोपायाः ॥

११५ वदतानुत्तमवचनं ध्वनिरुच्चैरुच्यते स कीदृशः ।
तव सुहृदो गुणनिवहैः रिपुनिवहं किं नु कर्तारः ॥

११६ को माद्यति मकरन्दैस्तनयं कमसूत जनकराजसुता ।
कथय कृषीवल सस्यं पक्वं किमचीकरस्त्वमपि ॥

११७ पृच्छति पुरुषः केऽस्यां समभूवन्वज्रकृत्तपक्षतयः ।
बहुभयदेशं जिगमिषुरेकाकी वार्यते स कथम् ॥

११८ को नयति जगदशेषं क्षयमथ विभरांबभूव कं विष्णुः।
नीचः कुत्र सगर्वः प्राणिनिसूत्रं च कीदृशम् ॥

११९ किं स्याद्विशेष्यनिष्ठं का संख्या वदत पूरणी भवति ।
नीचः केन सगर्वः सूत्रं चन्द्रस्य कीदृशम् ॥

१२० कीदृग्गृहं याम्यगृहं गतस्य
कास्त्राणमम्भस्तरणे जनानाम् ।
भूषा कथं कण्ठ न ते नु पृष्टे
मुक्ताकलापैरिति चोत्तरं किम् ॥

१२१ कीदृग्वनं स्यान्न भयाय पृष्टे
यदुत्तरं तस्य च कीदृशस्य ।
वाच्यं भवेदीक्षणजातमम्बु
कं चाधिशेते गवि कोऽर्चनीयः ॥

१२२ दधौ हरिः कं शुचि कीदृगभ्रं
पृच्छत्यकः किं कुरुते सशोकः ।
श्लोकं विधायादि किमित्युदारः
कविर्नं तोषं समुपैति भूयः ॥

१२३ लक्ष्मीधरः पृच्छति कीदृशः स्यान्
नृपः सपत्नैरपि दुर्निवारः ।
अकारि किं ब्रूहि नरेण सम्यक्
पितृत्वमारोपयितुं स्वकीयम् ॥

१२४ कीदृशं वद मरुस्थलं मतं
द्वारि कुत्र सति भूषणं भवेत् ।
ब्रूहि कान्त सुभटः सकार्मुकः
कीदृशो भवति कुत्र विद्विषाम् ॥

१२५ का प्रियेण रहिता वराङ्गना
धाम्नि केन तनयेन नन्दिता ।
कीदृशेन पुरुषेण पक्षिणां
बन्धनं समभिलष्यते सदा ।

१२६ कीदृशं हृदयहारि कूजितं
क: सखा यशसि भूपतेर्मतः ।
कस्तवास्ति विपिने भयाकुलः
कीदृशश्च न भवेन्निशाकरः ॥

१२७ कीदृशी निरयभूरनेकधा सेव्यते परमपापकर्मभिः ।
प्रेतराक्षसपिशाचसेविता कीदृशी च पितृकाननस्थली ॥

१२८ केसरद्रुमतलेषु संस्थितः कीदृशो भवति मत्तकुञ्जरः ।
तत्त्वतः शिवमपेक्ष्य लक्षणैरर्जुनःसमिति कीदृशोभवेत् ॥

१२९ निर्जितसकलारातिःपृच्छति
को नैको मृत्योभयमृच्छति ।
मेघात्ययकृतरुचिराशायाः
किं तिमिरक्षयकारी निशायाः ॥

१३० विहगपतिः कं हतवानहितं
कीदृग्भवति पुरं जनमहितं ।
किं कठिनं विदितं वद धीम-
न्यादः पतिरपि कीदृग्भयकृत् ॥

१३१ अनुकूलविधायिदैवतो विजयी स्यान्ननु कीदृशो नृपः ।
विरहिण्यपि जानकी वने निवसन्ती मुदमादधौ कुतः ।

१३२ कुसुमं पतदेत्य नाकतो वद कस्मै स्पृहयन्ति भोगिनः ।
अधिगम्य रतं वराङ्गना क्व नु यत्नं कुरुते सुशिक्षिता ॥

१३३ कवयो वद कुत्र कीदृशाः कठिनं किं विदितं समन्ततः ।
अधुना तव वैरियोषितां हृदि तापः प्रबलो विहाय काः॥

१३४ वसति कुत्र सरोरुहसंतति
दिनकृतो ननु के तिमिरच्छिदः ॥
पवनभक्षसपत्नरणोत्सुकं
पुरुषमाह्वय को जगति प्रियः ॥

१३५ न भवति मलयस्य कीदृशी भूः
क इह कुचं न बिभर्ति कं गता श्रीः ।
भवदरिनिवहेषु कास्ति नित्यं
बलमथनेन विपद् व्यधायि केषाम् ॥

१३६ समयमिह वदन्ति कं निशीथं
शमयति कान्वद वारिवाहवृन्दम् ।
वितरति जगतां मनःसु कीदृङ्
मुदमतिमात्रमयं महातडागः ॥

१३७ परिहरति भयात्तवाहितः किं
कमथ कदापि न विदन्तीह भीतः ।

कथय किमकरोरिमां धरित्रीं
नृपतिगुणैर्नृपते स्वयं त्वमेकः ॥

१३८ पृच्छति शिरसिरुहो मधुमथनं
मधुमथनस्तं शिरसिरुहं च ।
कः खलु चपलतया भुवि विदितः
का ननु यानतया गवि गदिता ॥

१३९ कीदृक्तोयं दुस्तरं स्यात्तितीर्षोः
का पूज्यास्मिन्खड्गमामन्त्रयस्व ।
दृष्ट्वा धूमं दूरतो मानविज्ञाः
किं कर्तास्मि प्रातरेवाश्रयाशम् ॥

१४० कीदृक्प्रातर्दीपिवर्तेः शिखा स्या-
दुष्ट्रः पृच्छत्या भजन्ते मृगाः किम् ।
देवामात्ये किं गते प्रायशोऽस्मिन्
लोकः कुर्यान्नो विवाहं विविक्तः ॥

१४१ कीदृक्सेना भवति रणे दुर्वारा
वीरः कस्मै स्पृहयति लक्ष्मीमिच्छन् ।
का संबुद्धिर्भवति भुवः संग्रामे
किं कुर्वीध्वं सुभटजना भ्रातृव्यान् ॥

१४२ कंसारातेर्वद गमनं केन स्यात्
कस्मिन्दृष्टिं सल्लभते स्वल्पेच्छुः ।

कं सर्वेषां शुभकरमूचुर्धीराः
किं कुर्यास्त्वं सुजन सशोकं लोकम्। ।

१४३ कीदृशः सकलजनो भवेत्सुराज्ञः
कः कालो विदित इहान्धकारहेतुः ।
कः प्रेयान्कुमुदवनस्य को निहन्ति
भ्रातृव्यं वद शिरसा जितस्त्वया कः ॥

१४४ संग्रामे स्फुरदसिना हतास्त्वया के
दुःखं के बत निरये मनस्य कुर्युः ।
कस्मिन्नुद्भवति कदापि नैव लोम-
शाताः के जगति महालघुत्व भाजः ।

१४५ कीदृशं समिति बलं निहन्ति शत्रुं
विष्णोः का मनसि मुदं सदा तनोति ।
तुच्छं सच्छरधिमुखं निगद्यते किं
पञ्चत्वैः सममपमान एव केषु ॥

१४६ कामरिरहितामिच्छति भूपः
कामुद्धरयति शूकररूपः ।
केनाकारि हि मन्मथजननं
केन विभाति च तरुणीवदनम् ॥

१४७ हिमांशुखण्डं कुटिलोज्वलप्रभं
भवेद्वराहप्रवरस्य कीदृशम् ।

विहाय वर्णं पदमध्यसंस्थितं
न किं करोत्येव जिनः करोति किम् ॥

१४८ वसन्तमासाद्य वनेषु कीदृशाः
पिकेन राजन्ति रसालभूरुहाः ।
निरस्य वर्णद्वयमत्र मध्यमे
तव द्विषां कान्ततमा तिथिश्चका ॥

१४९ उरःस्थलं कोऽत्र विना पयोधरं
विभर्ति संबोधय मारुताशनम् ।
वदन्ति कं पत्तनसंभवं जनाः
फलं च किं गोपवधू कुचोपमम् ॥

१५० वसन्तमासाद्य वनेषु राजते
विकासि किं वल्लभ पुष्पमुच्यताम् ।
विहंगमं कं च परिस्फुटाक्षरं
वदन्ति किं पङ्कजसंभवं विदुः ॥

१५१ समुद्यते कुत्र न याति पांसुला
समुद्यते कुत्र भयं भवेज्जलात् ।
समुद्यते कुत्र तवापयात्यरिः
प्रहीणसंबोधनवाचि किं पदम् ।

१५२ तपस्विनोऽत्यन्तमहासुखाशया
वनेषु कस्मै स्पृहयन्ति सत्तमाः ।

इहापि वर्णद्वितयं निरस्य भोः
सदा स्थितं कुत्र च सत्वमुच्यताम् ॥

१५३ पदमनन्तरवाचि किमिष्यते
कपिपतिर्विजयी ननु कीदृशः ।
परगुणं गदितुं गतमत्सराः
कुरुत किं सततं भुवि सज्जनाः ॥

१५४ वदति राममनुष्य जघन्यजो
वसति कुत्र सदालसमानसः ।
अपि च शक्रसुतेन तिरस्कृतो
रविसुतः किमसौ विदधे त्वया ॥

१५५ मेघात्यये भवति कः ममदः
सुभगं च किं कमधरन्मुरजित् ।
कटुतैलमिश्रितगुड़ो नियतं
विनिहन्ति क त्रिगुणसप्तदिनैः ॥

१५६ वर्षासु का भवति निर्मधु कीदृगब्जं
शेषं बिभर्ति वसुधासहितं क एकः ।
आमंत्रयस्व धरणीधरराजपुत्रीं
को भूतिभस्मनि चिताङ्गजनाश्रयः स्यात् ॥

१५७ कौ शंकरस्य वलयावपयोधरः कः
कीदृक्परस्य नियतं वशमेति भूपः ।

संबोधयोरगपतिं विजयी च कीदृग्
दुर्योधनो नहि भवेद्वद कीदृशश्च ॥

१५८ कामुज्जहार हरिरम्बुधिमध्यमग्नां
कीदृक्श्रुतं भवति निर्मलमानसानाम् ।
आमन्त्रयस्व वनमग्निशिखावलीढं
तच्चापि को दहति के मदयन्ति भृङ्गान् ॥

१५९ मेघात्यये भवति किं सुभगावगाहं
का वा विडम्बयति वारणमल्लवेश्याः ।
दुर्वारवीर्यविभवस्य भवेद्रणे कः
काः स्मेरवक्त्रसुभगास्तरणिप्रभाभिः ॥

१६० कल्याणवाक्त्वमिव किं पदमत्र कान्तं
सद्भूपतेस्त्वमिव कः परितोषकारी ।
कः सर्वदा वृषगतिस्त्वमिवातिमात्रं
भूत्याश्रितः कथय पालितसर्वभूतः ॥

१६१ सूर्यस्य का तिमिरकुञ्जर वृन्दसिंही
सत्यस्य का सुकृतवारिधिचन्द्रलेखा ।
पार्थश्च कीदृगरिदावहुताशनोऽभूत्
का मालतीकुसुमदाम हरस्य मूर्ध्नि ॥

१६२ मेघात्यये भवति का सुभगावगाहा
वृत्तं वसन्ततिलकं कियदक्षराणाम् ।

भोभोः कदर्यपुरुषा विषुवद्दिने चेद्
वित्तं च वः सुबहु तत्क्रियतां किमेतत् ॥

१६३ प्राप्ते वसन्तसमये वद किं तरूणां
किं क्षीयते विरहिणामुरगः किमेति ।
किं कुर्वते मधुलिहो मधुपानमत्ताः
कीदृग्वनं मृगगणास्त्वरितं त्यजन्ति ॥

१६४ दुर्वारवीर्यं सरुषि त्वयि का प्रसुप्ता
श्यामा सपत्नहृदये सुपयोधरा च ।
तुष्टे पुनः प्रणतशत्रुसरोजसूर्ये
सेवाद्यवर्णरहिता वद नाम का स्यात् ॥

१६५ उरसि मुरभिदः का गाढमालिङ्गितास्ते
सरसिजमकरन्दामोदिता नन्दने का ।
वसुसमलघुवर्णैरर्णवाख्यातिसंख्यै
र्गुरुभिरपि कृता का छन्दसां वृत्तिरस्ति ॥

१६६ समरशिरसि सैन्यं कीदृशं दुर्निवारं
विगतघननिशीथे कीदृशे व्योम्नि शोभा ।
कमपि विधिवशेन प्राप्य योग्याभिमानं
जगदखिलमनिन्द्यं दुर्जनः किं करोति ॥

१६७ भवति गमनयोग्या कीदृशी भू रथानां
किमतिमधुरमम्लं भोजनान्ते प्रदेयम् ।

प्रियतम वद नीचामन्त्रणे किं पदं स्यात्
कुमतिकृतविवादाश्चक्रिरे किं समर्थः ॥

१६८ भवति जयिनी काजौ सेनावहृवयाघरभूषणं
वहति किमहिः पुष्पं कीदृक्कुसुम्भसमुद्भवम् ।
महति समरे वैरी वीर त्वया वद किं कृतः
कमलमुकुले भृङ्गः कीदृक् पिबन्मधु राजते ॥

१६९ आह्वानं किं भवति हि तरोः कस्यचित्प्रश्नविज्ञाः
प्रायः कार्यं किमपि न कलौ कुर्वते के परेषाम् ।
पूर्णं चन्द्रं वहति ननु का पृच्छति म्लानचक्षुः
केनोदन्याजनितमसमं कष्टमाप्नोति लोकः ॥

१७० का संबुद्धिः सुभट भवतो ब्रूहि पृच्छामि सम्यक्
प्रातः कीदृग्भवति विपिनं संप्रबुद्धैर्विहंगैः ।
लोकः कस्मिन्प्रथयति मुदं का त्वदीया च जैत्री
प्रायो लोके स्थितमिह सुखं जन्तुना कीदृशेन ॥

१७१ बिभर्ति वदनेन किं क इह सत्वपीडाकरं
कुलं भवति कीदृशं गलितयौवनं योषिताम् ।
बभार हरिरम्बुधेरुपरि कां च केन स्तुतो
हतः कथय कस्त्वया नगपतेर्भयं कीदृशात् ॥

१७२ हरिर्वहति कां तवास्त्यरिपु का गता कं च का
कमर्चयति रोगवान्घनवती पुरी कीदृशी ।

हरिः कमधरद्बलिप्रभृतयो धरां किं व्यधुः
कया सदसि कस्त्वया बुध जितोऽम्बुधिः कीदृशः ॥

१७३ पवित्र मतितृप्तिकृत्किमिह किं भटामन्त्रण
ब्रवीति धरणीधरश्च किमजीर्णसंबोधनम् ।
हरिर्वदति को जितो मदनवैरिणा संयुगे
करोति ननु कः शिखण्डिकुलताण्डवाडम्बरम् ॥

१७४ को मोहाय दुरीश्वरस्य विदितः संबोधनीयो गुरुः
को धाम्यां विरलः कलौ नवधनः किंवन्न कीदृग्द्विजः ।
किं लेखावचनं भवेदतिशयं दुःखाय कीदृक्खलः
को विघ्नाधिपतिर्मनोभवसमो मूर्त्या पुमान्कीदृशः ॥

१७५ दैत्यारातिरसौ वराहवपुषा कामुज्जहाराम्बुधेः
का रूपं विनिहन्ति को मधुवधूवैधव्यदीक्षागुरुः ।
स्वच्छन्दं नवसल्लकीकवलनैः पम्पासरोमज्जनैः
के विन्ध्याद्रिवने वसन्त्यभिमतक्रीडाभिरामस्थिताः ॥

१७६ का चक्रे हरिणा घने कृपणधीः कीदृग्भुजंगेऽस्ति किं
कीदृक्कुम्भसमुद्भवस्य जठरं कीदृग्घियासुर्वधूः ।
श्लोकः कीदृगभीप्सितः सुकृतिनां कीदृङ्नभो निर्मलं
क्षोणीमाह्वय सर्वगं किमुदितं रात्रौ सरः कीदृशम् ॥

१७७ मुण्डः पृच्छति किं मुरारिशयनं का हन्ति रूपं नृणां
कीदृग्वीरजनश्च कोऽतिगहनः संबोधयावञ्चितम् ।

का धात्री जगतो बृहस्पतिवधूः कीदृक्कविः क्वादृतः
कोऽर्थः किं भवता कृतं रिपुकुलं कीदृक्सरो वासरे ॥

१७८ कस्मै यच्छति सज्जनो बहुधनं सृष्टं जगत्केन वा
शंभोर्भाति च को गले युवतिभिर्वेण्यां च का धार्यते ।
गौरीशः कमताडयच्चरणतः का रक्षिता राक्षसै
रारोहादवरोहतः कलयतामेकं द्वयोरुत्तरम् ॥

१७९ का मेघादुपयाति कृष्णदयिता का वा सभा कीदृशी
कां रक्षत्यहिहा शरद्विकचयंत्कं धैर्यहन्त्री च का ।
कं धत्ते गणनायकाः करतले का चंचला कथ्यता
मारोहादवरोहतश्च निपुणैरेकं द्वयोरुत्तरम् ॥

१८० कुत्र श्रीः स्थिरतामुपैति भुवि को दुःखी किमीषत्पदं
धर्मादीन्विनिवारयन्ति पथि के पान्थस्य दीनस्य च ।
का संबुद्धिरिह श्रियश्च तमसः कौ नाशकौ प्रोच्यतां
गच्छन्तं पथिकं किमाह यवनः सङ्गाभिलाषान्वितः ॥

१८१ कः पूज्यः सुजनत्वमेति कतमः क्व स्थीयते पण्डितैः
श्रीमत्या शिवया च केन भुवने युद्धं कृतं दारुणम् ।
किं वाञ्छन्ति सदा जना युवजना ध्यायन्ति किं मानसे
मत्प्रश्नोत्तरमध्यमाक्षरपदं भूयात्तवाशीर्वचः ॥

१८२ क्षौणी कं सहते करोति दिवि का नृत्यं शिवायाः पति
र्भूताना कमयुङ्क्त जीवहरणे का रामशत्रोः पुरी ।

कं रक्षन्ति च साधवः पशुपतेः किं वाहनं, प्रोच्यता-
मालोमप्रतिलोमशास्त्रचतुरैरेकं द्वयोरुत्तरम् ॥

१८३ नाभेर भिरतो राज्ञः त्वयि रक्तो न कामुकः ।
न कुतोऽप्यधरः कान्त्या यः सदोजोधरः स कः ॥

१८४ क्व कीदृक् शस्यते रेखा तवाणुभ्रू सुविभ्रमे ।
करिणीञ्च वदान्येन पर्यायेण करेणुका ॥

१८५ किमाहुः सरलोत्तुङ्ग सच्छायतरुसङ्कुलम् ।
कलभाषिणि किं कान्तं तवाङ्गे सालकाननम् ॥

१८६ नयनानन्दिनीं रूपसम्पदं ग्लानिमम्बिके ।
आहाररतिमुत्सृज्य नानाशा नामृतं सति ॥

१८७ अधुना दरमुत्सृज्य केसरी गिरिकन्दरम् ।
समुत्पित्सुर्गिरेरग्रं सटाभारं भयानकम् ॥

१८८ अधुना जगतस्तापम् अमुना गर्भजन्मना ।
त्वं देवि जगतामेकपावनी भुवनाम्बिका ॥

१८९ अधुनामरसर्गस्य वर्द्धतेऽधिकमुत्सवः ।
अधुनामरसर्गस्य दैत्यचक्रे घटामिति ॥

१९० वटवृक्षः पुरोऽयं ते घनच्छायः स्थितो महान् ।
इत्युक्तोऽपि न तं धर्मे श्रितः कोऽपि वदाद्भुतम् ॥

१९१ जगतां जनितानन्दो निरस्तदुरितेन्धनः ।
स मः कनकसच्छायो जनिता ते स्तनन्धयः ॥

१९२ जगज्जयी जितानङ्ग सतां गतिरनन्तदृक् ।
तीर्थकृत्कृतकृत्यश्च जयतास्तनयः स ते ॥

१९३ स ते कल्याणि कल्याणशतं संदर्श नन्दनः ।
यास्यत्य नागतिस्थानं धृति धेहि ततः सति ॥

१९४ द्वीपं नन्दीश्वरं देवा मन्दरागं च सेवितुम् ।
सुदन्तीन्द्रैः समं यान्ति सुन्दरीभिः समुत्सुकाः ॥

१९५ लसद्बिन्दु भिराभान्ति मुखैरमरवारणाः ।
घटाघटनया व्योम्नि विचरन्तस्त्रिधा स्रुतः ॥

१९६ मकरन्दारुणं तोयं धत्ते तत्पुरखातिका ।
साम्बु जंक्वचिदुद्बिन्दुजलं (चलन्) मकरदारुणम् ॥

१९७ समजं घातुकं बालं क्षणं नोपेक्षते हरिः ।
का तु कं स्त्री हिमे वाञ्छेत् समजङ्घा तुकं बलम् ॥

१९८ जग्ले कयापि सोत्कण्ठं किमप्याकुल मूर्च्छनमु ।
विरहेङ्गनया कान्तसमागम निराशया ॥

१९९ ······कः पञ्जरमध्यास्ते······कः परुषनिस्वनः ।
····कः प्रतिष्ठा जीवानां····कः पाठ्योऽक्षरच्युतः ॥

२०० के······मधुरारावा: के······पुष्पशाखिन: ।
के······नोह्यते गन्ध: के······नाखिलार्थदृक् ॥

२०१ को······मञ्जुलालाप: को······विटपी जरन् ।
को······नृपतिर्वर्ज्य: को······विदुषां मत: ॥

२०२ का······स्वरभेदेषु का······रुचिहा रुजा ।
का······रमयेत्कान्तं का······ तारनिस्वना ॥

२०३ का······क: श्रयते नित्यं का······कीं सुरतप्रियाम् ।
का······नने वदेदानीं च······रक्षर विच्युतत् ॥

२०४ तवाम्ब किं वसत्यन्त: का नास्त्यविषवे त्वयि ।
का हन्ति जनमाद्यूनं वदाद्यैर्व्यञ्जनै: पृथक् ॥

२०५ वराशनेषु को रुच्य: को गम्भीरो जलाशय: ।
क: कान्तस्तव तन्वंगि वदादिव्यञ्जनै: पृथक् ॥

२०६ क: समुत्सृज्यते बाल्ये घटयत्यम्ब को घटम् ।
वृषान्दशति क: पापी वदाद्यैरक्षरै: पृथक् ॥

२०७ सम्बोध्यसे कथं देवि किमस्त्यर्थे क्रियापदम् ।
शोभा च कीदृशि व्योम्नि भवतीदं निगद्यताम् ॥

२०८ जिनमानम्रनाकौको नायकार्चितसत्क्रमम् ।
कमाहु: करिणं चोद्ध लक्षणं कीदृशं विदु: ॥

२०९ भो केतकाविवर्णेन संख्यादिसंजुषामुना ।
शरीरमध्य-वर्णेन त्वं सिंहमुपलक्षय ॥

२१० कः कीदृग् न नृपैर्दण्ड्यः कः खे भाति कुतोऽम्ब भीः ।
भीरोः कीदृग्निवेशस्ते ना नागारविराजितः ॥

२११ त्वत्तनौ काम्ब गम्भीरा राज्ञो दोर्लम्ब बाहुतः ।
कीदृक् किन्नु विगाढव्यं त्वं च श्लाघ्या कथं सती ॥

हिन्दी विभाग

(पद्य खण्ड)

९ भणे पन पंडित नहीं, फिरे पन नहीं चोर; ।
चतुर होय तो चेतजो, मथुरा पन नहीं मोर. ॥

१० एक नारी निर्बल रहे, घर आवे निराश; ।
वह वश किसी को नहीं, वश होवे उसकी दास. ॥

११ हरी आये जवहरी हुये, हरी गये हरीके पास; ।
हरी हरी ए मिल गये, तब हरी भये निराश. ॥

१२ आवे तो अंधेरी लावे, जावे तो सब सुख ले जावे; ।
क्या जानूं वर कैसा है, जैसा देखो वैसा है ॥

१३ एक नारीके हैं दो बालक, दोनों एक हि रंग; ।
एक फिरे एक टाठ रहे, फिरभी दोनों संग. ॥

१४ एक पुरुष बहुत गुण भरा, लेटा जागे, सोवे खड़ा; ।
उलटा होकर डाले बोल, यह देखो करतारका खेल. ॥

१५ चार अंगुलका पेड, सवा मनका पत्ता; ।
फल लगे अलग अलग, पक जावे इकठ्ठा. ॥

१६ मारो तो वह जी उठै, बिन मारे मर जाय; ।
कहै पहेली बीरुबल, मुर्दा आटा खाय. ॥

१७ एक नार कूवेमें रहे,
वाका नीर खेतमें बहे; ।

जो कोई वाके नीरको चाखे,
फिर जीवनकी आस न राखे. ॥

१८ एक नारी वह है बहुरंगी,
घरसे बाहर निकले नंगी; ।
उस नारीका यह सिंगार,
सिरपर नथनी मुंहपर वार. ॥

१९ बात की बात, ठठोली की ठठोली; ।
मरदकी गांठ औरत ने खोली. ॥

२० रंगी बेरंगी एक पक्षी बना,
छोटी चोंच ओर काटे घना; ।
तीस-तीस मील बीलमें बसे,
जीव नहीं ओर उड़के डसे. ॥

२१ अरथ तो इसका बूझेगा ।
मुंह देखो तो सूझेगा; ॥

२२ बाला था जब सबको भाया,
बड़ा हुआ कुछ काम न आया; ।
खुसरो कह दिया उसका नांव,
अर्थ करो या छोडो गांव. ॥

२३ बीसों का सिर काट लिया; ।
ना मारा ना खून किया. ॥

२४ देखी एक अनोखी नारी, गुण उसमें एक सबसे भारी; ।
पढ़ी नहीं और अचरज आवे, मरना जीना तुरत बतावे. ॥

२५ कर बोले कर ही सुने, स्रवन सुनें नहिं ताहि; ।
कहे पहेली बीरबल, सुनिये अकबर साहि. ॥

२६ धूपसे वह पैदा होवे, छांव देख मुरझाये. ।
अरी सखी मैं तुमसे पूछुं, हवा लगे मर जाए. ॥

२७ एक मुनी ने यह गुन कीना,
हरियल पिंजरेमें दे दीना; ।
देखो जादूगर का हाल,
डाले हरा निकाले लाल. ॥

२८ खेतमें उपजे सब कोई खाय; ।
घर में होवे घर खा जाय ॥

२९ एक अचंभा देखो चल, सूखी लकड़ी लागे फळ; ।
जो कोई इस फळ को खावे, पेड छोड कहिं और न जावे ॥

३० उज्ज्वल बरण अधीन तन, एक चित्त दो ध्यान; ।
देखत में तो साधु है, पर निपट पापकी खान. ॥

३१ अचरज बंगला एक बनाया,
ऊपर नींव तले घर छाया; ।
बांस न बल्ली बंधन घने,
कह खुसरो घर कैसे बने ॥

३२ श्यामबरण पीताम्बर सोहे,
मुरलीधर नहिं कोई; ।
बिन मुरली वह नाद करत है,
बिरला पूछे कोय. ॥

३३ आगे आगे बहिना आई, पीछे, पीछे भैया; ।
दांत निकाले बाबा आये, बुरका ओढे मैया. ॥

३४ एक तरुवरका फल है तर, पहले नारी पीछे नर; ।
वह फलकी यह देखो चाल,
बाहर खाल और भीतर बाल. ॥

३५ एक नार तरुवरसे उतरी, सरपर वाके पाँव; ।
ऐसी नार कुनारको. मै ना देखन जाँव. ॥

३६ सरपर जाली, पेटसे खाली; ।
पसली देख एक एक निराली. ॥

३७ शिरपर सोहे गंगजल, मुंडमाल गलमांहि; ।
वाहन वाको वृषभ है, शिव कहिये के नाहिं. ॥

३८ दानाई से दांत उसपै लगता नहि कोई; ।
सब उसको भुनाते हैं, पै खाता नहि कोई ॥

३९ भांति–भांति की देखी नारी,
नीर भरी है गोरी काली; ।
उपर बसे ओर जग धावें,
रक्षा करे जब नीर बहावें. ॥

४० है नारी वह सुंदर नार,
नार नहि पर है वह नार; ।
दूरसे सबको छबि दिखलावे,
हाथ किसीके कभी न आवे. ॥

४१ पानी पानी भरी गई, और शिर पर जारी आग; ।
बोलन लागी बांसुरी और निकसे काले नाग. ॥

४२ दो पहिये हैं घोडे. चार, आठ सवारी सोलह द्वार; ।
चौसठ चक्कर करते खोज, है मजदूरी रुपिया रोज ।।

४३ पौन चलत वह देह बढ़ावे,
जळ पीवत वह जीन गंवावे; ।
है वह प्यारी सुंदर नार,
नार नहि पर है वह नार. ॥

४४ दो पग वाले चार लटकावे, करे जव मन ऐन; ।
तुळसी कहे विचारि जो, त्रण मुख ने दो नेन. ॥

४५ पड़ी पड़ी भागी नहिं, कटका हुआ दो चार; ।
बगर पांख वह ऊड़ गई, चतुर करो विचार. ॥

४६ अजा सहेली रोम रिपु, ता जननी ताको भरयार; ।
ता का सुतका मित्रकु, भजिए वारंवार, ए कोण? ॥

४७ अत्तर सीसा पत्तर सीसा, सीसा अम्बर ऐसा; ।
बिना कायके महेल बनाये, ए कारीगर कैसा? ॥

४८ अंबुज अरि पतिकी सुता, तापति, उन को हार; ।
हार अरि पति कामिनी, सदा रहो तुम द्वार. ॥

४९ छत्ते पलंगे भूए सोवे, घोड़ा घास न खाय; ।
अर्ध चोमासो घर पड़े, कहो चेला कौनसा उपाय. ॥

५० रोटी जली क्यों, ? घोड़ा अड़ा क्यों, ?
पान सड़ा क्यों ? ।

५१ अनार क्यों न चक्खा, वजीर क्यों न रक्खा ?

५२ राजा प्यासा क्यों. गदहा उदासा क्यों ?

५३ पोस्ती क्यों रोया ? चौकीदार क्यों सोया ?

५४ समोसा क्यों न खाया ? जूता क्यों न चढ़ाया ?

५५ पानी क्यों न भरा ? हार क्यों न पहना ?

५६ खाना क्यों न खाया ? जामा क्यों न घुलवाया ?

५७ शिव सूत भ्राता नाम की, अक्षर बारसुं लेत; ।
आदि अंत मिलायके, कीजबी करो हमेश. ॥

५८ हरि गरज्यो, हरि उपज्यो, हरी आयो, हरि पास; ।
जब हरी हरि में गयो, तब हरि भयो उदास. ॥

५९ मै आण्या अब शेर हो, तुम तो पूरे शेर; ।
हेम सूता पति वाहना, वा में फार न फेर. ॥

६० शाम कल और अंत अनेक, कचकत वैसी नारी; ।
दोनों हाथसे खुसरो खींचे, और कहे तूं 'आरी'. ॥

६१ एक थाल मोतीसे भरा, सबके सिरपर औंधा धरा; ।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक ना गिरे. ॥

६२ जिस घर लाल बलैया जाय, उस घरमें दुंद मचाय; ।
लाखन मन पानी पी जाय धरा ढका सब घरका खाय. ॥

६३ थरिया भर लावा । आंगन भर छितरावा ॥

६४ एक राजा मरा कोई रोया नहीं,
एक सेज बिछी कोई सोया नहीं।
एक फूल खिला कोई तोड़ा नहीं,
एक हार टूटा कोई जोड़ा नहीं ।।

६५ चार खूंट का एक खेत । कचरी घनी मतीरा एक ।।

६६ कौन तपसी तप करै, कौन जो निति नहाय ।
कौन जो सब रस उगिलै, कौन जो सब रस खाय ।।

६७ लमक–सी राई सारे गाँव छितराई ।।

६८ गज भर कपड़ा, बारह पाट ।
बन्द लगे हैं तीन सौ साठ ।।

६९ आठ पाँव का अबलक घोड़ा ।
चलै रैन दिन फिरै न मोड़ा ।।

७० नभते गिरो न भुई दयो, जननी जनी न ताहि ।
दैखि उजेरा जो रोई भागै, पकरि ले आवो ताहि ।।

७१ एक सन्दूक में बारह खाने । हर खानेमें बारह दाने ।।

७२ एक बागमें कुसुम अनेक, सब कुसुमोंका राजा एक ।
जब बगियामें आवै राजा, तब कुसुमोंका सबे समाजा ।।

७३ बनमें हंसिया टाँगी ।

७४ बे हाथ क बे गोड, क पहाड़ चढा जाथै ।
देखा तो वनखण्डी बाबा कौन जनारी जाथै ।।

७५ एक पेड़ सरगौवा । न चील्हि बैठे न कौवा ।।

७६ लाल गाय खर खाय । पानी पिये मर जाय ।।

७७ वरषा बरसी रातमें, भीजे सब बन राय ।
घड़ा न डूबे लोटिया, क्यों पंछी प्यासा जाय ।।

७८ सर्र सर्र सरकी, सरकाने वाला कौन ?
सीता चली सासरे लौटाना वाला कौन ?

७९ एक ताल माँ गगरी न बूडै, हाथी ठाढ नहाई ।
पात पात पेड़न के भीजैं, पुरुष प्यासो जाई ।।

८० मारो चाहो छुरी कटारी चहे तेग मुलतानी ।
चोट लगे तन फाटि जाय पन पैर न नेक निसानी ।।

८१ सीतला सफेदला पै देसला नहीं ।
बीन बीन खाँय लला बोकला नहीं ।

८२ सन्ध्याको पैदा हुई, आधी रात जवान ।
बड़े सबेरे मर गई, घर हो गया मसान ।।

८३ ताप ताप तीरी, हरदी सी पीरी ।
चटाक चूमा ले गई, बड़ा दुःख दे गई ।।

८४ एक शहर है ऊंचा बना,
एक एक घरमें एक एक जना।
चीन्हि न परत पुरुष औ नारी,
पहिरे सभी वसन्ती सारी॥

८५ सोने की सी चटक, बहादुरकी मटक।
बहादुर गये भाग, लगा गये आग॥

८६ एक जीव असली। जिसके हाड़ न पसली॥

८७ तन के कोमल मुंहके जोर।
चाल चलें जस तुरकी घोड़॥

८८ सरग नीव पताल दुआरा।
पण्डित होई सो करे बिचारा॥

८९ दुइ कान मनई दुई कान देव
दुई कानके हैं सब केव।
एक कानको देव बताय,
तब तुम पानी पियो अघाय॥

९० घिस घिस पाँव। तीन सिर आठ पाँव॥

९१ एक पंछी कैसा। जिसकी दुममें पैसा॥

९२ काले वनमें रहता है वह काले तिल सा काला।
कानपूरमें पकड़ा उसको हस्तनपुरमें मारा॥

९३ पूरब दिसासे आई चिड़िया।
अन्न खाय पानी के किरिया॥

९४ बरन अठारह जीव छः, बोली बोलैं तीन।
पण्डित वही सराहिये, अच्छर लावै बीन

९५ एक कुयें में साठ हजार। एक हजार घुसे पनिहार॥

९६ चार घड़े हैं रससे भरे। बिन ढक्कनके औंधे धरे॥

९७ लड़का पेटमें। दाढ़ी उड़े हवामें॥

९८ सोने की डिबियामें सालिकराम।
अर्थ करो या छोड़ो ग्राम॥

९९ इधर खूंटा उधर खूंटा। गाइ मरकनी दूध मीठा॥

१०० आधा दूल्ह आधा रोग, बीज बागमें हूआ संयोग।
जो बैठे सो उठन न पावै, पंडित होई सो अर्थ बतावै॥

१०१ पहिले भई थी बहिनें, फिर भये थे भैया।
भैया ऊपर बाप भये, फिर भई थी मैया॥

१०२ एक खेत ऐसा हुआ। आधा बकुला आधा सुआ॥

१०३ नीचे उजली ऊपर हरी। खड़ी खेतमें उलटी परी॥

१०४ एतबतसे हम एतवत भइली।
खन खन मुन्दिरी पहिरत गइलीं॥

१०५ एक रुख अमडफला । जिसके पेड़ न पत्ता ॥

१०६ हरी डंडी लाल कमान । तोबा तोबा करै पठान ॥

१०७ तनक सो लरिका ब्राह्मनको ।
तिलक लगावै चन्दन को ॥

१०८ एक सन्दूक काँटे जड़ी । जब खोलो तब चंपा कली ॥

१०९ कटोरे पर कटोरा । बेटा बाप से भी गोरा ॥

११० एक तमाशा देखा आज । लाय उलटिके घोड़ा खात ।

१११ ऐसा फूल फुलावका, रही चांदनी छाय ।
पिता रहे है पेट में, बालक गये बिकाय ॥

११२ गोल गोल गुटिया, सुपारी जैसा रंग ।
ग्यारह देवर लेने आये, गई जेठ के संग ॥

११३ नीचे माटी ऊपर माटी । बीचमें सुन्दर देई ॥

११४ मूड काटि भुंइ माँ धरी, लोपी गंग नहाई ।
हाड़नका कोईला भया, खालें गई बिकाइ ॥

११५ आठ पहर चौसठ घड़ी । ठाकुरपर ठकुराइन चढ़ी ॥

११६ यहाँ गये वहाँ गये और गये कलकत्ता ।
एक पेड़ हम ऐसा देखा, फूल के ऊपर पत्ता ॥

११७ कुदरत ने एक चीज बनाई,
हिन्दु मुसलमान नें साई।
बात कहत आवत है हांसी,
आधा गदहा आधा खांसी ॥

११८ पट से गिरा मेघका बच्चा।
पूरा पका करेजा कच्चा ॥

११९ काजरका कजरौटा ऊधोका सिंगार।
हरी डालपर मुनिया बैठी, को है कून्दन हार ॥

१२० एक चिड़िया अरं, औके चमड़ी बोलै चरं।
ओकर मांस मुरदार, खून खूब मजेदार ॥

१२१ एक गिरा तट, दो दौड़े झट,
पांच ने उठाया बत्तीसने खाया।
एक को भाया चूसके बहाया,
एक भर पाया तो बैठके गाया ॥

१२२ सब पंचनके है चूतर। मूंड़ महीन पेट घमघूसर ॥

१२३ छोटे से मेरे छोटकदास। कपड़ा पहिरे सौ पचास ॥

१२४ दिल्ली ढूंढा मेरठ ढूंढ़ा, सौ ढूंढ़ा कलकत्ता।
एक अचम्भा ऐसा देखा फलके ऊपर पत्ता ॥

१२५ स्याम बरन पर हरि नहिं, जटा धरे नहिं ईस ।
न जानूं पिय कौन है, पंक लगाये शीस ॥

१२६ सीस जटा पोथो गहे सेत वसन गल माँहि ।
जोगी जंगम है नहीं, बाम्हन पण्डित नाहि ॥

१२७ नरके पेटमें नारी बसै,
पकड़ हिलाये खिल खिल हँसे ।
पेट फारि जो नारी गिरी,
मोको लगी प्यारी खरी ॥

१२८ तनक-सी मटकुल तनक-सा पेट,
जैयो न मटकुल राजाके देस ।
राजा है बेईमान,
फोड़ लै है पेट ॥

१२९ एक पुरुषके नारी चार ।
सबै चतुर मिलि करें विहार ॥
काहू के घर जात न कोई,
खान पान इक साथहि होई ॥

१३० राम नहीं रावण नहीं, नहीं कृष्ण भगवंत ।
एक हाथके आगे देखा, चारि नारि को कंत ॥

१३१ राम न दीन्हीं रावनहिं, न भीमै भगदंत।
त्रिपुर न दीन्हों संकरहिं, सो दीन्हीं मोहि कंत ॥

१३२ नावके भीतर नदी। नदी के भीतर नाव ॥

१३३ आये तो दुख दे, जाये तो दुख दे।
उठे तो दु:ख दे, बैठे तो दु:ख दे ॥

१३४ जगसे जनमे जबतक मरे, सबके सिरपर आसन करे
चाहे दिन हो चाहे रात, गरमी जाडा या बरसात।
ओला गिरे कि आँधी चले, कभी न उतरे सिरसे तले
लंबा लंबा होता चले, रहे जागता सोता चलै ॥
लोहे से जब चांदी बने, तब फिर दामन कांई न गिने
जबसे जनमे जबतक मरे, सबके सिरपर आसन करे।

१३५ लाग कहूँ लागे नहीं, बरजत लागे घाम।
कही पहेली एक मैं, दीजो चतुर बताय ॥

१३६ वह क्या है, जो सबमें थोड़ी थोड़ा पडतीं है ॥

१३७ चार पुरुष औ सोलह नारी,
चार जार मिल्हि जोरे यारी।
दिनमें चलें एक ही साथ,
रात में सोवें एकै साथ ॥

१३८ चले रोज पर। हटै न तिलभर ॥

१३९ कर बोले कर ही सुने सवन सुनै नहिं ताहिं।
कहैं पहेली बीरबल, बूझें अकबर साहि॥

१४० ककर हवा तारा मैन चाट। बत्तिस पीपर एक पात॥

१४१ देखी एक अनोखी नारी,
गुन उसमें एक सबसे भारी।
पढ़ी नहीं यह अचरज आवै,
मरना जीना तुरत बतावै॥

१४२ चंचल घोड़ी चतुर नार, कौन लगे तेरा हाँकन हार।
बीनन वाली बीन कपास, हमरी इनकी एकै सास॥

१४३ बाप बेटा दो, रोटी बाँटी तीन।
सबको मिली बराबर, बूझे वही प्रवीन॥

१४४ हम माँ बेटी, तुम माँ बेटी, खडे खेतमें जाँय।
तोड़े गन्ने तीन अब, इक इक कैसे खाँय॥

१४५ पाथर चाटि रहे दिन राति,
जिंदा छोडे मुरदा खाति।
पाँच सखी जब पकरि उठावें,
घरके बाहर नंगी आवें॥

१४६ कहैं पहेली साह सिकन्दर।
दो हैं बाहर एक है अन्दर॥

१४७ जाली खाली जल गई, क्या न एकौ भागा।
जलके स्वामी पकड़ लिये, घर खिड़की होकर भागा॥

१४८ तनिक सी टुरिया टुक टुक करे।
लाख टके का बनिज करे॥

१४९ चार अंगुलका पेड़, सवा मनका पत्ता।
फल लागे अलग अलग पकें सब इकट्ठा॥

१५० अपने अपने साल सलाये अपने अपने सूत।
बढई मूतं कोंहारके मुंहमें पिये लुहार का पूत॥

१५१ संसी हथौड़ा निहाई। पहिले कौन बनाई॥

१५२ काँचे पर गुल गुल। पके पर कठोर॥

१५३ खूंटा पर खेती करै, फरबार देइ जराय।
झारि पोंछि घर में धरै, बेंचि बेंचि के खाय॥

१५४ आदि कटे माला बनूं, मध्य कटे तो हाथ।
सँग सँग चलूं रईस के, रहूँ जातिके साथ॥

१५५ मेघनाद सुनि रात, कुंभकरन प्रातहि उठ्यो।
अजु बडो उत्पात, चक्र चलावहु भवनमें॥

१५६ जब रही मैं बारी भोरी, तब सही थी मार।
अब तो पहिनी लाल घंघरिया, अब न सहि हौं मार॥

१५७ अत्थर सिल पत्थर संगमरमर खजूर।
पाँचो बहिनों जैर जाओ हम जावें बड़ी दूर ॥

१५८ काली नदी कलूटा पानी। डूब मरी चन्दावलि रानी ॥

१५९ कारी पोनी तागा सेत।

१६० चलीं सखी सब मार कुण्ड,
आईं नहाने शीतल कुण्ड।
कपड़े पहिने भीतर गईं,
नंगी होकर बाहर गईं ॥

१६१ बापका नाम और नाति पूत का नाम और।
यह पहेली बूझके पीछे उठा ओ कौर ॥

१६२ पीली नदीमें पीला अण्डा।
नहीं बताओ तो मारूं डण्डा ॥

१६३ चार कबूतर चार रंग। दरबा भीतर एकै रंग ॥

१६४ एक नारि नौरंगी चंगी, वह भी नाहि कहावै।
नहाय धोय छज्जेपर बैठी, लरिकन को ललचावै ॥

१६५ कहें पहेली बीरबल, सुन लो अकबर साहि।
रींधी रहे तो सब दिन साय, बिन रींधे सरि जाय ॥

१६६ वह क्या है जो जमता है, अंकुवाता नहीं ?

१६७ अगहन पइठ बैंतके पेट । ता पर पण्डित करे लुपेट ॥

१६८ पिया बजारे जात हो, चीजें लइयो चार ।
सुवा परेवा मिलहंटा बगुलाकी उनहार ॥

१६९ झाँझर कुवाँ रतन कै बारी ।
नहिं बूझो तो देहों गारी ॥

१७० हौज भरा था, हिरन खड़ा था ।
हौज सूख गया, हिरन भाग गया ॥

१७१ चार अहक चार बहक चार सुरमेदानी ।
नौरंग तोता उड़ गया, तो रह गई विरानी ॥

१७२ चाक डोले चकडूमर डोले ।
खैरा पीपर कबहूं न डोले ॥

१७३ नाजुक नारी पिया संग सोती, अंग सों अंग मिलाय ।
पिय को बिछुरत जानि के, संग सति हो जाय ॥

१७४ चारि पडी चारि खडी । चारों में दो दो गडी ॥

१७५ आहि आहि कबसे ? आधा गया तबसे ।
ठंड पड़ी कबसे ? पूरा गया जबसे ॥

१७६ कमर बांधि कोनेमें पड़ी । पड़ी सबेरे अब है खड़ी ॥

१७७ सोने की वह है नहीं, सोने की है नार।
खाती पीती कुछ नहीं, बूझो बूझन हार ॥

१७८ नारी में नारी बसे, नारीमें नर दोय।
नरके बीच नारी बसै, विरला बूझे कोय ॥

१७९ तेली को तेल, कुम्हार को हंडा।
हाथी की सूंड नवाब को झण्डा ॥

१८० दुबली पतली गुन भरी, सीस चले निहुराय।
वह नारी जब हाथमें आवै, बिछुडे देय मिलाय ॥

१८१ लगाये लाज लागै, लगाये विना सरे नहीं।
धन हैं वाके भाग, जिसके लगै नहीं ॥

१८२ चाची के दुई कान, चचा के काने नाहीं।
चाची चतुर सुजान, चचा कुछ जानहिं नाहीं ॥

१८३ दिन को लटकै। राति को छपटै ॥

१८४ बिन दादे का पोता। भीती भीती रोता ॥

१८५ नीची थी ऊँची बैठाई, ऐसी नार सभामें आई।
है वो नार करमके हीन, जिन देखा तिन थू थू कीन ॥

१८६ पांच बरसकी बींदनी, साठ बरसका बींद ।
आगे चाले बींदनी, पाछे चाले बींद ॥

१८७ डीलके छोटे मुंहके भारी ।
आवत हैं घनश्याम तिवारी ॥

१८८ संख सख संखिया, उडाये जाय पंखिया ।
छः गोड दो अंखिया ॥

१८९ हाथी घोड़ा ऊंट नहिं, खाय न दाना घास ।
सदा हवा ही पर रहै, लेय न पल भर सांस ॥

१९० पड़े रहे मान तो जिउ न जहान ।
चलै लागे मान ती छः मुंह बारह कान ॥

१९१ लंबी पूछ दांत हैं पाँच, तुमसे कहौं साँच ही साँच ।
एक किसान ढेर का ढेर, पूंछ पकरिके देय बखेर ॥

१९२ मैं आया । तू हट ॥

१९३ ठाढी रहै, न खाय न मरै, खड़े खड़े निज कारज करै ।
घासी कहैं सवारी खेरे, है नियरे पर पैहो हेरे ॥

१९४ तीन अक्षर की मेरी देह,
बहू दिखाती बहुत सनेह ।

आदि कटे पानी बनूं, मध्य कटे तो काल,
अन्त कटे तो काज हूं, बूझो मेरे लाल ॥

१९५ आड़क ठेढ़ा दम्भक दार। दस पांव और तीन कपार॥

१९६ सनकी डोरी और रेशमकै काँटा।
गरजत आवै गरियावा नाटा ॥

१९७ झटपट आवे झटपट जाय,
भरि भरि आवे फेंकत जाय।
घासी कहें सवासी खेरे,
है निपरे पर पइहो हेरे ॥

१९८ उकरू मुकरू बैठे। तब बीता भरि पेठे ॥

१९९ तब घचर घचर मारै। तब टांग धरिके फारै ॥

२०० छः पैर पीठ पर पूंछ ॥

२०१ नन्हीं-सी घोड़ी, लगी पिछाड़ी।
बिना लगामके, चलै अगाड़ी ॥

२०२ तनकी नस नस देखिये, नारी अति बल हीन।
चट आई पटि परि गई, ऊपर पिउ को लीन ॥

२०३ लंबी चौड़ी अंगुल चारि, दूहूं ओरसे डारेनि फारि ।
जीव न होय जी को गहै, बासू केरि खगिनिया कहै ॥

२०४ भीतर गूदड ऊपर नांगि, पानी पिये परारा मांगि ।
तेहि की लिखी करारी रहै, बासू केरि खगिनिया कहै ॥

२०५ काला कुत्ता घर रखवाला कौन गुरुका चेला है ।
आसन मार मढ़ीमें बैठा मंदिर मांझ अकेला है ॥

२०६ चार कौन का चौतरा चौसठ घर ठहराय ।
चतुर चतुर सौदा करे मूरख फिर फिर जाय ॥

२०७ कौन चाहे बरसना कौन चाहे धूल ।
कौन चाहे भूलना कौन चाहे चूक ॥

२०८ कौन सरोवर पाल बिनु, कौन पेड़ बिनु डार ।
कौन पखेरु पंख बिनु, कौन नींद बिनु काल ॥

२०९ चिक्कन खेत पटुक्कन पीरा ।
ता में बैठ कराइत कीरा ॥

२१० ओठि कानि न बई, बुनी न गोड़ पसारि ।
चारि महीना ओड़ के, चादर दई उतार ॥

२११ कच्चे अधिक सुहावने गद्दर अधिक मिठाय।
वे फल जगमें कौन हैं पाकत ही करूवाय ।।

२१२ एक अचम्भा हमने देखा मुर्दा रोटी खाय।
टेरे से बोले नहीं, मारे से चिल्लाय ।।

२१३ फाटो पेट दरिद्री नांव,
पंडित घरमें वाकी ठाँव।
श्रीको अनुज विस्नुको सारो,
पंडित होय सो अर्थ विचारो ।।

२१४ खड़े तो खड़े। बैठे तो खड़े ।।

२१५ तनी न जाय बुनी न जाय, धोबी के घर जाय।
आठ महीना ओढ़ि के, कातिकमें धरी जाय ।।

२१६ हाथ से बोवे। मुंहसे बिनै ।।

२१७ चारि कोन चौदह चौपारी।
रोवैं कूकर हंसे बिलारी ।।

२१८ चितरी गाय चितकबरा बछरा।
हुंकरै गाइ बिछुड़ि जाइ बछरा ।।

२१९ आगे पीछे चलति है, दो मुख नागिनि नांहि।
आगी खाय चकोर नहिं, देखी सहरन मांहि ।।

२२० पैर नहीं पर चलती है, नाप नाप कर चलती है,
कभी न राह बदलती है, कभी न घरसे टलती है,
दिनकी उमर बताती है, दिनको खाती जाती है।
समय काटती चलती है, काम बांटती चलती है,
चेत कराती चलती है। कभी न कहीं मचलती है ॥

२२१ कुत्ते की पूंछ हमारे पास। कुत्ता बोले जाय अकास ॥

२२२ एक सखी हम आवत देखा, स्यामघटा बदरीमें रेखा।
हाथ सिरो ही मंगल गावै, ब्याही है वर खोजत आवैं ॥

२२३ एक अंगूठा अंगुरि चारि।
हाथ न पांव न पुरुष न नारि ॥

२२४ परी रहे बिनु पंख न टरे। उठे तो बात हवासे करे ॥

२२५ साथै आवै साथै जाय खाय न पिये न परै दिखाय।
कुछ न रेलकी करे सहाय, साथ लिये बिन रेल न जाय ॥

२२६ दुइ पग चले चार लटकाये,
तीन सास दुइ नैन।
नहिं कोउ हुआ न होयगा,
कहि गये तुलसी बैन ॥

२२७ तीन अक्षर का नाम हमारा, रहुं गांवमें सबसे न्यारा,
पहला अक्षर जभी हटाओ, हलवाई के घरमें पाओ ।
तीसरा अक्षर जभी हटाओ, हलवाई के घरमें पाओ,
दूसरा अक्षर जभी बताओ, साहब का बैरा बन आओ ।।

२२८ एक सींग की गाय । जितना खिलाओ उतना खाय ।।

२२९ गिने न सीत न ताति बयार,
माने दिन सांझ भुनसार ।
पीछे हटै न वह सुसताय,
गठरी बांधे आगे जाय ।।

२३० पहले औ दुसरे बिना, रोटी करे न कोय,
पहले औ तिसरे बिना, करी काठ न होय ।
तिसरे औ दुसरे बिना, गीत न गावै कोय,
तीनों अक्षर मिलें तब, नाम नगर का होय ।।

२३१ भरे ताल में तिरै पसेरी ।
झटपट बूझो करो न देरी ।।

२३२ सीरो पाटी पावा चारि, तापर तकिया गद्दा झारि ।
दो जन सोवैं बाईस काल, बूझे कोई चतुर सुजान ।।

२३३ त्रिया एक बालक लिये गोद,
अपने पति सों करत विनोद ।

तीन जीव पै उभिस आँखि,
झूंठ कहौं तो संकर साखि ॥

२३४ खाइ न पवन न पानी पिये,
आपन मांस खाइ के जिये।
चिकनी सुन्दर तीर समान,
मांस चुके तब रहे न प्रान ॥

२३५ सर में दूं पर बाल नहीं, वेसनमें, पर दाल नहीं।
सरपट में, पर चाल नहीं, सरगममें, पर ताल नहीं ॥

२३६ सिर पर सोहे गंगजल, मुंडमाल गल मांहि।
वाहन वाको वृषभ है, शिव कहिये तो नाही ॥

२३७ चहूं ओर फिर आई। जिन देखा तिन खाई ॥

२३८ एक नार वह है बहुरंगी।
घरसे बाहर निकसै नगी ॥

२३९ आधा भक्तन मुंह बसै, आधा गुनियन साथ।
बाहि पसारि देत हैं, पुड़ी बांधिके हाथ ॥

२४० जल में रहै झूठ नहिं भाखै, बसै सुनगर मँझार।
मच्छ कच्छ दादुर नहीं, पण्डित करो विचार ॥

२४१ आधा नर आधा मृगराज, जुद्ध बिआहे आवे काज।
आधा टूटि पेट माँ रहै, वासू केरि खगिनिया कहै॥

२४२ मंगल होत कहै सिवराज ।
कहो केहि के दुख होत बिसेखो।
कौन सभा महँ बैठि न सोहत,
सोहत को नहिं जानत चित्त परेखो॥

२४३ कोन निसा ससि को न उदोत,
औ का लखि कै बिरही दुख पेखो।
बांझ क पूत बिना अंखियां,
न कुहू निसि में ससि पूरन देखो॥

२४४ दुइ मुंह छोट एक मुंह बड़ा,
आधा मानुष लीले खड़ा।
बीचों बीच लगावे फांसी,
नाम सुने पर आवे हांसी॥

२४५ सावन टेढ़ि चैत माँ सरहरि।
कहें सबलसिंह बूझौ तर हरि॥

२४६ भीतर पेट बहर है आँती काँधे दांत जमाये।
कहें सबलसिंह खूब बना तर ऊपर हाथ लगाये॥

२४७ एक चिरैया लेदीबेदी सांझै से पिरवाई ।
बोकर अंडा उज्जर उज्जर झउआकी उठवाई ॥

२४८ सुआ पंख महोख रंग, तित्तिरकी अनुहारी ।
बगुला पंख मिलायकै, पठै देड ब्रज नारि ॥

२४९ गरे गरे रुआ माथे टीका खरके आगे रोवै ।
तेकरे ऊपर किरिया राखी बिन बूझे जो सोवै ॥

२५० एक ताल मां बसे तिबारी ।
बिन कुंजी के खोलैं किवारी ॥

२५१ टेढ़ मेढ़ दुइय बार । जे न बूझे सगै सार ॥

२५२ जब लगि रहौं में बारि कुंवारि ।
तब लगि मारेउ मोहीं,
वियहि के मारी मोहीं,
तौ में मर्द बखानौं तोहीं ॥

२५३ लागै तो लाज लागै, बिना लागे बनत नाँय ।
धन्य हैं वन जीवन कां जेकरे लागत नाँय ॥

२५४ तर लोटा ऊपर सोंटा । तर घमकै ऊपर चमकै ॥

२५५ छः गोड़ दुइ बाहाँ ।
पिठिया पैं पूंछ लोटे, ई तमासा कांहाँ ॥

२५६ दिन भर घूमै पिया के संग,
चिपटी रहै रात भर अंग।
दिया देखि के वह सरमाय,
झट से सरकि दूर होइ जाय॥

२५७ एक तरुवर का फल है तर,
पहिले नारी पीछे नर।
वा फल को यह देखो हाल,
बाहर खाल औ भीतर बाल॥

२५८ खर आगे औ पीछे कान। जो बूझे सो चतुर सुजान॥

२५९ एक नार जब आंख मिलावै, देखनहारा नाक चढावे।
चतुर होय सो याको बूझै, सो बूझै जिन थोडा सूझै॥

२६० एक नार ऐमन भई, थर थराय सब देह।
वाही के सन्मुख रहै, जासों लागो नेह॥

२६१ बहुत कामका है इक नर, आधे धडमें उसका घर।
कुबडा होकर घरमें जाय, खडा रहै तो काटै खाय॥

२६२ बिना सूत चोली सिली, फुलरीं लगी हजार।
छै महीना तक पहिरि कै, कोरी धरी उतार॥

२६३ बाप बड़ो बेटा बड़ो, नाती बड़ो अमोल।
पै पनाति पैदा भयो, दो कौड़ी को मोल॥

२६४ चंदा ऐसी चांदनी सूरज ऐसी जोत ।
तेरे होय तो दे सखी, बाह्मण आई न्योत ॥

२६५ चार चाक चलै दो सूप चलै ।
आगे नाग चले, पीछे मोह चलै ॥

२६६ एक मोरे मामा हजार मोरे भाई ।
बाहरे मोरे मामा, लाखन निहुराई ॥

२६७ हाथ कटे पाँव कटे, पेट घम्मक धैया ।
जिंदापै मुरदा चढ़ा, देखि लेव भैया ॥

२६८ फल पर ताल पर तरुवर, तामें फूल लगो री ।
तामें दामिनि दमकि रही हैं, बूढी जवान झुको री ॥

२६९ एक भुजा धारन किये, बैठो गद्दी डाल ।
सब जग वसमें कर लियो, नहीं है तन पर खाल ॥

२७० घासीराम एक कुए पर बाटियां बनाकर खाते बैठे । उसी समय एक महिलाने पूछा:—

बापको नांव सोई पूत को नांव नाती को नांव कछुओर ।
इसका अर्थ बताओ घासी, तब तुम नाओ कौर ॥
वह कुएसे पानी निकालकर हंडा भर रही थी । घासीरामने उत्तर दिया:—

आकास वाको घोंसला पाताल वाको अण्डा ।
इसका अर्थ बताओ गोरी, तब तुम भरो हण्डा ॥

महिला ने कहा:–

लाल रंग का बाप वाको, बेटा रंग सफेद ।
इसका अर्थ बताओ घासी, बहुत पढ़े हो वेद ॥

इसी बीच एक और महिला पानी भरने आ गई । उसने दोनों का वाद सुना और यह कहकर फैसला कर दिया:–

जेहि के मारे महिगल भाते और पेरावे घानी ।
घासी अपना कौर उठावो, तुम लें जाओ पानी ॥

२७१ सावन फूलै चैतमें फरै, ऐसो रुख बोइ का करै ।
घासी कहें सवासी खेरे, है नियरे, पर पइहौ हेरे ॥

२७२ हाथी हाथ हथिनिया कांधे, कहाँ जात हो बकुचा बांधे ।
घासी कहे सवासी खेरे, है नियरे, पर पइहौ हेरे ॥

२७३ पहुंचा एक हथेली तीनि,
अंगूरी लिहेनि विधाता छीनि ।
घासी कहें सवासी खेरे,
है नियरे, पर पइहौ हेरे ॥

२७४ नीचे पानी ऊपर आग, बजी बासुरी निकस्यो नाग।
घासी कहें सवासी खेरे, हैं नियरे, पर पइहौ हेरे ॥

२७५ रागी वदे, राग नहिं जानें,
गाय खाय बाह्मन नहिं मानें।
स्वल्प पांव देही पर धरें,
काम कसाइन कैसे करें॥
घासी कहें सवासी खेरे। हैं नियरे, पर पइहौं हेरे ॥

२७६ कारो है पर कौवा नाहिं, रुख चढै पर बंदर नाहिं।
मुंहको मोटो भिड़हा नाहिं,
कमर को पतलो चीता नाहिं ॥
घासी कहें सवासी खेरे, हैं नियरे पर पइहौं हेरे ॥

२७७ जबै खवाओ तबही खाती, खाती जाती चलती जाती।
चलती जाती हगती जाती, सबके घर घर है दिखलाती।
घासी कहें सवासी खेरे। हैं नियरे, पर पइहौ हेरे ॥

२७८ अपुना परी रहैं दिन राति, और परी देखि अनखाती।
ऐसी एक अनोखी नारी, घर घर राखैं झारि बुहारी ॥
घासी कहें सवासी खेरे। है नियरे पर पइहौ हेरे ॥

२७९ स्याम बरन मुख उज्जर कित्ते,
रावन सीस मदोदरि त्रित्ते।

हनुमान पिता करि लेइहौं ।
तब राम–पिता भरि देइहौं ॥

२८० तीतरके दो आगे तीतर, तीतरके दो पीछे तीतर ।
आगे तीतर पीछे तीतर, तो बतलाओ कितने तीतर ॥

२८१ चार आना बकरी, आठ आना गाय ।
पांच रुपैया भैंसि विकाय ॥
बीसै रुपया बीसैं जिउ ।
बेणि बताओ कै के जिउ ॥

२८२ सात पांच नौ तेरह, साढेतीन अढ़ाई ।
ता बिच हमको राखियो, तुमको राम दुहाई ॥

२८३ बारह लोचन वीस पग, छ मुख छानबे दंत ।
घासी की तिरिया कहै, बूझि बताओ कंत ॥

२८४ एक मन दाना चारि बाट । जेतना तौलो परै न घाट ॥

२८५ एक पर धरे नौ सौ बिया ।
नौ सौ बरस परविस जिया ॥
नौ सौ परवर टूटे रोज ।
[illegible] मरैं बियाकी खोज ॥

२८६ एक अजगर चला नहाय, नौ दिन में अंगुल भरि जाय।
असी कोस गंगा का तीर, कितने दिनमें पहुंचा बीर ॥

२८७ बीस बरा औ बीस खवैया, पूर मर्द लरिका चौथैया।
आधा आधा पायेनि नारी, कितने कितने कहो बिचारी ॥

२८८ एक नार वह दांत दंतीली।
पतली दुबली छैल छबीली ॥
जब वा तिरियहिं लागे भूख।
सूखे हरे चबावे रुख ॥

२८९ पौन चलत वह देह बढावे।
जल पीवत वह जीव गंवावे ॥
है वह प्यारी सुन्दर नार।
नार नहीं पर है वह नार ॥

२९० एक नार जब बनकर आवे।
आलिक अपने ऊपर बुलावे ॥
है वह नारी सबके गौंकी।
खुसरो नाम लिये तो चौंकी ॥

२९१ घूम घूमेला लहगा पहिने, एक पांवसे रही खडी ।
आठ हाथ हैं उस नारीके सूरत उसकी लगे परी ॥
सब कोई उसकी चाह करे हैं मुसलमान, हिन्दू क्षत्री ।
खुसरो ने यह कही पहेली दिलमें अपने सोच जरी ॥

२९२ बाला था जब सबको भा या ।
बढ़ा हुआ कुछ काम न आया ॥
खुसरो कह दिया उसका नांव ।
अर्थ करो नहिं छोड़ो गाँव ॥

२९३ नारी से तू नर भई औ शाम वरन भई सोय ।
गली गली कूकत फिरे कोई लो कोई लो लोय ॥

२९४ एक मंदिरके सहस्त्र दरा हर दरमें तिरियाका घर।
बीच बीच वाके अमृत ताल बृक्ष हैं इसकी बड़ी महाल ॥

२९५ जा घर लाल बलैया जाय, ताके घरमें दुंद मचाय ।
लाख मन पानी पी जाय, धरा ढका सब घरका खाय ॥

२९६ सामने आये कर दे दो। भरा जाय न जख्मी होय ॥

२९७ एक राजा की अनोखी रानी । नीचे से वह पीवे पानी ॥

२९८ एक नार वह औषधि खाय,जिसपर थूके वह मरा जाय ।
उसका पी जब छाती लाय, अंध नहीं काना हो जाय ॥

२९९ आगे आगे बहना आई, पीछे पीछे भैया ।
दांत निकाले बाबा आये, बुरका ओढे मैया ॥

३०० धूपोंसे वह पैदा होवे छाँव देख मुर्झाये ।
अरी सखी मैं, तुझसे पूछू, हवा लगे मर जावे ॥

३०१ खेतमें उपजे सब कोई खाय ।
घरमें होवे घर खा जाय ॥

गुजराती-विभाग

(पद्य-खण्ड)

---

१ खेडु खेतर खुब, खाज पण खाती जाउं।
थाउं कदी खुश खिन्न, कदी मन मां मलकाउं ॥
हांकनार जन होय, तोय हूं नहि वृषभ हळ।
खेडु थाकी जाय, तोय मने नहि पडे बळ ॥
कदी कापी छेदी दुःख दीओ, पण अवगुण नहि दिले धरूं।
सांखुं संकट हूं सर्वदा, पण आज्ञाने अनुसरूं ॥

२ मळवा आव्यो मित्र, सहु आनंदे करता ।
हास्य विनोदे रमत, गमत ने वातो करता ॥
सघळे लीला ल्हेर, शोक नव स्वप्ने दीठा ।
नहि द्वेष नहि वेर, मित्र बहु लाग्यो मीठो ॥
पण द्वेषी तेमां अेक जण, मित्र शत्रु गणी बळी मरे ।
ते द्वेषी उनाळे कामनो पाणी वडे टाढक करे ॥

३ त्रण अक्षर नुं नाम, वळी नरजाति पोते।
भुवन तणो आधार, काष्ट काया छे जाते ॥
त्रीजो बीजो वांच संतोष थी उलटुं थाये ।
पहेलो अक्षर दाब, अर्थ सद्गुणी नो भाखे ॥
त्रण अक्षर वांचो अनुक्रमे, तो मंडाण ते घर तणुं।
शंकर उत्तर घट तो करे, शिरोमणी तेने गणुं ॥

४ पक्षी टोळुं प्रौढ, उडी आकाशे आव्युं।
वनमां वड गंभीर, ते तणुं वृक्षज भाव्युं ॥
अेक अेक पत्रे पक्षी, बुद्धि थकी तो बेठां।

वध्युं पक्षी त्यां अेक, सौ चिन्ता मां पेठां ॥
फरी बेठां ते बब्बे जणां, त्यां अेक पान ज वध्युं ।
कहीये पक्षी ते केटलां, कहो पान पण गणी बन्धु ॥

५ त्रण अक्षर नो मरद, बहु बळवंतो मातो ।
माये बेहद तोय, कदी बेहद नव थातो ॥
अगणित नारी छतां, फुलणजी थई न फुलातो ।
नाश करूं सर्वनो, छोड़ी हद हुं जो जातो ॥
कदी क्रोध करीने हद तजी, उछळी लागुं दोडवा ।
त्यां भाण शत्रु मुज पूंठ पडी, लागे मान मरोडवा ॥

६ गुणवंता गोळाकार, नारी अेक नेह भरेली ।
वींधी तेने सार, अधर अवनी थी ठरेली ॥
ज्यम ज्यम खाये मार, मधुर सूरथी ते बोले ।
राजद्वार रहंत, देवस्थान मां अति तोले ॥
अन्न जळ के अहार नथी, गुण वंती नारी घणी ।
ते समय समय पर सूचवे, आ समस्या शंकर तणी ॥

७ नारी अेक रूपवंत, पातळी सोटा सरखी ।
काळी गुण अनंत, देखी ने रहीअे हरखी ॥
लांबी दीसे नार, चांच काळी ने तीणी ।
चाले पवननी चाल, घोर गाजंती झीणी ॥
पंडीत ने तेनी गरज, अंत लगी जीवती रहे ।
आ समस्या शामळ तणी, सज्जन मन समजी कहे, ॥

८ नीरख्यो नर में अेक, शुभ सलिले भरियो ।
नहि कूप के कुंभ, नहि अे नद के दरियो ॥
बेठो बेठक लाकडे, अक्कड थई आसन वाळी ।
नारी पीवा नीर, आवी त्यां अेक रूपाळी, ॥

पण नीर न पीधुं नारीअे, मुख बोळी पाछी वळी ।
अेम आंटा खाय अति घणां, उत्तर आपो मंडळी ॥

९ श्याम वरण नहि मेघ, मुगट पण मोर न जाणो ।
मुख विण बोलुं मधुर, चतुर हुं कोण प्रमाणो ॥
छे पुच्छ पण नहि वांदरो, ज्वाला पण ज्वालामुखी नहीं ।
बे अक्षर नो मर्द चतुर नर चेतो सही ॥

छे प्रौढ पेट मारूं घणुं, भरूं छुं पण पाणी थकी ।
हुं कोण कहो जी चतुर नर, विचार करी मनमां नक्की ॥

१० बे अक्षर नी नार, स्वामि ने मळवा जाती ।
दोडे ज्यम दोडाय, वांकी चूंकी पण थाती ॥
वाटे पडे जो विघन, तरत ते रस्तो तजती ।
रस्ता पर सुंदरी, लीली साडी ते सजती ॥

ते नाम सुलटुं वांचतां, अजवाळुं आंखे पडे ।
पण उलटु नाम काने सुणे, मुसलमान रण पर चडे ॥

११ गई बे सुंदर नार, कुवे पाणी भरवाने ।
हतो पुरूष त्यां अेक, पुछ्युं अे बे त्रियाने ।

शुं संबंधे वसो, तमो नीज घरनी मांहे ।
त्यारे बोली अेक, सुणो नीति नी राहे ।।
मुज मामो छे ते अेहना, मामाने मामो कहे।
कहो गुणियल मित्रो तमे, शुं संबंधे अे रहे ।।
१२ कौरव पांडव जुओ, कुरूक्षेत्रे जई लडिया ।
मुसलमान जय पामी, रजपूतो रणमां पडिया ।।
गयु इरानी राज, ग्रीक पण तूट्यां तेथी ।
रोळाया छे रोमनो, आथम्या आरब जेथी ।।
जो समजो तो समजी जुओ, जेथी ब्रिटिशो फाविया ।
जे दिवस हिन्दुना आथम्या, ते फरीशा थी ना'विया ।।
१३ दीठो जोगी अेक, छेक छे वेंत समानो ।
सफेद शिरपर वाळ, पेटमां दांत प्रमाणो ।।
चाले ना डग अेक, अधर अवनि थी रहे छे ।
शेकी तेना दांत, जनो सौ भक्ष करे छे ।।
ते ओढे चादर आठ दस, शीत वर्षा तडको सहे।
गुणियल नर संतो तणी, आ समस्या समजी कहे ।।
१४ त्रण अक्षर नी नार अेरवी, अेकवीरा में बोरी ।
दाब्यो अक्षर आद्य, अर्थ थयो त्यां दोरी ।।
मध्य पर मूकयो हाथ, साथ राखी ने पेलो ।
अर्थ थयो आनंद, व्हाल वध्यो तन वहेलो ।।
वळी मध्य अंत उलटावतां, अर्थ मस्तक थई रह्यो ।
ते प्रेमदा कई परभु कहे, लाखेणा मनमां लहो. ।।

१५ जीव विना नो साप, बेय पासे थी सरखो।
जराय मुख नहीं झेर, पंडिते तेने परख्यो॥
नर नारीनी कमर, रहीं वींटी ते वारू।
वस्त्र तणे विवेक, सुशोभा सघळी सारूं॥

बे दर तेनां बे पास छे, बहार गयो दीठो बहु।
शामळ समस्या सहेल छे, सुण्या थकीं समजे सहु॥

१६ पग विण अेक पुरूष, शिर पर जटा धरावे।
मुख मां वारि भर्युं, नेत्र तो त्रण कहावे॥
नहि हाथ तेम जीभ, जीभ विना बडबडे।
पूजे छे सहु लोक, तेने देव नी तोले॥

नपुंसक जाति गणाय छे, मूके छे, देव स्थान मां।
कोई जाय परदेश मां, तो दे तेना हाथ मां॥

१७ त्रण अक्षर निज नाम, पग विना छे पांगळीओ।
बेछे बाहु विशाळ, अंगमां नहि आंगळीओ॥
शिर विना छे शरीर, मोज झाझेरी महाले।
अवनि थी अंतरीक्ष, चरण विना ते चाले॥

छे सुख करण संसार मां, लक्षवसा शुभ लाज छे।
दाता आपे जन दीन ने. कष्ट निवारण काज छे॥

१८ तरूणी अक्षर त्रण, पातळी सोटा सरखी।
रसमय रूहु रूप, पंडीते प्रीते परखी॥
सपुत त्रण संतान, देवने दुर्लभ दीठां।

त्रण लोकनां तत्व, मों नां अमृत मीठां ॥
मानीनी मन माने ते थकी, आण आण रे आ घडी ।
शामळ कहे सहेजे समजजो, वखत लागशे पा घडी ॥

१९ चतुर नर तुं चेत, अेक अचरज में दीठुं ।
सुंदर रूप स्वरूप, अधिक अमृत थी मीठुं ॥
काया उपर हाड, हाड पर वाळ भणी जे ।
वाळ उपर छें रूधिर, गुण तेनाज गणी जे ॥
खरी ते उपर खाल छे, खाल उपर वाळ ज नथी ।
वळी मुखमांथी अमृत झरे, शामळ कहे कहो कथी ॥

२० कहुं वर्तुळ आकार, छत्र जेवी छत छाजे ।
शत्रु सरीखां साल, भामनी देखी भाजे ॥
वस्त्रा भरण. विवेक, फूल भरियां भली भांते ।
मोंघी छे महा मूल्य, जोई जोरावर जाते ॥
शूरा मां शूरी घणी, सौथी आगळ संचरे ।
अरि गंजन रक्षक देहनी, अर्थ कवि शामळ करे ॥

२१ सूके काष्ट फळ लाग, तेनी शोभा छे सारी ।
त्रण अक्षर मां तोल, नाम कहेतामां नारी ॥
लांबी पातळी लांठ, कलंक कायामां कूडी ।
जुवानी नुं छे जोर, बहु जन कहे छे बूडी ॥
झाझुं ते फळमां झेर छे, चपळ लोक गुं चहाय छे ।
शामळ ते फळ आरोगतां, जतां जमलोके जाय छे ॥

२२ मोती ने अनुमान, पृथ्वी पर आवी पडियो।
को जाणे कोनो माल, कंथ मारा ने जडियो ॥
सोंप्यो मारे हाथ, भला भोजनमां भळियो।
चोरी गयो को चोर, कोई नर-नारे गळियो ॥
कोटी जतन थी नव जड्यो, लख जन जोतां लीजीये ।
शामळ शोध्यो नव मळे, तो शो उत्तर दीजीये ॥

२३ अचरज सरखुं अेक, सांभळयुं छे सौ करणे ।
जता दीठा जशवंत, तोल थी जन तो त्रण्ये ॥
खट पग ने खाट हाथ, नेत्र बे देवत देखे ।
बे चरणे चालंत, ललित लक्षण थी लेखे ॥
ते कान ने नामे नाम छे, सतवादि शोभित सदा ।
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, कूड कथन न कहुं कदा ॥

२४ वृक्ष नहि नहि वेल, नहि पत्रे नहि फूले ।
नहि बीज वावेत्र, कहे कण अति अमूल्ये ॥
गुण जश अपरंपार, देश आखामां दिठो ।
देव दनुज नृप रंक, गणे अमृत थी मीठो ॥
छे मोंघा गुण मोती थकी, सोंघामां सोंघों सदा ।
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, कोई अे नव तजियो कदा ॥

२५ अतिशे उज्जवळ अंग, थयो काळो ते करमे ।
षट दर्शन षट शास्त्र, धरे अंतर मां धरमे ॥
पोते जात पवित्र, नाहवा धोवा थी नासे ।

जळ पीधे जीवे नहिं, पलक न रहे जळ पासे ॥
परमार्थी पराक्रमी घणो, पर मुलकमां परवरे ।
शामळ शाह सुलतान सौ, अधिक आशा अेनी करे ॥

२६ नगर अेक नवरंग, चारे दिश दरवाजा ।
वरण चार नो वास, जगत जश महिमा झाझा ॥
मंदिर छत्रु महान. पडें पादर त्रण पासा ।
करे राज बे वीर, क्षत्री वटथी ते खासा ॥
सुंदर साहेली सोळ छे, रमत रमे ते शुं नित्ये ।
ते कवण नारी ने नगर ? चतुर जन चेतो चित्ते ॥

२७ जळमां रही जीवंत, नहि भेडक नहि मच्छी ।
चारे दिश चालंत, नहि पशु के नहि पक्षी ॥
पग विण वहे प्रवाह, पवन पण नहि, नहि पाणी ।
लक्ष्मी लीला लहेर, नहि राजा, नहि राणी ॥
छे तत्व तारण तोल तरण, बुडताने राखे बहु ।
वळी पार उतारे पलकमां, शामळ कहे समजो सहु ॥

२८ साठ नारी नार, नार आठे नर जाणुं ।
आठ नरे नर होय, पुरूष जो त्रीस प्रमाणुं ॥
बार नरे नर नाम, भाग त्रीजो ले तेनो ।
अंत्य मध्य ने आद्य, अमल जोरावर जेनो ॥
हरघडी तेने हरनार छे, दुःख टाळे जे देहनूं ।
वळी जे माटे कौरव हण्या, तरत काम छे तेहनुं ॥

२९ गोरी बेठी गोख तळे, नदी केरे नीरे ।
तुट्यो मोती हार, पड्यो जई तेनें तीरे ॥
अर्ध मोती जळमांही, पलकमां जईने पडियां ।
चोथसवायो भाग, अर्ध कचरें जई अडियां ॥
वळी छठ्ठे भागे सेबाळमां, गबडी गबडीने गयां ।
कहीअे मोती केटलां, कामनी–करमां बे रह्या ॥

३० पंखी टोळां बे ज, ऊडी आकाशे आव्यां ।
चंपक वनमां तेह, भलां ते सौने भाव्यां ॥
बोल्युं टोळुं एक, एक तममांथी आवो ।
सरखां थई ए बेय, भला सौन मन भावो ॥
त्यां बीजूं टोळुं बोल्युं, अेक पक्षी आपो तमो ।
तो बमणां थई अे तम, थकी गण पक्षी पूछुं अमो ॥

३१ त्रण अक्षर छउं नार, अंत्य दाबतां स्वाद छे ।
उलटुं पल्लव धार, अंत्याक्षर दाबी करी ॥
दाबो अक्षर मध्य, आदि अंत ऊलटां थतां ।
अर्थ रहेशे शुद्ध, ' स्त्री ' तेनो उत्तर कही ॥

३२ अेक वडने त्रण थड, थडे थडे भुज चार ।
भुजे भुजे त्रीस आंगळां, आंगळी अे नख सात ॥
नखे नखे चोवीस कूमतां, कूमते पांखडां साठ ।
अे सर्व मळीने अेक छे, पंडीत करो विचार ॥

३३ नरमांथो नारी थई, नरनो करतां संग ।
हणे हमेशां नर घणा, अरधुं अरपी अंग ॥
शूरातनना समयमां शोर, करे बहु वार ।
राम चतुर नर तो भणे, कहो कई ते नार ॥

३४ बे मोढां बंबोई नहि, काळो पण नहि नाग ।
वारि दे वरसाद नहि, प्रौढ पुच्छ नहि नाग ॥
चाले तो दश चर्णने, त्रण मस्तक त्यां थाय ।
नीच घेर अवतार लई, बे मोढे बंधाय ॥

३५ खोराक केरी वस्तुं हु, अंगे धोळी बहु ।
जीव नहि मुजमां खरे, पाळु जीवो बहु ॥
गह्य अर्थ धारण करी, विस्तारूं सारो देश ।
उलटावी जुओ मने, भाळो तम आ देश ॥

३६ वरसुं पण वरसाद नहि, सूकवुं पण नहि ताप ।
वक्र वधु रावण नहि, न विधातानो बाप ॥
आरोगुं पाषाणने, पण नव थाय पचाव ।
माटे करूं छुं उलटी, मित्र मने ओळखाव ॥

३७ भण्या करे ब्राह्मण नहि, दीर्घ चांच नहि बग ।
तेल चडे हनुमान नहि, पांखो पण नहि खग ॥
नारीने वहालो घणो, अंग धरे वरमाळ ।
करोळिया सम काढतो, लांबी चाचे लाळ ॥

३८ चालुं छुं हुं चरण विण, दोरे त्यम दोराऊं; ।
वहुं भार बहु पीठ पर, खाज अग्निनो खाऊं ॥

३९ जन्म्यो त्यारे बे शींग, जोबनमां बे गयां ।
जोबन फीटीने जरा आवी, त्यारे बेनां बे रह्यां ।।

४० खाय खरूं बोले खरूं, पण निर्जीव गणाय ।
वचलो अक्षर काढतां, नाम हरणियुं थाय ।।

४१ भमे भूमिमां पग विना, आणे वस्तु अनेक ।
जीव विना जगजीव छे, ते मोकलजो अेक ।।

४२ लांबो छे पण नाग नहि, काळो छे पण काग नहि ।
तेल चडे हनुमान नहि, फुल चढे महादेव नहि ।।

४३ पंखी ऊडे जीव विना, बेसे जेनी डाळ ।
मृत्यु पमाडें देखतां, कहो मुजने भूपाळ ।।

४४ चाले छे पण चरण नहि, ऊडे पण नहि पांख ।
लाखे छांयो नव रहे, सऊको देख आंख ।।

४५ चंचु पण चकवी नही, मांजारी मुख श्याम ।
बे जीभी नहि नागणी, नरपत कहो ते नाम ।।

४६ अेक नारी आ विश्वमां, पाडे सहुने त्रास ।
आठ मास छानी रहे, महाले चारे मास ।।

४७ अेक नारी संसारमां, राय रंक घेर जाय ।
जे उपर करूणा करे, मृतक तुल्य ते थाय ।।

४८ नारी अेक नव खंडमा, लागे सहुने अंग ।
सबळानें निबंळ करे, करे रंगनो भंग ।।

४९ मीन मेष मिथुने मळी, कुंभ राशि उपर धरी ।
वरख राशि तेंनां नाम, नवरतो तो छोडो गाम ।।

५० तपेलामां तपेलुं, मांहे कलंकी घोडो ।
खोलाय तो खोलो, नहि तो बेठां माथुं फोडो ।।

५१ जळ थकी उपजे ने, जळमां बेसी नाय ।
मस्तक वाढे मरे नहि, आंख काढे जीव जाय ।।

५२ कटकट करतु कणसलुं, नानामोटा पग ।
मोटो चाले बार गाऊ तो, नानो चाले डग ।।

५३ तीखुं ने वळी तमतमुं, मूळा जेवडां पान ।
अे वरत वरते तेने, आपु वीरमगाम ।।

५४ नारी पण निर्बळ नहि, काळी पण नहि कोल ।
दरमां रहे नहि नागणी, उत्तर अेनो बोल ।।

५५ वृक्ष अेकनां डाळ, बार भली भात भणीजे ।
पाखंडी व्रणसे साठ, गुणीजन जोई गणीजे ।।
चतुर जुवो चोवीस, सरस फळ तेने फळिया ।
अेकवीस सहस्र छसें, पत्र कविलोके कळियां ।।
पण चोंथ भाग अे पत्रनो, गृहस्थ शिर शोभित घणो ।
ते आपे मागणने अधिक, वेणीदास रखियल तणो ।।

५६ भात भातना रंग, लीलो पीळो के रातो ।
लोह लकड वृक्ष वेल, राव रंक दुर्बळ मातो ।।
कनक कथन मणि रत्न, मेर मोटम तुच्छ तरणां ।

जीव जंतु पशु पक्षी, सिंह नर हस्ती हरणां ॥
वळी जडचेतन नर नारी ओ, लायक जन लेखी लियो ।
शामळ कहे चेतो चतुर नर, अेक रंग सोनो कियो ॥

५७ नवग्रहमांही नाम, काम कासदनुं करतो ।
पूरण जश परताप, तापनी हरकत हरतो ॥
भाग्यशाळीने भोग्य, रोग दुःख दाझे देहे ।
सारंग नाम सरदार, सारंग पर वाहन स्नेहे ॥
तेने नामे जे नाम छे, ते आव्याथी दुःख जशे ।
अे शीघ्र स्वामीजी लावजो, तो वळती सोळे थशे ॥

५८ कण रूडा कहेवाय जमे नहि जन पण कोई ।
मरद वधारे मान, माननी रहे मन मोही ॥
सार गणे संसार, भूप पण गणे भलाई ।
अतीशे उज्वळ अंग, संग शोभित सदाई ॥
गोळाकारे गुणवंत छे, प्रसन्न मन पूरण करे ।
जो स्वामी शीघ्र ते लावशो, शामळ कहे सोळे सरे ॥

५९ नार मळी दश वीश, पुरूष परठाणो जेनो ।
सुरपति वाहन जात, तात जाणे सौ तेनो ॥
नाम अेक नर होय, आवरदा बेनो सरखो ।
वसे वेगळे वास, पंडिते पूरे परख्यो ॥
ते तालेवंत तरूणी तणे, हस्तक रूडो नर हशे ।
पंडयाजी पहेलो लावजो, त्यार पछी सोळे थशे ॥

६० सपूततणुं छे नाम, सभामां शोभे सहेलो ।
रजनी केरूं रूप, पूजन शिव करतां पहेलो ॥
नेह करे नरनार, देह शुभ आपे दाखे ।
तस्करने मन ताप, भला जन तो शुभ भाखे ॥
ते नरना तनथी नीपजे, करूप कहे छे कामनी ।
शामळ कहे स्वामी लावशो, तो भजशे शुभ भामनी ॥

६१ काया कृष्ण स्वरूप, सुघड पण सारो सौथी ।
भोगी नरने नाम, रीझे ते बहेक बहुथी ॥
पांखडीओ परवेश, करे अंतरिक्षथी आपे ।
पंखी गुण गणाय, पाय खटनी छे छापे ॥
ओ नर जेने अडके नहि, भाव धरीने नव भजे ।
ते लाव कंथ लेखा विना, तो सुंदरी सोळे सजे ॥

६२ त्रण अक्षर तरतीब, तेर गुण शोभा सारी ।
राजद्वार सन्मान, मान दे नर ने नारी ॥
नपुंसक छे निज नाम, पुरूष बे शोभे संगे ।
काम वधारण काय, रंजित ते सौने रंगे ॥
फळ फुल विना छे फूटडुं, कंथ लाव कहे कामनी ।
तो शामळ कहे सोळे सजे, जोख करतां जामनी ॥

६३ सरोवर सुंदर सार, नौतमे नीर भर्युं छे ।
नहि आरो नहि पाळ, स्थिर पण ठाम ठर्युं छे ॥
बनस्पति स्थिर वेल, विना पग मृग चरे छे ।

विना धनुष्य ने बाण, विना कर चोट करे छे ॥
ते मारनार नथी दीसतो, मृग तेने मारी मरे ।
ते लाव्य कंथ कहे कामनी, देखी मन मारूं ठरे ॥

६४ काळी नार कुरूप, अनुपम ओपे आझी ।
मोंधी मोंघे मूल, त्रणे पख तेनी ताजी ॥
नरथी ऊपजी नार, अरण्यमां अे तो नरखी ।
महिप सभामां मान, पवित्र पंडिते परखी ॥
छानी राखी जो छळ करी, प्रसिद्ध पोते थाय छे ।
शामळ कहे स्वामी लावजो, अे राया शिर राय छे ॥

६५ अेक नार मुख दोय, भूप सभामां भाळुं ।
गौर वरण मुख अेक, अेक कुरूपी काळुं ॥
नहीं हाथ, पग नहीं, घणेरी तरतीब तोले ।
मारे महोकम मार, बूम पाडी ते बोले ॥
वळी भूंडु अन्न भावे नहि, काचुं कचर्‍युं भ्रख करे ।
डाह्या दाता मनमां धरे. महीपति केरां मन हरे ॥

६६ वाहन वृषभ वहंत, पराक्रम अधिकुं ओटे ।
रूंढमाळ विशाळ, कारमी दीठी कोटे ॥
मस्तक गंग तरंग, बहु पासे ते चाले ।
करली हणहणकार, भूप सौ नजरे भाळे ॥
अे समस्या छे पण शिव नहि, समजुने मन सहेल छे ।
जो वाटे घाटे दश दिशे, महीपति केरे महेल छे ॥

६७ चो मुखवाळा चार, पूत्र पराक्रमी परख्या ।
न को ऊंच के नीच, शोभीता चारे सरखा ॥
चार बच्चे बे नार, प्रीतनी रीते परण्या ।
बेय नपुंसक तंन, आठ अे वेगे परण्या ॥
थाय अेके अळगुं आठमां, तो साते नहि कामनां ।
नर अेक थाय अे आठथी, कहो अरथ, अे नामना ॥

६८ नामे कहीअे नार, अधर अवनीथी सांधी ।
वनिताने वण बांक, लोहने पासे बांधी ॥
मानवी जण बे चार, चडी रूदया पर बेसे ।
आघी पाछी जाय, ठरी ठेकाणे पेसे ॥
चीसो पाडे चारे मुखे, दया न आवे देहमां ।
शामळ कहे पंडित पारखो, नरनारीना नेहमां ॥

६९ गुणमय गोळाकार, अधिक अमृतनो भरियो ।
स्त्रीओ सहस्त्र दशवीस, कबूल ते नरने करियो ॥
जो कोई पासे जाय, नार दु:ख तेने दे छे ।
अहो निश आठे जाम, अधर रस तेनो ले छे ॥
ते नरने मारे पारधि, रूधिर सरव जन खाय छे ।
शामळ कहे मांस-रूधिर सदा, चौटामां वेचाय छे ॥

७० नारी नीरखो नीच जुओ, लक्षण कहुं जेनां ।
अंगे उजळी आप, बाप मां काळां तेनां ॥
नहि हाथ नहि पाग, कुलक्षण तेनी काया ।

मुख नासा छे नेण, नहि ममता के माया ॥
ते नहि पशु, पक्षी, मानवी, नहि जीवा जोनी जदा ।
शामळ कहे सुमति सलक्षणा, ते शोधि जोशे सदा ॥

७१ अेक बाळ बे मुख, अेक उपर अेक हेठुं ।
उपर पातळुं छेक, केडथी पहोळूं पीठुं ॥
तळे मुख तेमा जीभ, तेह बोलाव्युं बोले ।
हलावतां हालंत, वळी डोलाव्यूं डोले ॥
ईश्वर आगळ अधिकुं रहे, गुणवंता जनने गमे ।
शामळ कवि कहे ते उचरे, जगत लोक तेने गमे ॥

७२ रथ दीठो समरथ्य, अधर अवनिमां चाले ।
ब्रम्हा नामे नाम, मंदिर तेनामां मा' ले ॥
अपरंपार अपार, प्रजा पेदा त्यां थाय ।
वेठे अग्नि आंच, मार पण झाझो खाय ॥
आवे अमूल्य कामे अरथ, मूल अल्प माटे मळे ।
शामळ कहे छे शोधी जुओ, कवि रूडा ते तो कळे ॥

७३ नीच घेर छे नार, देश बाधामां दाखे ।
मुखमां मोटी जीभ, रीझथी बहार राखे ॥
नहीं हाथ नहि पात्र, शीश विना मुख बोले ।
फरे छत्र ते शीश, जमे कण अधिक अलोले ॥
धरधणी तो गीतो गाय छे, पवित्र नर पुंठे फरे ।
शामळ कहे अेहुं अेहनुं, मोटा जन मस्तक धरे ॥

७४ प्रमदा अेक प्रचंड, अधर अवनी पर राचे ।
उपर ऊभा बे चार, जेम नचवे त्यम नाचे ॥
ज्यम होय जेठ्ठी मल्ल, जोर झाझेथी झूझे ।
बोले बोल बलवंत, घरा बांधी त्यां ध्रूजे ॥
पाणी तो तेह पिये नहीं, अन्न अलेखे खाय छे ।
वळी चरण नथी पण चांच छे, अेठुं अेनुं सौ चहाय छे ॥

७५ मर्यूं नारीमां नीर, पुरूष अेक पीवा सांच्यो ।
बे नारीअे बळवंत, अवळो सवळो बांध्यो ॥
अवन थी अंतरिक्ष, नार नचवे त्यम नाचे ।
वारू उत्तम वंश, रिद्धि रूडीथी राचे ॥
परभाति राग रूडे स्वरे, गुण रूडेरा गाय छे ।
शामळ कहे घेर श्रीमंतने, जरूर अे जणाय छे ॥

७६ मस्तक पाखी मुख, दींठो में तेनो डंमर ।
शूंढाळो समरथ्य, हस्ती नहि काळो भंमर ॥
प्रोढुं दीशे पूंछ, लांबी अेक पासे चोटी ।
मेह समोवड मान, मूल मर्यादा मोटी ॥
आहार अन्न ओपे नहि, पेट भरी पाणी पिये ।
शामळ कहे व्रत घणां करे, कहो अरथ कारण किये ॥

७७ चतुर चेल मुख चार, नहीं ब्रह्मा ब्रह्माणी ।
वृषभारूढ वाहन, नहीं रूद्र रूद्राणी ॥
जळ पूरण जशवंत, नहीं ज नवाण नवाणी ।

सेवक शोभे साथ, नहीं राजा के राणी ॥
अे अकलवंत अंतर धरो, शुं वळी वळी वखाणिये ।
छे समस्या कवि शामळ तणी, जशवंत जन जाणिये ॥

७८ रत्नथी रूडो अमूल्य, फूल फूल सफळे फळियो ।
करे कथीरनुं कनक, बहु गुण तेथी बळियो ॥
साग सीसम वृक्षवेल, भार अढारे भारी ।
अमृत फळ सहकार, तेथी शुभ शोभा सारी ॥
छे लाज रखण सौ लोकनी, सहाय देव ने दानवो ।
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, महासुख देयण मानवो ॥

७९ पांखाळो परतापी नहीं पंखीमां पूरो ।
घंघ मचे त्यां धाय, नहीं शामद के शूरो ॥
गाजंतो गंभीर, मेहमां कोई न प्रमाणे ।
छे पातळियो छेक, जुअे ते तो जन जाणे ॥
लाडकडो ते रिपुलोकने, जे छे जम किंकर जसो ।
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, कहो अरथ अे ते कशो ॥

८० लांबड पूंछ लखाय, नहि वांदर ढूंकडियो ।
राती मांजर शीश, नहि मांकड कुकडियो ॥
अतिशय झेरी अंग, नहि वींछी नहि सापे ।
वृष्टि समे वाधंत, तरूण तो थाये तापे ॥
वनमां, वस्तीमां पण वसे, तोल कांई तेमां नथी ।
कवि शामळ कहे जे समजशे, कहुं डाह्यो तेने कथी ॥

८१ नारी अेक अनूप, सरस शोभंती सहेली ।
बे अक्षरमां नाम, मूढ़ रूदियामां भेली ॥
उदर वच्चे अेक शींग, अेक आंखे दिल देखे ।
पवित्र संग पोसाय, डाह्यी दुनियां पुर पेखे ॥
ते मुखथी जळ प्राशन करे, शींगेथी आंखे झरे ।
कवि शामळ कहे शोभे तहां ज्यां वरने कन्या वरे ॥

८२ छेल कुदंतो छेक, अेक कहे अे तो घोरी ।
शींग नथी ते शीश, कहे त्यारे तो तोरी ॥
पीठे नथी पलाण, त्यारे तो मेडक माणे ।
नथी रहे तो ते नीर, जरूर कोई ससलो जाणे ॥
पण ससलाने पग चार छे, पग विण आ तो पखरे ।
शामळ कहे अर्थ सहेल छे, रूडा जन रूदये घरे ॥

८३ पुण्य सुपात्र पवित्र, कुल अेवानी कन्या ।
कीधो पितानो काळ, अेह पण मोटो अन्या ॥
वरी वडाउवा साथ, जात रूड़ो ते जाणी ।
कांई न चडयुं कलंक, वडा लोकोअे वखाणी ॥
कहो कवण नार पिता कवण, बडउवाने वरी ।
वळी कवण कुल पेदा थई, शामळ कहे ते सुंदरी ॥

८४ नहीं नपुंसक नार, नकी नरने छे नामे ।
अमृत तुल्य आहार, करंता न ठरे ठामे ॥
निर्मळ नीर झरंत, पूर्ण गुण अपरंपारी ।

दुर्लभ जाणे देव, सकळ गुण शोभा सारी ॥
छे तत्व तेहतण लोकमां भाग्यशाळी जन भोगवे ।
शामळ कहे तेथी नीपज, जे जर सांठे जोगवे ॥

८५ अेक मात संतान, नपुंसक ने अेक नारी ।
ते बेनां संतान, अलेखे अपरंपारी ॥
नपुंसकनां संतान, अरथ अधिके नव आवे ।
वडे मूल वेचाय, भूप जेवाने भावे ॥
बाळक जे तेनी बहेननां, सर्व अर्थ तेथी सरे ।
शामळ कहे पण सोंघां सहु, कोडी कोड़ी करतां फरे ॥

८६ शामा छे शामळी, स्वरूपे पण सोहंती ।
भमराळी भरपूर, मरद मोटम मोहंती ॥
वपु वरणागणी वेश, वळी बळवाळी वंकी ।
दुश्मन गंजण दास, सार शोभित सिंह लंकी ॥
ते नार वडे नर शोभशे, ते वोण मुख लजामणां ।
हे शामळ अे समस्या कहो, भली रीते लेउ भामणां ॥

८७ पंरवणी अेक प्रमाण, कोडथी नारी कहावे ।
ज्यां मोकलीअे जाय, आप तेडावी आवे ॥
ऊडे ते आकाश, नहीं समळी नहीं गरजण ।
सूत्र सहित शोभंत, नहीं दाई के दरजण ॥
गंभीर घोषथी गरजती, ध्वजा फरके बारणे ।
शामळ कहे शाणा समजजो, कवण नार ते कारणे ॥

८८ प्रतापवंतो पुरूष, जनोई अंग धरे छे ।
प्रौढ पेखिये पेट, शिग अेक शीश सरे छे ॥
चरतो साते चांच, कोटिधा नृत्य करे छे ।
बाळक तेड्यु बांह्, ठाम ने ठाम ठरे छे ॥
फरी आणे छे ते फूदडी, घोर स्वरे गुण गाय छे ।
शामळ कहे तेना संगथी, वधते मूल वेचाय छे ॥

८९ अचरत अेक अपार, वपु जोतां वांकडियुं ।
पांछळ पूंठ विशाळ, शोभतुं मुख सांकडियुं ॥
रूप बहु बहु नाम, घणी बाबत मुख बोले ।
छत्रीश रागनी छत्य, दशे दिशामां ते डोले ॥
बोलाव्युं बोले नीच घेर, ऊंच अमीरने वश करे ।
शामळ कहे समस्या शोभती, धारक रूडा मन धरे ॥

९० नीरखी नानी नार, कांई ऊजळी कांई काळी ।
कपटी कूड कलंक, पंडमां पोढी पाळी ॥
पग लांबा बे बाहु, बंध बांधी छे बेडी ।
अनमी नर अहंकार, टेक राखंती टेढी ॥
ते भामनी भोंयरूं भोगवे, भूपतिनी पासे भजे ।
दुश्मन तेने देखी डरे, शामळ कहे शोभा सजे ॥

९१ शीश विनानी नार, मुख मोटुं सुख माणे ।
भोरिंगनो जे भक्ष, जमी ते झाझुं जाणे ॥
पलक न राखे पेट, वळी ऊठे वळी बेसे ।

पातळुं थईने पेट, तेह पृथ्वीमां पेसे ॥
वांका कठणने वश करे, बळतांने बाळे बहु ।
समज्या केडे तो सहेल छे, शामळ कहे शोधो सहु ॥

९२ नौतम नीरखी नार, जुलमवाळी झळकंती ।
नहि हाथ नहि पग, लाड झाझे लळकंती ॥
मंदिरमां मालंत, ओपती ओढो पहेरी ।
नासे थई निर्माल्य, वाद करतो जे वेरी ॥
छे नारी जात निर्बळ नहीं, काळी करूप काया थकी ।
शामळ कहे शाणा समजशो, कहुं डाह्या तेने नकी ॥

९३ आव्यो सोदागर अेक, माल लाखेणो लाव्यो ।
गरथ कमावा काज, भलो सौ जनने भाव्यो ॥
हय हाथी सुखपाल, लक्षत्रां लाखे लेखे ।
जेने जेनुं काम, दृष्टि अे दुनियां देखे ॥
पूछी ते ज घडी ने ते दिवस, रह्यो न पैसे रोकडो ।
हूंडी पत्री तो होय शी, दीसे न गांठे दोकडो ॥

९४ नहीं पुरूष छे नार, निहाळी जोतां नामे ।
चंद्रबिंब आकार, नथी ते ठामे ठामे ॥
राजद्वार रहंत, अधर अवनीथी बांधी ।
ज्योतिष विद्या जाण, समय देखीने सांधी ॥
ते मार खाय महोकमपणे, बूम पाडी बोले बहू ।
नानां मोटां नरनारीओ, शामळ कहे सुणे सहु ॥

९५　अेक नारी निर्माण, प्रमाणिक जने प्रमाणी ।
　　बीस पुत्र बळवंत, विविध शुं कहुं वखाणी ॥
　　तेने सुत चच्चार, सुता बे बे वळी तेनी ।
　　पुत्रीनो परिवार, जगतमां शोभा जेनी ॥
चंचल सुत तो चच्चार छे, तेह सवाया शेर छे ।
कवि शामळ कहे शोधी जुओ, महिमा मोटो मेर छे ॥

९६　पुरुष अेक वयवृध्द, खरी तेने खट नारी ।
　　तेने बे बे तनुज, तनुजने सुंदर सारी ॥
　　अेक श्वेत अेक शाम　पुत्र पछी तेना झाझा ।
　　पंदर पंदर प्रमाण, तेह वळी कहीअे ताजा ॥
जे नाम मात्रानो नाश छे, क्रोड शास्त्र कहे छे कथी ।
पण शामळ अे परिवारनो, नाश कोई काळ नथी ॥

९७　पुरूष अेक पवित्र, पराक्रमी दीठो पोढो ।
　　चंचळ चारू चाल, जाण जशवंतो जोडो ॥
　　राज मारगे रोज, मोज झाझेरी माणे ।
　　जर विद्यानी जोस, चही चोखूटे चाले ॥
नर अेक नारी बे नीरखीअे, अधर उपाडीने लीअे ।
छे नाम अेक बे नारनुं, कहे शामळ कारण कीअे ॥

९८　व्यंडळ मळी दश वीश, नपुंसक टोळुं कीधुं ।
　　सोयक नानी नार, बंधने बांधी लीधुं ॥
　　नवराव्युं धरी नेह, रूदेमां राखी रमाडयुं ।
　　परमेश्वरथी प्रथम, जुगतथी तेने जमाडयुं ॥
तेनुं जूठुं सौ कोई जमे, गुण तेनां पण सौ गणे ।
शामळ कहे अे समस्या शोधशो, घटमां जे ब्राह्मण भणे ॥

९९ नारी छे नवरंग, नहि मा—बापनी सृष्टि ।
नहीं बीज वावेत्र, नहीं निपजावे वृष्टि ।
नहीं अवनी आकाश, नहीं कोई तेनूं जोडुं ।
छे मुख नासा नेण, पुंछ वण परठ्युं पोडुं ॥
ते नारी नारीअे नथी जणी, स्वरूप उजळे साचळी ।
परखो तो पहेरो पाघडी, नहीं तो पहेरो काचळी ॥

१०० अतिशय मोटुं मुख, बेय पासाथी सरखुं ।
अेक ज सींग अनूप, विना पाणी ते परखुं ॥
लक्ष हजारो लोक, सौ रहे तेने शरणे ।
निर्मळ साथे नेह, चाल चाले वण चरणे ॥
समस्या छे सागर जेवडी, अकलवंत कहे आवडयुं ।
शामळ कवि छे शीखवुं, नक्की कहो जो नावडयुं ॥

१०१ नहि नर के नहि नार, नपुंसक सरखुं नामे ।
देश देश प्रवेश, घणा गुण गामे गामे ॥
ज्योतिष विद्याजाण, बात बनवानी बूझे ।
खट् शास्त्रो भणनार, तेने पण तेथी सूझे ॥
अजवाळुं अेथी अवनिमां, जे भविष्य जाहेर करे ।
आवरदा ओछो अेहनो, वर्ष जीवी बळती मरे ॥

१०२ गोळ पुरूष गुणवंत, दीठों में गामे गामे ।
दशशिर मळतुं नाम, नहीं रावण अे ठामे ॥
अे थाअे असवार, धरे वाहन शोभाते ।

चतुर चूकवे न्याय, पूछे जो मानव जाते ॥
त्या कोईनुं मों राखे नहि, लांच कोईनी नव लीओ ।
शामळ कहे ते सतवादीओ, देखे तेवुं कही दीओ ॥

१०३ खट पुरूषे अेक नार, नार त्रणे नर जाणुं ।
सोळ नरे नर होय, पराक्रमी ते परमाणुं ॥
बे पुरूषें अेक पुरूष, भाग द्वादशनें नामे ।
करी वायदो कंथ, गया गुणवंता गामे ॥
वषता तो वीशक वही गया, वस्यां तहां के वाटमां ।
शामळ कहे छे ते सुंदरी अति दीठी उचाटमां ॥

१०४ खट पग तो छे खरा, भमर तो नहि ते भाई ।
अेक वांसो बे शीश, कहुं शी तेनी कमाई ॥
वींधी बन्ने गम नाक, नाथ घाली घणी मोटी ।
जुओ करमना जोग, चोटी वांसा वच मोटी ॥
ताजुं कहे छे सौ तेहने, छे जूनुं जो जोखमां ।
शामळ कवि कहे सदावसे, शाहुकार घेर शोखमां ॥

१०५ अंतरिक्ष नार अनूप, तेह डोलावी डोले ।
महोकम खाये मार, बहु बकवा करी बोले ॥
मुख विण मोटूं शीश, जनोई कंठे घाले ।
बांधेली बलवंती, मोज मंदिरमां मा'ले ॥
ते हस्त प्रहरे जेहने, ते शोभावे सर्वने ।
शामळ कहे अे समस्या कहो, के मूको मन गर्वने ॥

१०६ मस्तक मोटुं होय, मुख तेनुं नव दीठुं।
अन्न नीर नव खाय, वदे अमृतथी मिठुं ॥
पोळां पग ने पेट, प्रीतथी पंच प्रमाणें।
राजद्वार रहंत, कदी मोटा परमाणे
सारंग नाम शोभित छे, वरसे सारंग वाणीअे।
समजे समस्या शामळतणी, ते अशवंता जाणीअे ॥

१०७ बसे हाथनी बाळ, कहुंशी तेनी करणी।
पांच हाथनो पुरूष, प्रीतथी तेने परणी ॥
कामनी वश करी कंथ, बळ करी बांधी लीधो।
त्यारे पाम्यो मान, कबूल सौ लोके कीधो ॥
नरनारी बीजां ते भोगवे, लंपट कोईअे नव कहे।
कवि शामळ भट साचुं कहे, रूचि सौ कोने नित्य रहे ॥

१०८ अेक नार खट चरण, पांखवाळी रस राचे।
जात जोरावर जाण, वदनथी अमृत सांचे ॥
उत्तम अधम अहार, ऊंचे नीचे जई पेसे।
दिवसे ते देखंत, निशा अंधी थई बेसे ॥
कोई अेनी आभडछेटने, गणें नहि भमतां भवन।
समज्या केडे तो सहेल छे, कहो नार अे ते कवण ॥

१०९ नही बहु बळवंत, रहे पोळी पुर प्रीते।
करे अहार, अपहार. नहि ते रूडी रीते ॥
पूंठण आंख ने कान, बहु जोरावर बोले।

शत्रु केरूं साल, देखी तेने दूर डोले ।।
ते राजद्वार रोखे रहे, अजित कहावे आपमां ।
शूरा पण कायर थायछे, ते नारीना तापमां ।।

११० नपुंसक सरखुं नाम, महिपने मंदिर महाले ।
नर नारी बे जोड, चडी वाहनने चाले ।।
शाह सूबा सुलतान, मान पामे ते महिमा ।
त्रिविधि पाडे त्रास, शूर सामद ने सामा ।।
छानु राख्युं ते नव रहे, बोलाव्युं बोले ते बारणे ।
शामळ कहे समजे सुलक्षणा, कवण अर्थ अे कारणे ।।

१११ वृक्ष उपरे वास, मान पदवी छे मोटी ।
जटा बिराजे शीश, चारू ते उपर चोटी ।।
त्रण नेत्रो तनमांही, नहीं शिवजीनो संगे ।
अमृत सरखुं नीर, नहीं गुणवंती गंगे ।।
ते जगन जागमां जश लीओ, ओछव मंगळमां अती ।
छे नरम हाड काया कठण, शामळ कहे शोधो सती ।।

११२ नर अेक नवरंग, दीसे चारे दरवाजा ।
वरण चारनो वास, जगत जश महिमा झाझा ।।
मंदिर छजुं महान. पडे पादर त्रण पासा ।
करे राज बे वीर, क्षत्रिवटथी ते खासा ।।
सुंदर साहेली सोळ छे, रमत रमे ते शुं नित्ये ।
ते कवण नारीने नगरशुं, चातुर जन चेतो चित्ते ।।

११३ अग्नि तणी बहु आंच, एक मरखे शिर माणी ।
बीजे हिमे हाड, गाळ्यां वरवाने राणी ॥
त्रीजे करवत लीध, कपावी कष्टे काया ।
त्रण पाम्यां अेक नारी, मानवी उपर माया ॥
छे त्रण नाम ते नारीनां, नपूंसक नर ने मेरी ओ ।
कवि शामळ भट साचुं कहे, लक्ष्मीवंतनी लहेरीओ ॥

११४ तीखु तीखुं तरकडुं, जेने हाथ हाथ जेवडां पान ।
आ उखाणुं जे नहि कहे, तेना अवळा कान ॥

११५ पुरूष अेकने पग नहीं, नहि माथुं नहि हाथ ।
स्थिर रहे पण आपणे, ज्यां जईअे त्यां साथ ॥

११६ काळो घोडो काबरो, नगरी जो तो जाय ।
सवा लाख रुपिया आपे, तो पण तेनुं मूल्य न थाय ।।

११७ मुखमांथी रचना रचे, नहि करोळियो जात ।
अेनुं अेठुं खाय सौ, नहि माखी नी न्यात ॥

११८ चतुर नर चित्तथी धरे, दूरथी मिळवे देह ।
विजो गीनो संजोग करावे, पाठवजो वहाला तेह ॥

– उत्तर –

उज्वळ मुलक, श्याम वर्ण, जळशुं राखे वेर ।
कामिनी अे कागळ कह्यो, प्रीछ्यो में सारी पेर ॥

११९ मुख मंडल पुरूषो तणुं, दुश्मन न गणे जेह ।
नार बडे नर जाणिये, अम आगळ कहो अेह ॥

१२० उनाळे शीयाळे नीपजे, चोमासे जड जाय ।
नही थउने डाळ पांखडी, ते वर्ण अढारे खाय ॥

१२१ नानो सरखो बेटी, दीठी बावन वीर ।
ज्यारे चढावे कमठी, ताकी मारे तीर ॥

१२२ जुवती जाते उजळी, मुख नासा ने नेण ।
अन्न उदक निद्रा नहि, वदे न वदने वेण ॥

१२३ कादवमां जे घर करे, जळमां पेसी नाय ।
मारे मस्तक मरे नहि, पण आख फुटे जीव जाय ॥

१२४ वड जेवां, पांदडां, शेरडी जेवा सोटा।
मोगरा जेवा फुल, अने आंबा जेवा गोटा ॥

१२५ आवत जावत कर तो पोकारा ।
मूरख नहि पण दंतज सारा ॥
बकराणीं माफक बडबड चावे ।
ओ नर पंडीत कोण बतावे ॥

१२६ पुरुष पिछानो अेक, पेट तो मोटु शोभे ।
मुख नानुं निज तणुं, विद्वजन पासे शोभे ॥
नारी नपली अेक, पुरुष ने ते बहु वहाली ।
करे हमेश प्रवेश, पेटमां चतुरा चाली ॥
अे नर नारिनी महेरथी, लीला-लहेर आवी वसो ।
मूरख मनमां मुंझाई मरे, शाणा सहेजे समज शे ॥

१२७ अक्षर त्रण ओपतां, नाम जोता मां नारी ।
साकरथी अति गळी, जगतने लागे प्यारी ॥
पहिलो त्रीजो मळी, दरजीनुं साधन देखो ।
बीजो त्रीजो मळी, त्रिगुण मानो गुण पेखो ॥
पहिलो बीजो मळी थाय विष, समस्या जोता सहेल छे।
पंडित जन तो झट पारखे, मूरख करे विचार ॥

१२८ भुवन अक्षरनु नाम, नपुंसक जाति ते छे ।
अति घणुं गुणवान, सौ लोको इच्छे छे ॥
छेल्ला दस्कत दाब, उपसर्ग पासरो थाशे ।
पहेलो अक्षर वांचो नहि, तो मृत्यु समे चित थाय छे ।
भुवन अक्षर वांचो अनुक्रमें, जळ भरवानुं थाय छे ।

१२९ भुवन अक्षरनुं नाम, वळी कैतामा तारी ॥
छेल्लो दस्कत काढ, घरूं शिव शोभा सारी ॥

पेलो अक्षर दाब, भाग त्रीशो दिन थाऊं
बीजो वरुकत काढ, मह्रिषी सुता रुवाउं ।।
भुवन अक्षर वांचो अनुक्रमें, शिरपर हे ते थी घरो ।
आ समस्या सार निश्चय जडे, अघर भाग बेशमो करी।।

१३० नानी सरखी नार, पांच मुख तेने माथे ।
उभी रहे अखंड, शोभती सज्जन साथे ।।
पातळी, लांबु पेट, जोतामां नारी ।
जई बेसे जे जगो, करे त्यां प्रकाश भारी ।।
ते तेल पीओ हरनीश मुखे, वहार जीभ कबडे वडी ।
समस्या जे समजे सहजमां, प्रगट पामशे पाघडी ।।

१३१ कहुं छुं ने कही संभळावुं, नथी फारफेर ।
अेक चीज अेवी मोंघी, के लाख रूपिये शेर ।।

परिशिष्ट १

(संस्कृत विभाग)

१ बात क्या है ? आश्चर्य क्या है ? मार्ग क्या है ? प्रसन्न कौन होता है ? मेरे इन चार प्रश्नोंका उत्तर देकर जल पीजिए ? उत्तर:- भूमिका में देखिये ।

२ मुख कृष्ण है परन्तु वह बिल्ली नहीं । दो जीभें हैं, परन्तु वह सर्प नहीं । पांच पति हैं, परन्तु वह द्रौपदी नहीं । उ. लेखनी ।

३ पैर नहीं, परन्तु दूरगामी है । साक्षर है, परन्तु पण्डित नहीं । मुख नहीं, परन्तु स्पष्टवक्ता है । क्या है ? उ. लेखपत्र (संदेशपत्र)।

४ वनमें उत्पन्न हुई । वनमें छोड़ी गई । वनमें ही सदैव रहती है। मूल्य देकर भोग्या है, परन्तु वेश्या नहीं । क्या है ? उ. नौका अथवा नागवल्ली ।

५ गायों का पति (गोपाल) है, परन्तु गोपाल (कृष्ण) नहीं । तप्त त्रिशूलचिन्हित है, परन्तु शंकर नहीं । तप्त चक्र का चिन्ह है, परन्तु विष्णु नहीं । क्या है ? उ. वृषभ (सांड)

६ वह कौन वीर है जो अस्थि मांस से हीन है और वनमें रहता हैं तथा तलवारका कार्य करके वनमें चला जाता है ? उ. कुलालदारक

७ रवि (मन्थनदण्ड) से उत्पन्न होने वाला, चन्द्र के समान कान्ति सम्पन्न, तापहारी, जगत्प्रिय, बन-संगसे बढ़ने वाला कौन है ? उ. तक्र।

८ तरुणीके कण्ठ से आलिङ्गित, नितम्बस्थलमें आश्रित रहकर गुरुओं के निकटमें भी बार २ शब्द कौन करता है । उत्तरः- कलश ।

९ वे कौन हैं जो पाण्डुवर्ण हैं, पीन हैं, कठिन हैं, गोलाकार हैं, मनोहर हैं. और वृद्धों द्वारा भी स्पृहा सहित हाथोंसे खींचे जाते हैं? पक्वविल्व फल अथवा कुचयुगल ।

१० एक आंख है, परन्तु वह कौआ नहीं, बिल खोजती है, परन्तु वह सर्प नहीं, घटती बढ़ती हैं पर समुद्र नहीं, चन्द्रमा भी नहीं ? सूचिका (सुई) ।

११ पुंध्वज ।

१२ सारिका.

१३ पर्वत के अग्रभागपर रथारुढ़ जिसका सारथि भूमिपर ठहरता है और पृथ्वी जिससे चक्र के समान घूमती हैं, उसकी मैं कुलबालिका हूं । किसकी ? उत्तरः– कुम्भकार (कुम्हार) की ।

१४ कुलाल–चक्रदण्ड.

१५ पूर्वमें 'अ' हैं, अन्तमें 'क' है, 'श' बीजमें है क्या है ? उ. अशोक ।

१६ दन्तहीन, शिलाभक्षी, निर्जीव, बहुभाषी, गुण (धागा) से समृद्ध होनेपर भी दूसरों के पैरोंसे चलता है। क्या है ? उ. उपानत् (जूता)

१७ जिसके आदिमें न, अन्तमें न, तथा मध्यमें य है और जो आपका भी है, हमारा भी है वह क्या है ? उ. नयन।

१८ आम्र।

१९ वह क्या है जो निद्रा हरण करने वाला है, परन्तु चोर नहीं, रक्त पीने वाला है, पर राक्षस नही, बिलमें रहने वाला है, परन्तु सर्प नहीं, निशाचारी है, पर भूत-पिशाच नहीं, छिपनेमें चतुर है, पर सिद्धपुरुष नहीं, वायु भी नहीं, तीक्ष्ण मुखवाला है, परन्तु बाण नहीं,? उ. मत्कुण (खट्मल)

२० मत्कुण,।

२१ वृषभ।

२२ दुग्ध, गंगा, मधु, रेशमी वस्त्र, पीपल।

२३ वह क्या है जो अर्द्ध चन्द्र के साथ है, पुल्लिग नाम वाला है, चार अक्षर वाला है, ककार आदिमें है और लकार अन्त में है ? उ. करताल वाद्यविशेष अथवा करवाल (कृपण)।

२४ चार मुख हैं, पर ब्रह्मा नहीं, बैलोंपर आरुढ़ है परन्तु शंकर नहीं, निर्जीवी है, निराहारी है और सदैव धान्य भक्षण करने वाला है। क्या है ? उ. हल।

२५ यवस (तृण) ।

२६ श्याम वर्ण, वर्तुलाकार, पुल्लिग नाम, चार अक्षर, शकार आदिमें एवं मकार अन्तमें जिसके हो वह क्या है ? उ शालिग्राम ।

२७ अनेक छिद्र (बिल) हैं, 'व' आदिमें है, 'क' अन्तमें है, ऋषि संज्ञा वाला है, विष्णु द्वारा सदा आराध्य है । क्या है ? उ. वाल्मी कि।

२८ शस्त्री ।

२९ छोटिका या चुटकी ।

३० युधिष्ठर किसका पुत्र था ? गंगा कैसी बहती है ? हंसकी शोभा क्या है ? इन सभी प्रश्नोंके उत्तर पद्यके चतुर्थ पाद से मिल जाते हैं। युधिष्ठर धर्म का पुत्र है । गंगा वेग पूर्वक बहती है । और हंसकी शोभा गति है ।

३१ कृष्ण ने किसे मारा ? कंसको । शीतल जलवाहिनी गंगा कहाँ है ? काशीमें । स्त्री के पोषण करने में लवलीन कौन रहता ? खेतमें काम करने वाले शीत किस बलवानको बाधा नहीं देती ? कम्बलवान् को ।

३२ रावण ने राम को कैसा देखा ? काल । पशुपति को कौनसा वाहन प्रिय है? नंदी । पुण्यात्मा फल कहां पाते है? नाके-स्वर्गमें । जारोंपर शासन काने वाला कौन है ? राजा ।

३३ पाण्डु-पत्नी कौन है ? कुन्ती । गृह भूषण क्या है ? पुत्र । रामका शत्रु कौन है ? रावण । अगस्त ऋषिका जन्म किससे हुआ? कुम्भ (घड़ा) से । सूर्यपुत्र कौन है ? कर्ण ।

३४ भोजनके अन्तमें क्या पीना चाहिए ? तक्र।जयन्त किसका पुत्र है ? विष्णुका। विष्णुपद कैसा है ? दुर्लभ।

३५ महिलाओंकी अलकों की शोभा कौन बढ़ाता है ? सिन्दूरबिन्दु। विधि के अनुसार किसे वह अच्छा नहीं लगता ? विधवाको। महादेव के किस अंगमें दहन हुआ था ? ललाटमें।

३६ आकाशमें कौन विचरता है ? वि-पक्षी।रम्या कौन है ? रमा-लक्ष्मी। जपने योग्य क्या है ? ऋक्। भूषण क्या है ? कटक। वन्दनीय कौन है ? पिता। लंका कैसी है ? वीरमर्कटों-बन्दरों से कम्पित।

३७ सूर्य का सार क्या होता है ? कान्ति (भा)। कविका सार क्या होता है ? वाणी (गी)। युद्धका सार क्या है ? रथी(योद्धा)। कृषिका भय क्या है ? ईति-अनावृष्टि। भ्रमर क्या चाहते हैं ? रस। दुर्जनोंसे भय किसे होता है ? आश्रितोंको। और विष्णुपद किसे प्राप्त होता है ? गंगाके तीर का आश्रय लेने वालोंको।

३८ लघुजन्तु कहाँ रहते हैं ? तिल, तुष आदिसे निर्मित घोंसले में। वमनका कारण क्या है ? मक्षिका (मक्खी)। लम्बकण्ठ किस पशुको कहते हैं ? ऊँट को। महिलाओंमें प्रसवकालका दुःख कौन जानता है ? प्रसूता।

३९ वीर युद्ध रुपी अग्निमें अपने शरीर को त्यागकर कहाँ जाते हैं ? स्वर्गमें। अपने किनारोंको कौन काटती है ? नदी। विकल्पा-र्थक कौन शब्द है ? वा। भगवान् नृसिंह ने करपत्र के समान नखोंसे किसे विदीर्ण किया था ? शत्रुके उरस्थलको। दिति की प्रसूति

कैसी होती है ? स्वर्गको कंपन करने वाली । अग्नि का शमन कैसे होता है ? जलसे । राजा द्वारा पालनीया क्या है ? नगरी (पू:)। वन्दनीय कौन है ? विष्णु । त्रिभुवनके पापको कौन धोता है ? गंगा नदी ।

४० काम पीडित युवती किसकी प्रार्थना-चाह-करती है ? पुरुष की । कमल कहाँ शोभित होता है ? अलकोंमें । आयु कैसे व्यतीत होती है ? शीघ्रता पूर्वक । अनादर कहाँ होता है ? क्षुद्र या निर्धन में (रङ्के.) । कमल किससे शोभित होता है ? भ्रमरसे । जिसकी अस्थियाँ बाहर दिखती हों उसका क्या नाम है ? नारिकेल ।

४१ मरु भूमिमें दुष्प्राप्य क्या होता है ? क-जल । कमलमें किसका आवास है ? ब्रह्माका । चामुण्ड किनसे सन्तुष्ट होता है ? मुण्ड मालासे । शत्रु कहाँ से भ्रष्ट होते हैं ? पृथ्वी से ।

४२ सूर्य उदयाचलके किस भागमें उदित होता है ? शिखर के अग्रभागमें । किसकी गति रमणीय होती हैं ? घोडे की । आकाशमें कान्ति कैसी रहती है ? रमणीय (आकाश में नक्षत्रों की शोभा रमणीय होती है) । गणक क्या करता है ? नक्षत्रोंकी गणना करता है । यष्टि कौन पकडता है ? अंधा । प्राणी कब जाग्रित रहते हैं ? दिनमें । प्राणी उत्पन्न कहाँ नहीं होते ? वन्ध्या स्त्रीमें । सर्वाधिक प्रिय कौन होता है ? पुत्र ।

४३ विवाह में सौभाग्यवती स्त्रियाँ क्या लगाती हैं ? हल्दी । मान किसमें नहीं होता ? दरिद्रोंमें । वर्षाकालमें गर्वोन्नत कौन रहती हैं ? नदियाँ । रामसे कौन कम्पित हुई ? रावण की लक्ष्मी ।

४४ कस्तूरी किससे उत्पन्न होती है ? मृगसे । हाथियों को कौन मारता है ? सिंह । युद्धमें कायर क्या करते हैं ? भागते हैं ।

४५ संसार में परस्त्री को कौन चाहता हैं ? जार । पैरोंसे कौन अगम्य है ? नदी । दशन्में धातु क्या है ? दंश् । अहर्निश मनुष्य किसकी प्रार्थना करते हैं ? लक्ष्मीकी ।

४६ मुरारि-विष्णु कहाँ सोते हैं ? जलमें । कौओंका निवास कहाँ होता है ? शवपर । निषेध वाचक शब्द क्या है ? न । ("केश-वेन" को उल्टाकर (नवेशके) उत्तर देखिये) । स्त्रियों का राग कहाँ होता है ? नवीन वस्तु में । सफेद वर्ण कहाँ होता है ? शक जातीय पुरुषोंमें । शौरि संबोधन किसे है । केशवको । चन्द्रमा का सम्बोधन क्या है ? इन् । ब्रह्माका सम्बोधन क्या है ? क । महादेवका सम्बोधन क्या है ? ईश । पक्षीका सम्बोधन क्या है ? वे । लोभी कैसा बोलता है ? न न । कुरुकुलका हनन किसने किया ? केशवने ।

४७ पुरुषका सम्बोधन क्या है ? नर । हाथी की शोभा क्या है ? मद । अग्निका शत्रु कौन है ? जल । नरकासुर को किसने मारा ? विष्णु ने । रोचक क्या है ? क्रीड़ाओंका विलास । वर्षाकाल में क्या नहीं होता ? दावानल । हरि द्वारा नखाग्रों से क्या भेदा गया ? हिरण्यकशिपुका वक्षस्थल । मार्ग को फैलाकर वृक्षों को कौन गिराता है ? नर्मदा नदीका पूर ।

४८ विष्णु की स्त्री कौन है ? मा-लक्ष्मी । अन्तिम तिथी कौन होती है ? अमावस्या । सेवकों द्वारा कौन सेवित नहीं होता ? अभागी । त्रिभुवन को कौन मोहित करता है ? मदन (कामदेव)।

४९ कविने पृथ्वीका सम्बोधन किस रीतिसे किया ? संसार को किसने मोहित किया ? यश कौन प्राप्त करता है ? उत्तरः- को, इना (कामदेव ने) , कवि ।

५० हे सरोवर ! तुम्हारे समान किसका आभ्यन्तर अत्यन्त शिशिर (ठंडा) है ? तुम्हारे समान काव्य रुपी अमृत के रसपान में कौन मग्न है ? उत्तरः- सरसः--रसिक जन ।

५१ वीर के क्रोधित हो जानेपर शत्रुओं के हृदयपर सोनेवाली कौन होती है ? मेघ दूर हो जानेपर आकाश में कौन शोभित होता है ? उत्तरः- आरा (कृपाण), तारा--(नक्षत्र) ।

५२ भ्रम रहित कमल को विकसित करने के लिए कौन प्रयत्न करता है ? पृथ्वी पर लोगों द्वारा कैसा ज्योतिषिक पूजा जाता है ? उत्तरः- भ्रमरों का हित चाहने वाला (भ्रमरहितः), भ्रम-रहित ।

५३ अत्यन्त सुन्दर कौन पर्वत गंगा की उत्पत्ति करने वाला है ? सेवकों द्वारा कौन सेवित किया जाता है ? उत्तरः- प्रभव-हिमालय, धन सम्पन्न व्यक्ति ।

५४ यह उदित चन्द्रमा किस तरह का प्रतीत होता है ? नील आदिक धर्मका स्पष्ट ज्ञान किसे होता है ? उत्तरः- वनिता मुख जैसा , नेत्रवान् को ।

५५ गैरिक, मनःशिल आदि धातु-पदार्थ किस स्थलके बिना उत्पन्न नहीं होते ? जो पुरुष स्थानसे चला नहीं उसका वर्णन कैसे किया जावेगा ? उत्तरः- नगतः – पर्वत विना, न गतः – नहीं गया ।

५६ सुन्दरी का कौन भाग किसका उपहास करता है? उत्तर- सुन्दरी का अधर पल्लवका, चरण हंसका, और दांत कुन्द-कोरकों का उपहास करते हैं।

५७ सन्त, लोभी, महर्षि संघ, ब्राह्मण, कृषक, और माननीय पुरुष किस किसकी इच्छा करते हैं? उत्तरः- माघवदाघयानम्—सन्त मानकी, लोभी धनकी, ऋषि वनकी, ब्राह्मण दानकी, कृषक मेघकी, और माननीय पुरुष यानकी इच्छा करते हैं। परन्तु कोई भी व्यक्ति माघ व-वैसाख माह में तप्त मार्ग पर चलने की इच्छा नहीं करता।

५८ मछलियाँ कहाँ रहती हैं? विकल्प वाचक पद क्या है? सूर्य क्या करता है? विद्युल्लता को दूर करने वाला और पथिकाङ्ग-नाओंको उद्वेजित करने वाला कौन है? उत्तर:- वारिवाह्—जलमें, वा, दिवस (अहन्), मेघ।

५९ "प्रभूगत" यह शब्द प्रचुर अर्थ वाला कैसे है? बृहस्पति के मतमें प्रवेश करने वाला पुरुष किसकी गणना में आता है? उत्तर:- नास्ति वर्गमध्य:-कवर्गीय ग को निकाल देने पर अवशिष्ट शब्द (प्रभूत) प्रचुर अर्थ वाचक है। और बृहस्पति मतानुयायी की गणना नास्तिक वर्ग में की जाती है।

६० महादेव द्वारा कौन दग्ध हुआ? कर्ण को मारने वाला कौन है? नदी के किनारे को कौन विघटित करता है? परस्त्रियों में रत कौन रहता है? युद्धमें कौन तैयार होता है? पयोधरोंका आभूषण क्या है? बुरी संगतिसे महान् लोगों का क्या होता है?

उत्तर:- मानपूजापहार:- मार (कामदेव), र (अर्जुन), पूर (बाढ़) आर, पर (शत्रु), हार, सम्मान-मान की हानि।

६१ पिताकी आज्ञासे कौन वन गया? कामी कण्ठस्थलसे आलिंगन कर क्या करता है? जटायु गीध को छिन्न-भिन्न किसने किया? राक्षस कुल की काल-रात्रि कौन थी? चन्द्र-प्रकाश से द्वेष कौन करता है? उत्तर:- राम, चुम्बन, रावण, सीता, वियोगातुर।

६२ उन्मत्त हाथी कैसा होता है? कृष्ण पैदल किसके पास गये? शब्द कहाँ उत्पन्न होता है? किसके होनेपर युवतियाँ व्याकुल होती हैं? दही बेचने कोई गोपिका गोकुलसे चली। बीचमें ही कृष्ण ने उसे छेड़ लिया। तो गोपि ने कृष्ण को क्या कहा? उत्तर.- दानी, अनो, खे (आकाशमें), भय, दानी-अनोखे भये।

६३ ब्राह्मण प्रातःकाल क्या करते हैं? राजा के माननीय व्यक्ति कौन रहते हैं? रात्रिमें साहस पूर्वक विचरण करने वाली कौन होती है? आकाश कैसा होता है? नारियल फल में मधु कहाँ रहता है? पिपासा-प्यास को शान्त करने वाला कौन है? उत्तर:- सन्ध्या, वन्दन, नारी, नक्षत्र की गतिवाला, अन्तः (भीतर), जल।

६४ तृष्णा उत्पन्न करने वाला कौन होता है? रथका चरण कैसा होता है? शब्द कौन करता है? समुद्र कटोरा जैसा किसका है? अपस्मारी कौन है? सर्प में क्या है? कलह को शान्त करने वाला कौन है? आर्य का सम्बोधन क्या है? सुन्दरी में क्या होता है? चन्द्र कैसा होता है? पर्वत कैसा होता है? अग्नि का बीज क्या है? राम की बुद्धि को हरने वाला कौन है? उत्तर:- हेमसारङ्गलीला-सुवर्ण (हेम), सार (आरोंसहित),

गली (कण्ठवाला), इला (पृथ्वी), लाली,, गर (विष), साम (शान्ति), हे, हेला (लीला), मली (कलंकी), साग, रं, स्वर्णमृग।

६५ तारा, विष्णु, उरण, कान्ति, पक्षी, हृदय, रमा, और कार्तिकेय इनके सम्बोधन क्या हैं ? लुग्, विकरण करने वाली तीन धातुयें कौन हैं ? तत्त्व-ज्ञान कहाँ होता है ? चार तद्धित एक एक वर्ण निकालनेपर किस शब्दमें होते हैं ? भास्वरे शब्द में से स् र् अ निकालने से कौन सा पाणिनि सूत्र निकलता है ? उत्तरः- भास्वरे-भ, अ, अवे, भा, वे, भा व, इ, भावे। भावा और इ ये तीन धातुयें लग्विकरणक हैं। भावसे तत्वज्ञान होता है। भाव-भव, अव, व, व्। भास्वरे शब्द में से स् र् तथा अ निकालनेपर पाणिनि-सूत्र बचता है।

६६ मनुष्य काशी में क्या चाहता है ? युद्धमें राजाओंका हितकारी कौन है ? समस्त देवताओं का वन्दनीय कौन है ? इन प्रश्नोंका एक ही उत्तर दिजिए। उत्तरः- मृत्युञ्जय।

६७ किसी पुरुषका किसी राजाके प्रति स्तुतिवचन हैं:- विप-क्षी उनका राजा-गरुड, उसका राजा विष्णु, विष्णुका पुत्र मदन, उसका शत्रु शिव, उसका चार अक्षरों वाला जो नाम है-मृत्युञ्जय, उसका आधा भाग (मृत्यु)। वह आपके शत्रुओंके मन्दिरमें है और आधा भाग (जय) आपके मन्दिर में है।

६८ आकाश में कौन सुशोभित होता है ? रावण किसके द्वारा मारा गया ? समुद्र में कौन डूबता है ? तरुणीका विलासगमन कैसा होता है ? राजा का प्रिय कौन होता है ? राजाका वाहन क्या है ? जलमें मनोहर क्या है ? रामकी सीता का हरण करने वाला कौन है ? मेरे प्रश्नों के जो उत्तर हों उनका मध्यमाक्षरपद

तुम्हारा आशीषवचन होना चाहिए। उत्तर:- ग्रहेश (सूर्य), राम द्वारा, मैनाक, मन्थर, सचिव, तुरंग, राजीव, रावण, हे मे नाथ ! चिरंजीव !

६९ विद्वज्जन कैसे वचन बोलते हैं ? रोगी कौन है ? नास्तिक कौन है ? लोग किस चन्द्रमा को नमस्कार करते हैं ? इन चारों प्रश्नोंका उत्तर देनेवाला पाणिनि का सूत्र कौनसा है ? उत्तर:- "अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्" अर्थवत्, अधातु, अप्रत्यय, प्रातिपदिक ।

७० संसार का त्राता कौन है ? देखने की क्षमता किसमें नहीं होती ? देवोंके विद्वेषी कौन हैं ? दाता का करभूषण क्या है ? विना उदरका कौन है ? नेंत्रो को ढांकने वाला कौन है ? आकाशमें क्रीडा कौन करते हैं ? सुन्दरियों की चारुता (सौन्दर्य) का भूषण क्या है ? इन प्रश्नोंमें क्रमशः प्रत्येक दो प्रश्नोंका एक उत्तर दो । उत्तर:- अन्ध, (अन्न, दृग्विहीन), दानवारि (दानवोंका शत्रू दान का जल), तम,(राहु, अन्धकार), वयः (पक्षी, तारुण्य)।

७१ मुनि कहां तपस्या करते हैं ? विष्णुकी पत्नी कौन है ? कवियों का प्रिय छन्द कौन है ? इन तीनों प्रश्नों का उत्तर है:- शिखरणी । शिखरणी (पर्वत) पर मुनियोंका निवास रहता है। विष्णुकी पत्नी ई-लक्ष्मी है। और कवियों का प्रिय वृत्त शिखरणी है।

७२ विष्णु के वक्षस्थलपर कौन आलिंगन करती है ? आ-लक्ष्मी। कमलका मकरन्द पान कौन करती है ? अलिनी-भ्रमरी । पर्वतोंकी संख्या बराबर लघुवर्ण वाला, समुद्रकी संख्या बराबर गुरूवर्ण वाले अक्षरों का वृत्त कौनसा है ? मालिनी ।

७३ नीच व्यक्तियों में यावनी वाणी कैसी बोली जाती है ? मनुष्य को शुभोत्पादक क्या है ? शंभुका आवरण क्या है ? रोगी क्या

सेवन करते हैं ? इन प्रश्नों के उत्तर क्रमशः हैं– अवेलाभोजिनम्– अवे, लाभ, मृगचर्म, (अजिनम्) अवेला भोजन-अकालभोजन ।

७४ नीच व्यक्ति निरन्तर प्रशंसा किसकी करता है ? पृथ्वीपर उत्तम क्या है ? रुच् आदि धातुओंका कर्तरि अर्थ में कौन पद होता है ? उत्तरः- आत्मने पद–आत्मने (स्वयंकी), पद, आत्मनेपद ।

७५ दुर्जन किसकी प्रशंसा नहीं करता ? सुप् और तिङ् को क्या कहते हैं ? नव ल आदेशों के तिङ् प्रत्यय को क्या कहते हैं ? उत्तर क्रमशः – परस्मै (दूसरे व्यक्ति की) पद, परस्मैपद ।

७६ अखिल जगत को कौन नष्ट करता है? विष्णुने किसे उठाया। नीच व्यक्ति अहंकारी कहाँ होता है ? इन प्रश्नों का क्रमशः उत्तर है–पाणिनिसूत्र में–यमोगघने–यम, अग (पर्वत), घन।

७७ कर्ण के शत्रु (अर्जुन) का पिता कौन है ? हिमालयकी पुत्री किसकी प्रिया है? तुक् का आगम किसे होता है ? दूसरे की चेष्टायें कौन जानता है ? कामिनियोंका काम कहाँ उत्पन्न होता है ? किसकी भार्या विदेह (जनक) से उत्पन्न हुई ?पीड़ाकारक कौन है ? मंगलवार के दिन निन्दनीय कौन है? इन प्रश्नों के उत्तरों में से मध्य-माक्षर पद सर्वार्थ सम्पत्ति कारक होंगे। इन प्रश्नों के क्रमशः उत्तर हैं– वासव, हरस्य (महादेवकी), ह्रस्वस्य. (ह्रस्वस्य पिति किति तुक् इससूत्र से), मतिमान्, नमसि, रामस्य, कुस्तुतिः, अभ्यङ्गः, । इन उत्तरों के मध्यमाक्षर लेनेपर 'सरस्वती नमस्तुभ्यं" निकलता है ।

७८ स्त्रियों का लावण्य कहाँ है ? आकाश में कौन विचरण करते हैं ? किनके शब्द उच्च होते हैं ? दम्पती क्रीडा कहाँ करते

हैं ? रामने पौरुष कहाँ व्यक्त किया ? इन प्रश्नों का उत्तर है– वपुषि (शरीरमें), अण्डज, भेरीणां (भेरी वाद्यों का), एकान्ते (एकान्त स्थानमें), रक्षस्सु (राक्षसोंमें) । इन उत्तरों के मध्यमाक्षर मिलानेपर पुण्डरीकाक्ष निकलता है ।

७९ मेघोंका याचक कौन है ? युवतियां कैसे पति को चाहती हैं? लज्जा किसके द्वारा निवारित होती है ? यावनी भाषामें निकटवर्ती दासको क्या कहते हैं ? 'भाषा दर्शय' इसे मराठी भाषामें किस रीतिसे कहेंगे ? आदि एवं अन्त अक्षरों के योग और लोप करते हुए उत्तर दीजिए ? उत्तरः- सारंग (चातक), तरुण अथवा सबल, खादिम, सिपाही पाहुरे ।

८० जो शुद्ध कुलमें उत्पन्न हुई, जिसने पिताका बध किया, बध करने के बाद भी जो पुनः शुद्ध हो गई । यह स्त्री वनिता है और पिता भी । विश्व की निरन्तर जो जीवन स्वरूपा है । पितामह के साथ सम्बन्धकर जिस कन्या ने पिता को उत्पन्न किया, अखिल विश्व द्वारा अभिवन्दित उस कन्या का नाम क्या है ? उत्तरः– जलवृष्टि ।

८१ तीन वर्ण का जो शब्द है, उसमें आदिका अक्षर न होनेपर अवशिष्ट भाग समुद्रमें दिखाई नहीं देता, मध्यमाक्षर हटानेपर वह पृथ्वीपर वर्णनीय है । अन्तिम अक्षर निकालने पर वह शरीर को हिला-डुला सकता है। तीन वर्ण वाला वह शब्द स्वर्णका नामार्थक है । बताइये वह कौन सा शब्द हैं । उत्तरः- करज–रज (धूलि), कज (कमल), कर (हाथ), करज (सोना) ।

८२ कैसे व्यक्ति प्राय: किसी कार्य में मोहित नहीं होते ? 'नाघ' यह शब्द नौका वाचक कैसे होगा ? उत्तर:- सावधाना:—अव्यग्रचित्तवान् सौ+अधा+न+स=औकार सहित तथा धा सहित न=नौ और स का हुआ विसर्ग=नौ: (नौका)।

८३ पूजा वाचक में कौन पद कहा गया है ? विना स्तनके वक्ष-स्थल कौन धारण करता है ? बलराम का आयुध किस नामसे प्रसिद्ध रहा ? उत्तर क्रमश:- सुनासीर:-सु, नर, सीर (हल)।

८४ उन्मत्त धनिक के मोहका कारण क्या है ? विष्णुकी पत्नी कौन है? प्रश्न:- वितर्क में कौनसा पद उपयोगी होता है ? ओष्ठका आभूषण क्या है ? उत्तर- रामानुराग—रा (धन), मा (लक्ष्मी), नु, राग (लिपस्टिक)।

८५ पक्षि, श्रेष्ठ, सखी, बभ्रू (नकुलकी पत्नी) और मद्य अर्थ वाचक शब्द कौन हैं ? ज्येष्ठ मासमें धरातल कैसा होता है ? उत्तर:- विवरालीनकुलीका:—वि, वर, अली (सखी), नकुली, इरा (मदिरा)। जलकी कमी के कारण ज्येष्ठ मास में धरातलपर छिद्र हो जाते हैं और उनमें जलचर जीव (कुलीका:) प्रविष्ठ हो जाते हैं।

८६ पृथ्वी, प्रलम्बासुरको मारने वाला, व्रीहि (धान्य), मनुष्य और युद्ध के अर्थ वाचक शब्द कौन हैं ? दिनके अन्तिम भागमें कौन विकसित होता है ? उत्तर:- कुवलयवनराजय:—कु, वल, यव, नर, आजि। कमलपंक्ति दिनान्तमें विकसित होती है।

८७ सज्जनों का विशेष आनन्ददायक कौन है ? कमलों को कौन विकसित करता है ? अन्धकार को कौन दूर करता है ? उत्तरः- मित्रोदय–मित्र, सूर्योदय।

८८ अटवी कैसी होती है ? सुरतोत्सवोत्पादक प्रिय की कान्ता कैसी होती है ? उत्तरः-मदनवती–मदन वृक्षोंसे परिपूर्ण, और कामवती

८९ स्वेच्छया विहार करने वाली मछलियां को हितकारी क्या है ? दूसरों के गुणोंसे किस प्रकार के व्यक्तिको प्रसन्नता होती है ? उत्तरः- विमत्सरः–तालाब (सरः) जो पक्षियों से परिपूर्ण है (विमत्), निराहंकारी।

९० अगस्त ने समुद्रका कितना जलपान किया ? आपने युद्धमें योद्धाओं को क्या किया ? उत्तरः- सकलं कं–समस्त जल, कलङ्क सहित।

९१ 'लक्ष्मण' ऐसा उत्तर जहाँ हो वहाँ प्रश्न कैसा रहेगा ? हाथियों के समूहके लिए ग्रीष्म ऋतुमें वन कैसा होना चाहिए ? का सारसहिता–सारस पक्षीका हित करने वाला कौन है ? इसका उत्तर "लक्ष्मण" होगा। हाथियोंके लिए वनाली कासार–सरोवर सहित होनी चाहिए।

९२ कामुक व्यक्ति किसकी संगति से नीच होते हैं ? दासी की संगति से, सभी व्यक्ति किसमें आनन्द लेते हैं ? उत्सवमें ? यदि याचक आता है तो पैसाका क्या करोगे ? दान देगें।

९३ समस्त कार्योंमें दुःखी कौन है ? मृषार्थ वाचक शब्द कौन है ? जो जिससे विरत (अप्रसन्न) होगा वह उसका क्या करेगा ? उत्तरः- प्रयास्यति–प्रयास (आयास) अर्थात् परिश्रम करने वाला, अति, नाश करेगा।

९४ भ्रमर समूह के लिए किस तरहका हाथी प्रिय होता है ? यदि आवश्यक हुआ तो धनका क्या किया जाय? उत्तरः- समदास्य-मदसे परिपूर्ण मुख वाला हाथी हो, दान दिया जाय।

९५ काल और देश के अनुसार काम करने पर मनुष्य क्या पाता है ? भोजनसे अवशिष्ट अन्न का क्या करना चाहिए ? उत्तरः-अहा-स्यताम्–उपहसित नहीं होता, त्याग करे।

९६ शशि और सूर्य हिमालय पर्वत पर कैसे लगते हैं ? पूज्य कौन है ? प्रमाणों द्वारा प्रभाकर-संमत कौन पदार्थ नहीं है। उत्तरः- अभावः·अभो-कान्ति रहित, अभाव पदार्थ प्रमाणशास्त्रमें सप्तम माना गया है पर प्रभाकर उसे नहीं मानते।

९७ प्रवीण कौन है? जीर्ण वस्त्र किससे हीन होते हैं? किरणों वाला कौन है ? बाह्य पदार्थका निराकरण करने वाले योगाचारी कैसे हैं ? उत्तरः- विज्ञानवादिनः–विज्ञ, नवीन वस्त्रसे, सूर्य, विज्ञानवादी।

९८ अव्यय जैसा क्या है ? किसका लोप होता है ? समाहार क्या है ? उत्तरः- 'स्वरादिनिपातमव्ययम्' के अनुसार स्वर अव्यय है।, इत् संज्ञाका लोप होता हैं, "समाहारः स्वरितः" के अनुसार उदात्त, अनुदात्त और स्वरित समाहार हैं।

९९ सर्पका शत्रु कौन है ? शोक व्यक्त करने के लिए कौनसा पद रखा जाता है ? निर्धन को क्या अभीष्ट है ? भिक्षुओं द्वारा क्या सेवन किया जाता है ? उत्तर:- बीहारा:—गरुड़ और मयूर, हा, रा: (द्रव्य), तीर्थभूमि ।

१०० मेघ क्या छोड़ते हैं ? विष्णु की पत्नी कैसी है ? पूजामें कौन पद नियोजित है ? अग्नि कैसी है ? कृष्णने किसे मारा ? उत्तर:- कंसासुर—कं—जल, लक्ष्मी, सु, र:—अग्नि, कंसासुर ।

१०१ साधु कैसा होता है ? गोविन्द (कृष्ण) ने जो पैर मारा तो नन्दके घर में क्या हुआ ? उत्तर:- दीनों की रक्षा करने वाला, क्षीरनदी प्रवाहित हुई ।

१०२ लेखक स्याही भरने के लिए किस पात्रको पसंद करते हैं ? घोर अन्धकार में व्यभिचारणी स्त्री किसके साथ निर्भय होकर विचरण करती है? उत्तर:- नालिकेरजा—नारियल का ऊपरी भाग, जारपति के साथ ।

१०३ अनन्त स्वरूप में कौन प्रसिद्ध है ? पद हीन को क्या कहते हैं ? मेघ दूर होने पर मनुष्यों के नेत्रों को आनन्द दायक कौन होते हैं ? उत्तर:- खजना:—खं—आकाश, खञ्ज, खञ्जन (पक्षि विशेष)।

१०४ नीच पुरुष में अहंकार पैदा करने वाला कौन है ? आदि के दो वर्ण छोड़कर "वनवासी कौन है" इस प्रश्न का उत्तर देने वाला शब्द कौन है ? उत्तर:- शबरा:—रा: (पैसा), शबरा: (भील)।

१०५ भाई के साथ जाकर जंगलमें राक्षसों को किसने मारा ? मध्यवर्णों को छोड़कर "रावण कैसा है" इस अर्थ का आभास किस पद से होगा ? उत्तर:- राक्षसोत्तम:—राम, राक्षसोत्तम (रावण)।

१०६ वियोगिनी के कपोल भागको पाण्डु वर्ण करने वाला कल कौन है ? अन्त वर्ण छोड़कर "सीता किससे प्रफुल्लित हुई" इस अर्थ का सूचक शब्द क्या है ? लवलीलया—लवली (लता विशेष), लव नामक पुत्र की क्रीडासे।

१०७ विष्णु की पत्नी कौन है ? आदि अन्त वर्ण छोड़कर "समान" अर्थ सूचक शब्द क्या है ? उत्तर:- समान—मा—लक्ष्मी, समान।

१०८ समस्त कलायें कौन पुरुष जानता है ? मध्यवर्ण-द्वय को छोड़कर 'सुरालय' सूचक शब्द कौन है ? उत्तर:- नागरिक—नगर-निवासी या चतुर, नाक-स्वर्ग।

१०९ स्वर्ग जाने के लिए यजमान को क्या करना चाहिए ? आदि और अन्त का वर्ण छोड़कर गोत्व नियोजित करने वाला कौन शब्द है ? उत्तरः- यागविधि—यज्ञ, गवि।

११० विष्णु कहाँ सोते हैं ? मनुष्यों की कौनसी वृत्ति अधम होती है ? बालक पिता को किस सम्बोधनसे पुकारता है ? मन किसे देखकर रमता है ? उत्तर:- शेष नारायण पर, सेवा, पिता, पररूप।

१११ राजाका सम्बोधन क्या है ? सुग्रीव की प्रिया कौन है ? निर्धन क्या चाहते हैं ? संतप्त क्या करते हैं ? उत्तर:- देवताराधनम् देव, तारा, धन, देवताओं की आराधना।

११२ यमुना नदी में क्या है ? जारिणी जारों को क्या कहती है ? तैलगू और संस्कृत भाषामें एक ही शब्द द्वारा इन दोनों प्रश्नों का उत्तर दीजिये। उत्तर:- कालिय:—कालि, य।

११३ खेतमें मार्ग कैसा होता है ? विष्णु कहाँ सोते हैं ? स्त्रीका चित्त कहाँ लगता है ? स्वामी चेटिका को क्या कहता है ? उत्तरः- वक्र (टेढ़ा), शेष नारायण पर, वक्त्रशोभजार।

११४ 'चादय' जिसका उत्तर हो ऐसा प्रश्न क्या है ? नौका का वाहनोपाय क्या है ? उत्तरः- 'के निपाताः' यह प्रश्न होगा जिसका उत्तर "चादयो निपाताः" होगा, दूसरे प्रश्नका उत्तर है—अरित्राणि ।

११५ अनुत्तम (नीच) वचन कैसे होते हैं ? उच्च ध्वनि कैसी होती है ? शत्रुका क्या किया जाता है ? उत्तरः- अवमंताराः— अवमम्—नीच, तार, अपमान।

११६ मकरन्दका पान कौन करता है ? जनक राजाकी पुत्री ने किस पुत्रको उत्पन्न किया था ? पका धान को किसान क्या करता है ? उत्तर—अलीलवम्—अली—भ्रमर, लव, अलीलवम्—छेदन करते—भुसाको धानसे पृथक् करता है।

११७ पुरुषका सम्बोधन क्या है ? वज्र से पक्ष किसके काटे गये ? अधिक भयवाले देशों—स्थानोंको जाने के इच्छुक व्यक्ति को कैसे रोका जाता है ? उत्तर—मानवनगा :— मानव, नगाः (पर्वत), त्वं मा गमनं कुरु— तुम गमन मत करो।

११८ समस्त जगत का नाश कौन करता है ? विष्णुने किसे धारण किया ? नीच व्यक्ति कहाँ अहंकारी होता है ? इन प्रश्नोंके उत्तरोंके लिए पाणिनि सूत्र बताइये। उत्तर—यमोऽगं घने —यम, अगं (पर्वतको), घने (घनमें)।

११९ विशेष्यके अनुसार क्या होता है ? किस संख्या के बोलने से संख्या पूरक होती है ? नीच व्यक्ति किस कारणसे अभिमानी

होता है ? इन प्रश्नों का उत्तर देनेमें चन्द्र व्याकरण का सूत्र बताइये। उत्तर—विशेषणनेकार्थेन—विशेषण, एक, अर्थेन (धनसे)।

१२० यमराज के पहुंचने पर घरमें क्या होता है ? नदी पार करने के लिए मनुष्योंको क्या साधन (सहारा) है? मणिमाला ने कण्ठ से पूछा-हे कण्ठ! तेरी शोभा किसके बिना नहीं होती ? उत्तर- हार बिना वः। हा-हाहाकार से परिपूर्ण, नावः (नौका), हार बिना (हे हार ! तेरे बिना मेरी शोभा नहीं होती)।

१२१ कैसा वन भयहीन होता है ? इस प्रश्नके उत्तरमें जो पद आये, उसमें "नेत्रसे क्या निकलता है" इस प्रश्नका उत्तर किस पदसे होगा ? विष्णु कहाँ सोते हैं ? पृथ्वीपर पूजनीय कौन है ? उत्तर—अहिस्रमहिमा— अहिस्र - हिंसक जन्तुहीन, अस्रम् (आंसु), अहिमः (शेषनागपर), अः (विष्णु)।

१२२ विष्णु ने किसे धारण किया ? कैसा मेघ सफेद होता है ? दुःखी किस रीतिसे पूछा जाता है ? शोकातुर व्यक्ति क्या करता है ? श्लोक-रचना करनेपर भी उदार कवि को सन्तोष क्यों नहीं होता ? उत्तर—अगमकं अकरोत्—अग (पर्वत), अकं (जल बिना), हे अक् !, रोदिति (रोता है), अगमकं अकरोत् (श्लोक अगम्य होनेसे)।

१२३ लक्ष्मीधरका सम्बोधन क्या होगा ? शत्रुओंके होने पर भी कैसा राजा दुर्निवार है ? स्वयं में पितृत्व कैसे आरोपित किया जा सकता है ? उ. समजनितनयः—सम, जनित नयनीति-न्याय करने वाला। समजनि तनयः—पुत्र उत्पन्न करने से।

१२४ मरुस्थल कैसा होता है ? द्वार कैसे भूषित होता है ? शत्रुओंके लिए सुभट कौन है ? उत्तर:- अवारितोरणे–अवारि जलहीन, तोरणे–तोरण होनेपर; अवारितो रणे-संग्राममेंन रोका जाने वाला (वीर). ।

१२५ घरमें प्रिय से रहित कौन पत्नी किस पुत्र के द्वारा आनन्दित की गई। पक्षियों का बन्धन किस पुरुषकी अभिलाषाका परिणाम रहा ? उत्तर:- शकुन्तलाभरतेन-महर्षि कण्वकी पुत्री शकुन्तला और भरत नामका उसका पुत्र, पक्षियोंके (शकुन्तानां) लाममें संलग्न व्याध। (शकुन्त–लाभरतेन)।

१२६ हृदयहारी कूजन कैसा होता है ? भूपति के यश –विस्तारमें कौन मित्र उपयोगी होता है ? जंगलमें भयाकुल कौन होता है ? चन्द्र कैसा होता है ? उत्तर:- कलंकविरहिता–कल (मधुरशब्द), कवि, अहितः (शत्रु), कलंक (मृगरूपचिन्ह) रहित।

१२७ नरक भूमि कैसी है ? श्मशान कैसा रहता है ? उत्तर:- नरकपाल–रचिता। यमराज द्वारा उपस्कृत या मनुष्यों के कपालों द्वारा निर्मित, श्मशानभूमि (मनुष्यों की मुण्डमालाओं से परिपूर्ण) नर–कपाल–रचिता।

१२८ मदोन्मत्त हाथी केसर वृक्षों के नीचे कैसा होता है ? अर्जुन शिवके साथ हुए युद्धमें कैसे थे ? उत्तर:– दानबकुलभ्रमर–हित। मद के द्वारा वृक्षवर्ती भ्रमरोंका हितकारी (दान–बकुल–भ्रमर–हितः), शिव से युद्ध हो रहा है इस प्रकारके ज्ञानसे रहित (दानव–कुल–भ्रमरहितः)।

१२९ शत्रु-विजयी का सम्बोधन क्या है ? मृत्युका भय किसे नहीं होता ? रात्रिका अंधेरा दूर करने वाला कौन है ? उत्तर:- विधुतारातेज: । हे विधुताराते, विधुत (कम्पित) किया है शत्रुओंको जिसने; अज :- ब्रह्मा; चन्द्र और तारागणोंका तेज (विधु-तारा-तेज:) ।

१३० गरुड ने किस शत्रुको मारा ? कैसा नगर मनुष्यों द्वारा पूजित-सम्मानित होता है ? कठिन (कठोर) क्या होता है ? कैसा समुद्र भयंकर होता है ? उत्तर:- अहिमकरमय:- अहि(सर्प), अकर-राजदण्ड या राजकर रहित, अय:-लौह, अहि-मकर-मय:-सर्प, मकर मत्स्य आदि ।

१३१ कैसा राजा विजय प्राप्त करने वाला होता है ? विरहणी जानकी वनमें रहती हुई भी प्रसन्न कैसे रही ? उत्तर:- कुशल-वर्धित:-कुशलता पूर्वक वृद्धि करने वाला कुश और लव के वर्धन के कारण ।

१३२ स्वर्गसे कुसुमको गिरते हुए देखकर भोगी व्यक्ति किसकी आकांक्षा करते हैं ? सुशिक्षित वराङ्गना रमणीय पुरुष को पाकर क्या करती है ? उत्तर:- सुरतरवे-सुरतरु-कल्पवृक्ष की आकांक्षा करते हैं, सुरतक्रीडा सम्बन्धी बात करती है (सुरत-रवे) ।

१३३ कवि कहां, कैसे होते हैं ? चारों ओर कठिन क्या होता है ? तुम्हारे शत्रुओंकी पत्नियों का संताप हृदयको छोड़कर कहाँ रहता है ? उत्तर:- गिरिसारमुखी:-कवियों के मुखमें वाणी रहती है ? चारों ओर कठिन पर्वत रहता है ? शत्रुओं की पत्नियों का हृदय मूलके कारण थालीमें रहता है (उखा:) ।

१३४ कमलों का समूह कहां रहता है ? अन्धकारको दूर करने वाला कौन है ? पवनका भक्षण करने वाले सर्प के शत्रु मयूर के शब्दमें रुचि लेने वाले मनुष्य को क्या कहते हैं ? जगतमें प्रिय कौन होता है ? उत्तरः- केकिरणोत्कराः –कें–पानीमें, किरणोंका समूह, केकिरणोत्क, राः –धन ।

१३५ मलयाचलकी स्थलभूमि किसके विना नहीं होती ? पयोधर किसके नहीं होते? लक्ष्मी का स्वामी कौन है ? आपके शत्रुओंमें नित्य क्या है ? बलने मथन द्वारा किसको कैसा विपत्ति-ग्रस्त किया ? उत्तरः- विपन्नगानाम्–विगतपन्नगां–सर्प विना, नर–पुरुषके, विष्णु (अम्), संकट, (विपत्) पर्वतों के पंखे तोड़े ।

१३६ निशीथ–मध्यरात्रि को क्या कहा जाता है ? मेघ समूह किसे शान्त करता है ? संसार को तालाबसे उत्पन्न होने वाला कौन प्रसन्न करता है ? उत्तरः- अरविन्दवान्–सूर्य विना (अरवि), दावानल, (दवान्) कमल ।

१३७ तुम्हारा शत्रु भय से क्या छोड़ता है ? बाद में वह भयभीत व्यक्ति क्या नहीं पाता ? राजगुणों से पृथ्वीको आप कैसा करेंगे ? उत्तरः- समरंजयंम्–समरं-संग्राम, जयं–विजय, समरंजयं–रागयुक्त ।

१३८ केश ने केशव और केशवने केश से पूछा–संसारमें चपल (चंचल) कौन है ? और यान जैसा पृथ्वी पर कौन चलता है ? उत्तरः- केशव नौका–हे केश ! वनौकः –बन्दर, हे केशव ! नौका ।

१३९ पार जाने वाले के लिए जल किस तरह दुस्तर होता है ? इस लोकमें कौन महिला पूजनीय है ? तलवारका सम्बोधन क्या

है ? धुएं को देखकर मैं क्या करुंगा ? उत्तर:- अनुमातासे—अनु—नौका विना, माता, हे असे, अनुमातासे—अनुमान करेंगे ।

१४० प्रात:कालीन दीपशिखा कैसी रहती है ? ऊँटका सम्बोधन क्या है ? मृग कहाँ रहते हैं ? सूर्य के किस स्थानमें चले आनेपर लोग प्राय: विवाह नहीं करते ? उत्तर:- विभाकरभवनम्—विभा—क्षीण कान्ति वाली, हे करभ,! वन, विभाकरभवनं—सिंह राशिमें ।

१४१ युद्धमें कैसी सेना दुर्वार होती है ? वीर लक्ष्मी किसलिए चाहता है ? पृथ्वी का संबोधन क्या है ? आप योद्धाओंको युद्धमें क्या करेंगे ? उत्तर:- पराजयामहि—परा—उत्कृष्ट, आजये—संग्राम के लिए, हे महि, पराजयामहि—जीतेंगे ।

१४२ कृष्ण किसके साथ गमन करते हैं ? स्वल्प इच्छा करने वाला किसमें दृष्टि रखता है ? समीका शुभ करने वाले का सम्बोधन क्या है ? शोक संतप्त लोकको तुम क्या करोगे ? उत्तर:- विनोदयेयम्—विना—गरुण के साथ, उदयमें, अयं—भाग्य, विनोदयेयम्—मैं विनोद युक्त करुंगा ।

१४३ उत्तम राजाकी जनता कैसी होनी चाहिए? अन्धकारका कारण क्या है ? कमल समूह किसे प्रिय होते हैं ? सजाति बन्धु को कौन मारता है ? तुमने किसे जीता ? उत्तर:- विधुरविरहित: —विधुरेण-कष्टेन विरहित: —सुखी. विधुश्च रविश्च विधुरवी ताभ्यां रहित: विधुचन्द्र: —सूर्य और चन्द्र, अवि ऊर्णायु, अहित: —शत्रु ।

१४४ संग्राम में तुमने चमकाती तलवारसे किसे मारा ? नरकमें दु:ख दायक कौन हैं ? लोम (रोम) कहाँ नहीं रहते ? संसारमें

सबसे सूक्ष्म वस्तुयें कौन हैं ? उत्तरः- नरकरेणव: –नर और हाथी, नरककी रेणु (धूलि), नरकरे–मनुष्योंकी हथेलियोंमें, परमाणु ।

१४५ शत्रुको मारने वाली सेना कैसी होती है ? विष्णु के मनमें निरन्तर प्रसन्नता दायक कौन रहती है ? कैसी अभिमुख वस्तु तुच्छ प्रतीत होती है ? मृत्यु के समान अपमान किनमें होता है ? उत्तरः- अभिमानिषु–अभि भयरहित, मा–लक्ष्मी अनिषु–बाण बिना, अभिमानिषु–अभिमानी व्यक्तियोंमें ।

१४६ राजा शत्रुहीन किसे चाहता है? शूकर के रूपने किसका उद्धार किया ? कामकी उत्पत्ति किसके द्वारा हुई ? युवतीका मुख किससे सुशोभित होता है। उत्तरः- कुंकुमेन–कुं–पृथ्वी को ? कुं–पृथ्वीका, ऐन-विष्णु द्वारा, कुंकुमेन–कुङ्कुम से ।

१४७ चन्द्र के टुकड़े की उपमा सूकर के किस अंगसे दी जाती है ? इस प्रश्न के उत्तर में आये हुए शब्दके मध्यस्थ वर्णको निकालकर बताइये कि जिनेन्द्र क्या नहीं करता ? और जिनेन्द्र क्या करता है ? दंष्ट्राभम्–दंष्ट्रा (दाढ़) की कान्ति के साथ, दम्भं–कपट, भद्रं–कल्याण ।

१४८ बसन्त आनेपर कोयल वनको कैसे सुशोभित करती है ? इस प्रश्न के उत्तर में जो शब्द आये उसके बीचके दो शब्दों को निकालकर कौनसा शब्द तुम्हारे शत्रुओंको योग्य ठहरेगा ? प्रकाश वाली उत्तम तिथि कौन है ? उत्तर–कान्तगिरा–कान्तगिरा–मनोहर वाणी द्वारा, कारा–बन्दीगृह, राका–पूर्णमासी ।

१४९ पयोधर के बिना उरस्थल कौन धारण करता है ? पवन–पक्षी का सम्बोधन क्या है ? शहरमें निवास करने वाले व्यक्ति

को क्या कहते हैं ? गोप वधू के कुचोंकी उपमा किससे दी जाती है ? उत्तर–नागरंगम्–ना–पुरुष, हे नाग !, नागर, नागरङ्गम्–नारङ्गी ।

१५० बसन्त आनेपर वनमें कौन पुष्प विकसित होता है ? स्पष्ट अक्षर बोलने वाला पक्षी कौन है ? कमलसे उत्पन्न होने वाला कौन है ? उत्तर–किंशुकम्–किंशुक–पलाश, शुक–तोता, कं–ब्रह्मा ।

१५१ किसके उदय होनेपर पांसुला (व्यभिचारिणी) स्त्री नहीं जाती ? किसके होनेपर जलसे भय होता है ? किसके होने पर शत्रु भाग जाता है ? निम्न स्तर का सम्बोधन–वाचक शब्द कौन है ? उत्तर–हिमकरे–चन्द्रमा के उदित होनेपर, मकरे–मगर होनेपर, हाथमें आयुध होनेपर, रे !

१५२ तपस्वी वनमें किसकी इच्छा करते हैं ? उस प्रश्न के उत्तरमें कौन शब्द रखा जा सकता है जिसके प्रथम दो वर्ण निकालने से अवशिष्ट भाग सकारका सूचक हो । उत्तर–तपसे–तप, से (सकार).

१५३ 'अनन्तर' वाचक पद कौन है ? विजयी हनुमान कैसा है ? दूसरोंके गुणोंके पाने के लिए सज्जन क्या करें ? उत्तर–अनुसराम :– अनु सरामः– राम सहित अनुसरण करें ।

१५४ छोटे भाई लक्ष्मण को रामचन्द्रजी कैसे बोला करते थे ? मन आलसी कहाँ रहता है ?, इन्द्र पुत्र–बाली द्वारा तिरस्कृत सूर्य–पुत्र सुग्रीव राम द्वारा कैसा किया गया ? उत्तर–अनुजगृहे–अनुज, घरमें, अनुगृहीत ।

१५५ वर्षाकाल व्यतीत हो जानेपर मद सहित कौन हो जाता है?, सुन्दर क्या है ? श्रीकृष्ण भगवान् ने किसे धारण किया था ? कटु और तैल से मिश्रित गुड इक्कीस दिनोंमें किसे दूर कर देता है ? उत्तर– श्वासरोगम्–श्वा (कुत्ता), सर (तालाब), अग- पर्वत, श्वासरोग ।

१५६ वर्षामें क्या होता है ? कमल मधु हीन कैसे होता है ? पृथ्वी सहित शेषनाग को कौन धारण किये हुए है ? पार्वतीका संबोधन क्या है ? भस्म–लेप कौन किये है ? उत्तर–कालि– कापालिकमठ – कालिका (अन्धकारयुक्त), अपालि (भ्रमर रहित), कमठ–कच्छप, हे कालि, कापालिकमठ ।

१५७ भगवान् शंकर के हाथमें कङ्गा जैसा क्या है ? पयोधर बिना कौन है ? कैसा राजा शत्रु के आधीन हो जाता है ? उरग- पतिका सम्बोधन क्या है ? कैसा राजा विजयी होता है ? दुर्योधन कैसा नहीं था ? उत्तर–अहीनाक्षतनयः- सर्प, पुरुष, अन्यायी अथवा नीतिविहीन (अक्षतनया), हे अहीन्, अखण्ड न्यायवान् (अक्षतनया), अन्धेका पुत्र नहीं था (अहीनाक्षतनय) ।

१५८ समुद्रमग्न किसका उद्धार भगवान् हरि ने किया ? शुद्ध हृदय वालों का ज्ञान कैसा होता है ? अग्नि शिखाओंसे लपटे हुए वन का सम्बोधन क्या है ? वन को दहन कौन करता है ? भ्रमरों को मतवाला कौन बनाता है ? उत्तर–कुन्दमकरन्द- बिन्दवः –कुं–पृथ्वीका, दमकरउपशम, क्षमादि युक्त, हे दविन्, दावाग्नि, पुष्परस ।

१५९ वर्षाकाल समाप्त होनेपर कौनसा स्नान अच्छा रहता है ? मदोन्मत्त वेश्याओंकी विडम्बना कौन करता है ? रणमें दुर्वार वीर्यको क्या मिलता है ? सूर्य की किरणों से सुन्दर कौन दिखाई देता है ? उत्तर–सरोजराजयः–सर (तालाब), जरा (वृद्धावस्था), जय, कमलपंक्तियाँ ।

१६० कोई कवि किसी राजासे पूछता है–हे राजन् ! कल्याण वाचक पद क्या है ? सन्तोषकारी क्या है ? वृषभ पर आरोहण करने वाला, और भस्म धारण करने वाला कौन समस्त प्राणियोंका पालन करता है ? उत्तर–शंकर–श–कल्याण, कर, शंकर–महादेव।

१६१ अन्धकारको दूर करने वाला सूर्यका सम्बंधी कौन है ? पुण्य-कारिणी समुद्रकी चन्द्रलेखा कौन है ? शत्रुको नष्ट करने वाला राजा कैसा होता है ? महादेव के मस्तकपर मालती पुष्पमाला जैसा क्या है ? उत्तर–भागीरथी–भा (कान्ति), गी (वाणी), रथी, भागीरथी (गंगा) ।

१६२ वर्षाकालके व्यतीत हो जानेपर कौन स्नान सुभग होता है ? वसन्ततिलका छन्दमें कितने अक्षर होते हैं ? हे कृपण ! संक्रान्ति कालमें तुम अपनी सम्पत्ति का क्या उपयोग करोगे ? उत्तर–नदीयताम्-नदी, इयताम् (इतने ही अर्थात–चौदह), नहीं ।

१६३ वसन्तकाल में वृक्षोंमें क्या होता है ? वियोगियों का क्या क्षीण होता है ? सर्प कहाँ जाता है ? मधुपानसे मदोन्मत्त भ्रमर क्या करते हैं ? मृगगण कैसे वन को शीघ्र छोड़ देते हैं ? उत्तर–दवविकलम्–दल, बल, बिल, कल (अव्यक्त मधुर शब्द), दावाग्निसे व्याकुल ।

१६४ हे दुर्वारवीर्य ! तुम्हारे क्रोधित होने पर शत्रुके हृदय पर श्याम वर्ण और सजल कौनसी वस्तु होती है ? और प्रसन्न होने पर शत्रुकी कौनसी वस्तु आती है ? प्रथम प्रश्न का उत्तरात्मक शब्द ऐसा हो जिसका प्रथम वर्ण निकाल देने पर द्वितीय प्रश्न का उत्तर आ जाय ? उत्तर–सस्त्री कृपाण, स्त्री ।

१६५ युद्धमें कैसी सेना दुर्निवार रहती है ? मेघ रहित मध्य रात्रिमें आकाशमें कैसी शोभा होती है ? दैवयोगसे किसी योग्य अभिमान को पाकर दुर्जन अखिल जगत द्वारा प्रशंसनीय व्यक्ति को क्या करता है ? उत्तर:- अभिभवति–अभि (भयरहित), भवति (नक्षत्रों वाला), अभिभवति–दुःख देता है) ।

१६६ विष्णुका आलिङ्गन कौन करता है ? नन्दनवनमें कमलके मकरन्द का आनन्द कौन लेता है ? आठ लघुवर्ण और सात दीर्घ वर्ण वाला छन्द कौनसा है ? उत्तर:- मालिनी–मा (लक्ष्मी), आलिनी–भ्रमरसमूह, मालिनी ।

१६७ कैसी पृथ्वी रथोंके गमन करने योग्य होती है ? भोजनके अन्तमें कौनसा मीठा और आम्ल पेय पीना चाहिए ? जघन्य श्रेणी के व्यक्तिके आमंत्रण में कौनसा पद प्रयुक्त होता है ? कुमतियोंके विवाद को शान्त करनेमें कौन समर्थ होता है ? उत्तर:- समादधिरे–सम, दधि, समाधान करने की क्षमता वाला ।

१६८ रणमें कौन सेना विजयी होती है ? ओष्ठका भूषण क्या है ? सर्प क्या धारण करता है ? पुष्प कैसा होता है ? हे वीर ! विशाल युद्ध में वैरियोंको तुमने क्या किया ? कमल–मुकुलमें मधु

पीने वाला भ्रमर कैसा शोभित होता है ? उत्तरः- परागरञ्जित-परा, (श्रेष्ठ), राग, केंचुली, रंजि (रंजनकरता है), जित. (जीतना), परागरञ्जित ।

१६९ वृक्षका सम्बोधन क्या है ? कलियुगमें दूसरोंका काम कौन नहीं करता ? सम्पूर्ण चन्द्रको कौन धारण करती है ? एक नेत्र-हीन व्यक्ति को क्या कहते हैं ? किस कारण से मनुष्य को असीम कष्ट उठाना पड़ता है ? उत्तरः- निरापकरण-निप (वृक्ष), परे (पराया व्यक्ति), राका (पूनमकी रात), काण (काना), निरा-पकरण (जनके अभावसे)

१७० से सुभट ! तुम्हारा सम्बोधन क्या हो सकता है ? प्रातः काल में जाग्रित पक्षियोंसे वन कैसा हो उठता है ? लोक किसमें प्रसन्न होता है ? तुम्हें विजय देने वाली कौन है ? ससारमें कौन सुख पाते हैं ? उत्तरः- विहारसेविना-वीर, रवी-कोलाहल से परिपूर्ण), हासे-हास्यविनोदमें, सेना, विहारसेविना-विहार सेवन करने वाला ।

१७१ मुखमें वे क्या धारण करते हैं ? प्राणियों को पीड़ादायक वे कौन हैं ? जिन महिलाओंका यौवन क्षीण हो जाता है वे कैसी होती हैं ? वराह भगवान् ने समुद्रके ऊपर किसे धारण किया ? उनकी स्तुति किसने की ? तुमने किसे मारा ? कैसे पर्वतसे भय होता है ? उत्तरः- विषमपादनिकुञ्जगताहिताः - विष, अपाद (सर्प), अनि (कामरहित), कुम् (पृथ्वी को) जगता-(लोकने), अहितः (शत्रु), विषमपादनिकुञ्जगता-हिता (जिस पर्वतों के कोतरोंमें सर्प छिपे रहते हैं) ।

१७२ हरि ने किसे धारण किया ? तुम्हारे शत्रुओंमें क्या है ? रोगी किस देवी और किस देवता को पूजता है ? धनवती नगरी कैसी होती है ? हरि ने किसका उद्धरण किया ? बलि आदि ने पृथ्वी को क्या किया ? परिषद् में तुमने किसको किससे जीता ? समुद्र कैसा है ? उत्तर:- कुम्भीरमीनमकरागमदुर्गवारि- कुम्- पृथ्वी को, भी-भय, अं (विष्णुको), ई (लक्ष्मी को)-इनं (सूर्य को), अकरा-करबिना, अगं-गोवर्धनपर्वत को, अदु:, गवा-वाणीसे- अरि-शत्रुको, कुम्भीरमीनमकरागमदुर्गवारि-मगर, मच्छ आदि के कारण समुद्र जल दुष्प्रवेश है।

१७३ पवित्र और अत्यन्त तृप्त करने वाला क्या है ? योद्धा का सम्बोधन क्या है ? पर्वत का सम्बोधन क्या है ? अजीर्ण का सम्बोधन क्या है ? हरि का सम्बोधन क्या है ? कामदेव के शत्रु शिवने संग्राम में किसे जीता ? मयूर-कुलका नृत्यकाल क्या है ? उत्तर:- पयोधरसमय: -पय (जल), योध (योद्धा), धर (पर्वत), रंस (अजीर्ण), सम (लक्ष्मी के साथ), मयने (मयासुरने) पयोधरसमय (वर्षाकाल)।

१७४ दुष्ट स्वामी का मोह क्या है ? वृहस्पतिका सम्बोधन क्या है ? इस कलियुगमें पृथ्वीपर विरल रुपसे कौन उत्पन्न होता है ? नया धनवान व्यक्ति कैसा होता है ? ब्राह्मण कैसा नहीं होता ? रेखा वाचक पद क्या है ? किस प्रकारका दुर्जन अत्यन्त दु:खो- त्पादक होता है ? विघ्नोंका अधिपति कौन है ? मनुष्यमें कामदेव के समान मूर्ति किसकी है ? उत्तर:- राजीव-सन्निभवदन: -रा (पैसा), जीव, सत् (सज्जन), इभवत्-हाथी जैसा मदोन्मत्त,

अन: (विष्णुको), राजी, वसन (समीप में रहने वाला), इभवदन (गणपति), राजीव–सन्निभवदन (विष्णु)।

१७५ विष्णुने वराहका अवतार धारण कर किसे समुद्रसे बाहर निकाला ? सौन्दर्यको नष्ट कौन करता है ? मधु राक्षस की स्त्रियोंको वैधव्यकी दीक्षा किसने दी ? विन्ध्याचल पर्वतपर साल-वृक्षके कोंपल खाने वाले और पम्पा–सरोवरमें निमज्जन करने वाले कौन हैं? उत्तर:- कुञ्जरा-कुम् (पृथ्वीको), जरा (वृद्धावस्था), कुञ्जरा–हाथी।

१७६ हरिने क्या किया ? कंजूस की बुद्धि धनमें कैसी होती है ? सर्पमें क्या होता है ? अगस्त्य ऋषिका पेट कैसा होता है ? जाने वाले की वधू कैसी होती है ? उच्च कोटिके लेखकोंको कैसा श्लोक अभीप्सित होता है ? कैसा आकाश निर्मल रहता है ? पृथ्वीका सम्बोधन क्या है ? रात्रिमें तालाब कैसा हो जाता है ? उत्तर :– कुमुदवनपराग–रंजितांम।विहितगमागम कोकमुग्धरेखम्– कुमुद–पृथ्वीको आनन्दित किया, अवनपरा, विष, जिताम्भ–यथेच्छानुसार जल पीने वाला, विहितगमा, गमक–सरस, सरल और व्यङ्ग्य वाला, अकमुक–मेघ बिना, पृथ्वी, खम्–आकाश, कुमुदवनादि–विकसित कमल–वन की परागसे रंजित और आवागमन करने वाले–चक्रवाक समुदायकी सुन्दर रेखाओंसे सहित।

१७७ मुण्डित व्यक्ति का सम्बोधन क्या है ? विष्णु का शयन स्थान क्या है ? मनुष्यों के सौन्दर्यको कौन नष्ट करता है ? वीर पुरुष कैसा होता है ? अत्यन्त गहन क्या है ? कपट न करने वाले को क्या कहते हैं ? जगत को धारी कौन है ? बृहस्पतिकी

पत्नी कैसी है ? उत्तम कवि कहाँ है ? अर्थ वाचक शब्द क्या है ? शत्रुकुल को आपने क्या किया ? दिनमें तालाब कैसा होता है ? उत्तर :- विकचवारिजराजिसमुद्भमाच्छलितभूरिपरागविराजितम्-विकच (केश बिना), वारि (जल), जरा (वृद्धावस्था), आजि समुद्-युद्धमें आनन्द लेने वाला, भव-संसार, अच्छलित-कुशल, भू-पृथ्वी, इपरा-कामासक्त, गजि-वाणीमें, राः-द्रव्य, जित, विकचवारिज राजीत्यादि-प्रफुल्लित कमलों की परागसे रञ्जित ।

१७८ सज्जन किसके लिए धन देता है ? संसार किसके द्वारा निर्मित है ? शंभुके गलेमें कौन शोभित होता है ? युवतियां वेणी में क्या लगाती हैं ? महादेव ने पैर से किसे ताड़ित किया ? राक्षसोंने किसका रक्षण किया ? बुद्धि पूर्वक विचारकर इनमें दो प्रश्नोंका एक उत्तर दीजिये । उत्तरः- साधवे-साधुको, ब्रह्मा द्वारा (वेधसा), कालिमा, मालिका, कालको, लंकाको ।

१७९ मेघसे क्या आती है ? भगवान् कृष्णकी पत्नी कौन है ? सभा कैसी होती है ? चन्द्र किसकी रक्षा करता है ? शरद ऋतु किसे विकसित-शोभित करती है ? धैर्य- हारी कौन है ? गणपति हाथ में क्या धारण किये हैं ? चञ्चल क्या है ? आरोह अवरोह करके इन प्रश्नोंका एक उत्तर दीजिये । उत्तरः- धारा, राधा, वन्द्या, द्यावम्, राका, कारा, पाशम्, शपा ।

१८० लक्ष्मी कहां स्थिर रहती है ? संसारमें दुःखी कौन है ? ईषदर्थ वाचक पद क्या है ? मार्ग में पथिक और दीन की धूप-आदिको कौन दूर करता है ? लक्ष्मीका सम्बोधन क्या है ? अन्धकार को नष्ट करने वाले दो कौन-कौन हैं ? साथ करने की

इच्छा वाला यवन जाते हुए पथिक से क्या कहता है ?
उत्तर:-ए (विष्णु),दीन, मन्द, संग, मे हेमा-लक्ष्मी, अहो-ज, दीनमंद।
संग मे हो !

१८१ पूज्य कौन है ? सुजनता को कौन पाता है ? पण्डित कहाँ ठहरते बैठते हैं ? चण्डिका देवी के साथ किसने दारुण युद्ध किया ? युवक क्या चाहते हैं ? और वे मनमें किसका ध्यान करते हैं ? इन प्रश्नोंका जो उत्तर आये उनके मध्यमाक्षरपदोंसे आशीर्वादात्मक पद बनना चाहिए। उत्तर:- प्रतेज (तेजस्वी), सुशील, प्राग्वंशमें, उदग्र, सुधान्य (उत्तम वस्त्र), चतुरा (स्त्रीका) ते शिवं दधातु।

१८२ पृथ्वी क्या सहन करती है ? स्वर्गमें कौन नृत्यकरता है ? महादेव ने प्राणापहरण करनेके लिए किसे नियुक्त किया ? रावणकी नगरीका क्या नाम है ? साधुपुरुष किसकी रक्षा करते हैं? पशुपति (शिव)का वाहन क्या है ? इन प्रश्नों का उत्तर अनुलोम प्रतिलोम विधि से दीजिये। उत्तर:- भारम् (बोझ), रंभा (अप्सरा), कालम्, लंका, दीनम्, नन्दी।

१८३ मरुदेवी माता से देवियों ने कुछ पहेलियाँ पूछीं। एक ने पूछा, हे माता, बताईये वह कौन पदार्थ है जो आपमें रक्त अर्थात् आसक्त है और आसक्त होने पर भी महाराज नाभिराजको अत्यंत प्रिय है, कामी भी नहीं है. नीच भी नहीं है, और कांतिसे सदा तेजस्वी रहता है। इसके उत्तरमें माताने कहा कि मेरा 'अधर' (नीचे का ओठ)ही है क्योंकि वह रक्त अर्थात लाल वर्णका है, महाराज नाभिराजको प्रिय है, कामी भी नहीं है, शरीर के उच्च भागपर रहनेके कारण नीच भी नही है और कांतिसे सदा तेजस्वी रहता है।

१८४ किसी दूसरी देवीने पूछा– हे पतली भौहोंवाली और सुंदर विलासोंसे युक्त माता, बताईये आपके शरीर के किस स्थानमें कैसी रेखा अच्छी समझी जाती है और हस्तिनीका दूसरा नाम क्या है ? दोनों प्रश्नोंका एक ही उत्तर दीजिये। माताने उत्तर दिया 'करेणुका'। भावार्थ–पहले प्रश्नका उत्तर है 'करे+अणुका' अर्थात् हाथमें पतली रेखा अच्छी समझी जाती है और दूसरे प्रश्नका उत्तर है 'करेणुका' अर्थात् हस्तिनीका दूसरा नाम करेणुका है।

१८५ किसी देवीने पूछा–हे मधुर–भाषिणी माता, बताओ, सीधे, ऊंचे और छायादार वृक्षोंसे भरे हुए स्थानको क्या कहते हैं ? और तुम्हारे शरीरमें सबसे सुंदर अंग कौनसा है ? दोनोंका एकही उत्तर दीजिये : माताने उत्तर दिया 'सालकानन' अर्थात सीधे ऊंचे और छायादार वृक्षोंसे व्याप्त स्थानको 'साल–कानन' (सागौन वृक्षोंका वन) कहते हैं और हमारे शरीरमें सबसे सुंदर अंग 'साल-कानन' (स+अलक+आनन) अर्थात् चूर्णकुन्तल (सुगन्धित चूर्ण लगानेके योग्य आगे के बालों) सहित मेरा मुख है।

१८६ किसी देवीने कहा–हे माता, हे सति आप आनन्द देनेवाली अपनी रूपसम्पत्तिको ग्लानि प्राप्त न कराइये और आहारसे प्रेम छोड़कर अनेक प्रकारका अमृत भोजन कीजिये (इस श्लोकमें 'नय' और 'अशान' ये दोनों क्रियाएँ गूढ़ है इसलिए इसे क्रियागुप्त कहते हैं)

१८७ हे माता। यह सिंह शीघ्र ही पहाड़की गुफाको छोड़कर उसकी चोटीपर चढ़ना चाहता है और इसलिए अपनी भयंकर सटाओं (गर्दनपर के बाल–अयाल) को हिला रहा है।

१८८ हे देवि, ! गर्भसे उत्पन्न होनेवाले पुत्रके द्वारा आपने ही इस जगतका संताप नष्ट किया है इसलिए आप एकही, जगत्को पवित्र करनेवाली हैं और आपही जगत्की माता हैं।

१८९ हे देवि, ! इस समय देवोंका उत्सव अधिक बढ रहा है इसलिए मैं दैत्योंके चक्रमें अर वर्ग अर्थात अरोंके समूहकी रचना बिलकुल बंद कर देती हूं। चक्रके बीचमें जो खडी लकड़ियां लगी रहती हैं उन्हें अर कहते है।

१९० कुछ आदमी कड़कती हुई धूपमें खडे हुए थे उनसे किसीने कहा, यह तुम्हारे सामने घनी छायावाला बडा भारी बड़का वृक्ष खड़ा है, ऐसा कहने पर भी उनमें से कोई भी वहां नहीं गया। हे माता, कहिये यह कैसा आश्चर्य है ? इसके उत्तरमें माताने कहा कि इस श्लोकमें जो 'वटवृक्षः' शब्द है उसकी सन्धि वटो+वृक्षः इस प्रकार तोड़ना चाहिये और उसका अर्थ ऐसा करना चाहिये कि 'रे लड़के ! तेरे सामने यह मेघके समान कांतिवाला (काला) बडा भारी रीछ (भालू) बैठा है' ऐसा कहनेपर कड़ी धूपमें भी उसके पास कोई मनुष्य नहीं गया तो क्या आश्चर्य है ?

१९१ हे माता संसारको आनद उत्पन्न करनेवाला, कर्मरूपी इंधनको जलानेवाला और तपाये हुये सुवर्ण के समान कांतिधारण करनेवाला तुम्हारा पुत्र उत्पन्न होगा।

१९२ हे माता, ! आपका वह पुत्र सदा जयवन्त रहे जो कि संसारको जीतनेवाला है, कामको पराजित करनेवाला है, सज्जनोंका आधार है, सर्वज्ञ है, तीर्थंकर है और कृतकृत्य है।

१९३ हे कल्याणि, ! हे पतिव्रते, आपका वह पुत्र सैकडों कल्याण दिखाकर ऐसे स्थानको (मोक्षको) प्राप्त करेगा जहांसे पुनरागमन नहीं होता। इसलिये आप सन्तोषको प्राप्त होओ।

१९४ हे सुन्दर दांतोवाली देवि ! देखो, ये देव इन्द्रों के साथ अपनी अपनी स्त्रियोंको साथ लिए हुए बडे उत्सुक होकर नन्दीश्वर द्वीप और पर्वतपर क्रीडा करनेके लिये आ रहे हैं।

१९५ हे माता, ये देवों के हाथी अपने मुखों से अत्यन्त सुशोभित प्रतीत होते हैं। इनके दोनों कपोल भाग और सूड़से मद झर रहा है और ये मेघोंकी घटाके समान इधर-उधर भ्रमण कर रहे हैं।

१९६ हे देवि, देवोंके नगरकी परिखा ऐसा जल धारण कर रही है जो कहीं तो लाल कमलोंकी परागसे लाल हो रहा है, कहीं कमलों से सहित है, कहीं उड़ती हुई जलकी छोटी छोटी बूंदोंसे शोभायमान है और कहीं जलमें विद्यमान रहनेवाले मगरमच्छ आदि जलतंतुओंसे भयंकर है।

१९७ हे माता, सिंह अपने ऊपर घात करनेवाली हाथियोंकी सेना-की उपेक्षा क्षणभर के लिये भी नहीं करता और हे देवि, शीत ऋतुमें कौनसी स्त्री क्या चाहती है? माताने उत्तर दिया कि समान जंघाओंवाली स्त्री शीत ऋतुमें पुत्र ही चाहती है।

१९८ हे माता, कोई स्त्री अपने पतिके साथ विरह होनेपर उसके समागमसे निराश होकर व्याकुल और मुछित होती हुई गद्गद स्वरसे कुछ भी खेद खिन्न हो रही है।

१९९ किसी देवीने पुछा कि हे माता, पिंजरेमें कौन रहता है? कठोर शब्द करनेवाला कौन है, जीवोंका आधार क्या है? और अक्षरच्युत होनेपरभी पढ़ने योग्य क्या है? इन प्रश्नोंके उत्तरमें माताने प्रश्नवाचक 'कः' शब्दके पहले एक एक अक्षर और लगाकर उत्तर दे दिया और इस प्रकार करने से श्लोकके प्रत्येक पादमें जो एक एक अक्षर कम रहता था उसकी भी पूर्ति कर दी जैसे देवीने पूछा था 'कः पंजर मध्यास्ते' अर्थात पिंजड़ेमें कौन रहता है?

माताने उत्तर दिया 'शुक:पंजर मध्यास्ते' अर्थात पिंजड़ेमें तोता रहता है। 'क: पुरुष निस्वन:' कठोर शब्द करनेवाला कौन है ? माताने उत्तर दिया 'काक: पुरुषनिस्वना' अर्थात कौवा कठोर शब्द बोलनेवाला है । 'क:प्रतिष्ठा जीवानाम्' अर्थात् जीवोंका आधार क्या है ? माताने उत्तर दिया 'लोक:प्रतिष्ठा जीवानाम्' अर्थात जीवोंका आधार लोक है । और 'क:पाठ्योऽक्षरच्युत:' अर्थात् अक्षरोंसे च्युत होने परभी पढ़ने योग्य क्या है ? माताने उत्तर दिया कि 'श्लोक:पाठ्योऽक्षरच्युत:' अर्थात अक्षर च्युत होने परभी श्लोक पढने योग्य है ।

२०० किसी देवीने पूछा कि हे माता, मधुर शब्द करनेवाला कौन है ? सिंहकी ग्रीवापर क्या होते हैं । उत्तम गन्ध कौन धारण करता है और यह जीव सर्वज्ञ किसके द्वारा होता है ? इन प्रश्नों-का उत्तर देते समय माताने प्रश्नके साथ ही दो दो अक्षर जोड़कर उत्तर दे दिया और ऐसा करनेसे श्लोकके प्रत्येक पादमें जो दो दो अक्षर कम थे उन्हें पूर्ण कर दिया । जैसे माताने उत्तर दिया—मधुर शब्द करने वाले केकी अर्थात मयूर होते हैं, सिंहकी ग्रीवा पर केश होते हैं, उत्तम गन्ध केतकीका पुष्प धारण करता है, और यह जीव केवलज्ञानके द्व रा सर्वज्ञ हो जाता है :

२०१ किसी देवीने फिर पूछा कि हे माता, मधुर आलाप करने वाला कौन है ? पुराना वृक्ष कौन है ? छोड़ देने योग्य राजा कौन है ? और विद्वानोंको प्रिय कौन है ? माताने पूर्व श्लोककी तरह यहां भी प्रश्नके साथ ही दो दो अक्षर जोड़कर उत्तर दिया और प्रत्येक पादके दो दो कम अक्षरोंको पूर्ण कर दिया । जैसे माताने उत्तर दिया—मधुर आलाप करने वाला मयूर है, कोटर

वाला वृक्ष पुराना वृक्ष है, क्रोधी राजा छोड़ देने योग्य है और विद्वानोंको विद्वान् ही प्रिय अथवा मान्य है।

२०२ किसी देवीने पूछा कि हे माता, स्वरके समस्त भेदोंमें उत्तम स्वर कौनसा है ? शरीरकी कान्ति अथवा मानसिक रुचिको नष्ट कर देनेवाला रोग कौनसा है ? पति को कौन प्रसन्न कर सकती है ? और उच्च तथा गम्भीर शब्द करनेवाला कौन है ? इन सभी प्रश्नोंका उत्तर माताने दो दो अक्षर जोड़कर दिया जैसे कि स्वरके समस्त भेदोंमें वीणाका स्वर उत्तम है, शरीरकी कान्ति अथवा मानसिक रुचिको नष्ट करनेवाला कामला (पीलिया) रोग है, कामिनी स्त्री पतिको प्रसन्न कर सकती है और उच्च तथा गम्भीर शब्द करनेवाली भेरी है।

२०३ कोई देवी पूछती है कि हे माता, किसी वनमें एक कौआ संभोगप्रिय कागलीका निरन्तर सेवन करता है'। इस श्लोकमें चार अक्षर कम है उन्हें पूरा कर उत्तर दीजिये। माताने चारों चरणोंमें एक एक अक्षर बढ़ाकर उत्तर दिया कि हे कान्तानने, (हे सुन्दर मुखवाली), कामी पुरुष संभोगप्रिय कामिनीका सदा सेवन करते हैं।

२०४ किसी देवीने फिर पूछा कि हे माता, तुम्हारे गर्भमें कौन निवास करता है ? हे सौभाग्यवती, ऐसी कौनसी वस्तु है जो तुम्हारे पास नहीं है ? और बहुत खानेवाले मनुष्यको कौनसी वस्तु मारती है ? इन प्रश्नोंका उत्तर ऐसा दीजिये कि जिसमें अन्तका व्यञ्जन एकसा हो और आदिका व्यञ्जन भिन्न भिन्न प्रकारका हो। माताने उत्तर दिया 'तुक्' 'शुक्' 'रुक्' अर्थात् हमारे गर्भमें पुत्र

निवास करता है, हमारे समीप शोक नहीं है और अधिक खाने वालेको रोग मार डालता है।

२०५ किसी देवीने पूछा कि हे माता, उत्तम भोजनोंमें रुचि बढ़ाने वाला क्या है ? गहरा जलाशय क्या है ? और तुम्हारा पति कौन है? हे तन्वंगि, इन प्रश्नोंका उत्तर ऐसे पृथक् पृथक् शब्दोंमें दीजिये जिनका पहला व्यंजन एक समान न हो। माताने उत्तर दिया कि 'सूप' 'कूप' और 'भूप' अर्थात् उत्तम भोजनोंमें रुचि बढ़ानेवाला सूप (दाल) है, गहरा जलाशय कुआं है और हमारा पति भूप (राजा नाभिराज) है।

२०६ किसी देवीने फिर कहा कि हे माता, अनाजमें से कौन सी वस्तु छोड़ दी जाती है ? घड़ा कौन बनाता है ? और कौन पापी चूहोंको खाता है ? इनका उत्तरभी ऐसे पृथक् पृथक् शद्बोंमें कहिये जिनके पहलेके दो अक्षर भिन्न भिन्न प्रकारके हों। माताने कहा 'पलाल' 'कुलाल' और 'बिडाल' अर्थात अनाजमें से पियाल छोड़ दिया जाता है, घड़ा कुम्हार बनाता है और बिलाव चूहोंको खाता है।

२०७ कोई देवी फिर पूछती है कि हे देवी, तुम्हारा सम्बोधन क्या है ? सत्ता अर्थको कहनेवाला क्रियापद कौनसा है ? और कैसे आकाशमें शोभा होती है ? माताने उत्तर दिया 'भवति' अर्थात् मेरा सम्बोधन भवति, (भवति शब्दका संबोधनका एकवचन) है, सत्ता अर्थको कहनेवाला क्रियापद 'भवती' है (भू धातुके प्रथम पुरुष एकवचन) और भवति अर्थात् नक्षत्र सहित आकाशमें शोभा होती है।

२०८ कोई देवी फिर पूछती है कि माता, देवोंके नायक इन्द्रको और अतिशय नम्र हाथीको उत्तम लक्षणवाला कैसे जानना चाहिये ? माताने उत्तर दिया 'सुरवरद' अर्थात् जिनेन्द्र देवको 'सुरवरद-देवोंको वर देनेवाला कहते हैं और सु-स्व-रद अर्थात् उत्तम शब्द और दांतोंवाले हाथीको उत्तम लक्षणवाला जानना चाहिये।

२०९ किसी देवीने कहा कि हे माता, केतकी आदि फूलोंके वर्णसे संध्या आदिके वर्णसे, और शरीरके मध्यवर्ती वर्णसे तू अपने पुत्रको सिंह ही समझ। यह सुनकर माताने कहा कि ठीक है, केतकीका आदि अक्षर 'के' संध्याका आदि अक्षर 'स' और शरीरका मध्यवर्ती अक्षर 'री' इन तीनों अक्षरोंको मिलानसे 'केसरी' यह सिंहवाचक शब्द बनता है इसलिये तुम्हारा कहना सत्य है।

२१० फिर कोई देवी पुछती है कि हे माता, कौन और कैसा पुरुष राजाओंके द्वारा दण्डनीय नहीं होता ? आकाशमें कौन शोभायमान होता है ? डर किससे लगता है और हे भीरु ! तेरा निवास स्थान कैसा है ? इन प्रश्नोंके उत्तरमें माताने श्लोकका चौथा चरण कहा 'नानागारविराजितः'। इस एक चरणसे ही पहले कहे हुए सभी प्रश्नोंका उत्तर हो जाता है। जैसे – ना अनागाः, रविः, आजितः, नानागारविराजितः। अर्थात अपराध रहित मनुष्य राजाओंके द्वारा दण्डनीय नहीं होता, आकाशमें रवि (सूर्य) शोभायमान होता है, डर आजि (युद्ध) से लगता है और मेरा निवासस्थान अनेक घरोंसे विराजमान है।

२११ किसी देवीने फिर पूछा कि हे माता ! तुम्हारे शरीरमें गंभीर क्या है ? राजा नाभिराजकी भुजाएँ कहांतक लम्बी हैं ? कैसी और किस वस्तुमें अवगाहन (प्रवेश) करना चाहिये ? और हे पतिव्रते तुम अधिक प्रशंसनीय किस प्रकार हो ? माताने उत्तर दिया 'नाभिराजानुगाधिकं (नाभि. आजानु, गाधि—कं, नाभिराजानुगा—अधिकं) श्लोकके इस एक चरणमें ही सब प्रश्नोंका उत्तर आगया है जैसे, हमारे शरीरमें गंभीर (गहरी) नाभि है, महाराज नाभिराजकी भुजाएं आजानु अर्थात घुटनों तक लम्बी हैं, गाधि अर्थात कं गहरे कं अर्थात् जलमें अवगाहन करना चाहिये और मैं नाभिराजाकी अनुगामिनी (आज्ञाकारिणी) होनेसे अधिक प्रशंसनीय हूँ ।

हिन्दी विभाग

(गद्य खण्ड)

१ एक स्त्री और एक पुरुष साथ साथ आ रहे थे। मार्ग में स्त्रीकी सखी ने पुरुषकी ओर संकेत करके पूछा ये "तुम्हारे कौन हैं ?" उत्तरमें स्त्री ने कहा:– "इनकी मां मेरी मांकी सास है।" बताइये, उन दोनोंका आपसमें क्या सम्बन्ध होगा।

२ अपनी गोदमें लिए हुए एक बच्चेकी ओर संकेत करते हुए एक महिला कहती है:– "इसका पिता जिसका ससुर, उसका पिता मेरा ससुर।" बताइये, उन दोनोंका पारस्परिक सम्बन्ध क्या है ?

३ एक बालक दूसरे बालकसे पूछता है:– "तुम किसकी मां के पिता के पुत्र हो।"

४ एक खेतमें ससुर व दामाद कार्य कर रहे थे। दोपहर को घरसे मां-बेटी उनके लिए भोजन ले आयी। दोनों कहती हैं:– पिताजी भोजन कर लीजिए। उनका ऐसा कहना कहां तक ठीक है ?

५ एक परिवारमें मामा मामी रहते हैं। उनके पांच भांजे हैं और प्रत्येक भांजेकी एक एक बहन है। बताइये, मामाके घरके कुल कितने आदमी हैं ?

६ चार बालक चारों परस्पर विरुद्ध दिशाओंमें मुंह करके बैठे हुए हैं और उनके बीच एक मिठाई का थाल रखा हुआ है। उन चारों बालकोंने अपने हाथ पीछे किये बिना ही थालकी सारी मिठाई खा डाली। बताइये, कैसे खायी होगी ?

७ पूना और बम्बई के बीच १२० मील की दूरी है। पूनासे एक कार ४० मील प्रति घण्टे की गतिसे प्रस्थान करती है और उसी

समय बम्बई से एक कार ३० मील प्रति घण्टे की गतिसे प्रस्थान करती है। जिस समय दोनों कारें एक स्थान पर मिलेंगी, उस समय कौनसी कार पूनासे अधिक दूर रहेगी ?

८ "तुम्हारे चाचा तो इतने अमीर हैं। पर तुम ऐसे क्यों ? रामने मोहनसे पूछा। उत्तरमें मोहन ने कहा":– मेरे चाचा मेरे दादाके इकलौते लड़के है। इसलिए सारी सम्पत्ति उन्हीं को मिल गई।" बताइये, यह उत्तर सही है ?

९ एक जंगलमें एक वृक्ष पर दस पक्षी बैठे थे। एक शिकारी ने एक पक्षी को गोलीका शिकार बना दिया। बताइये, अब उस वृक्ष पर कितने पक्षी और बचे।

१० मेरी नींद जब टूटी तो मैंने घड़ीका एक टोना सुना। आधा घंटेके बाद फिर एक घंटा सुना। फिर आधा घंटा के बाद एक घंटा सुना। इसके बाद आधा घंटा बाद एक और घंटा सुना। बताओ, मेरी नींद कब टूटी थी ?

११ दो पिता और दो पुत्र एक गांव छोड़कर कहीं जाते हैं परन्तु गाँव की जनसंख्यामें कुल तीन ही व्यक्ति कम होते हैं। कैसे?

१२ चार बालक दिनमें चार बिस्कुटके डिब्बे समाप्त करते हैं तो एक बालक एक डिब्बा कितने दिनमें समाप्त करेगा ?

१३ एक किलो वजनके एक पत्थरको यदि कुतुब मीनार से नीचे गिराया जाय तो उसे जमीन पर आनेमें पन्द्रह सेकन्ड लगते हैं। यदि पांच किलो वजन वाले पत्थरको उसी स्थानसे छोड़ा जाय तो उसे नीचे जमीन पर आनेमें कितना समय लगेगा ?

१४ ऐसा कौनसा प्राणी है जो सुबह चार पैरों पर चलता है, दोपहर को दो पैरसे और शामको तीन पैर से ?

१५ एक ने एक वृक्षसे आम गिरते हुए देखा। दूसरा उसे उठानेके लिए दौड़ा। किसी तीसरेने उसे उठाया और पका है या नहीं, यह देखने के लिए चौथे ने उसे सूंघा। परन्तु खानेवाला कोई पांचवां ही था। बताओ, ये पांचों कौन थे।

१६ जन्म के बाद भी जो बिलकुल निश्चल पड़ा रहता है, वह कौन है ?

१७ एक साहूकार के दो पुत्रों को उसकी मृत्युके बाद मृत्युपत्र के अनुसार आधी–आधी सम्पत्ति मिली। लेकिन साहूकारके पास एक कीमती हीरा था जिसके देने के सम्बन्ध में उसने अपने मृत्युपत्र में लिखा था कि घुड़ दौड़ में जो पीछे रहे उसे यह हीरा दिया जाय। बच्चों ने घुड़ दौड़ करायी परन्तु दोनोंमें से किसी ने भी अपने घोड़े आगे नहीं बढ़ाये। पंचोंनें दोनों को एक मार्ग बताया। और दौड़ करायी। दौड़ में मृत्यु पत्र के विपरीत जो आगे आया उसीको पंचों ने वह हीरा दे दिया। बताओ, वह चाल क्या कैसी थी ?

१८ बारह बजे घड़ी के दोनों कांटे एक जगह मिल जाते हैं। बारह घण्टे के बाद पुनः वही स्थिति आती है। बताओ, चौबीस घंटोंमें कुल कितनी बार वे इसी प्रकार मिल सकेंगे।

१९ कटहलका वृक्ष है। उसमें पांच कटहल लगे हैं। उसपर एक सर्प बैठा है। दो व्यक्ति और दो कुत्ते भी संरक्षण कर रहे

हैं। चार चोर कटहलको तोड़ना चाहते हैं। कोई चोर हथियार न चलायेगा। युक्ति पूर्वक ही तोड़ना होगा। बताओ वे कैसे तोड़ेंगे।

२०　१११, ७७७, ९९९ इन अंकोंमें से कोई छः अंक निकाल दो जिससे बाकी के जोड़नेपर २० आवे।

२१　एक व्यक्ति एक भेड़िया, एक बकरी और कुछ पान लेकर चला। मार्गमें एक नदी पार करनी थी। नाव भी थी। परन्तु उससे एक ही वस्तुको साथ लेकर पार किया जा सकता था। यदि वह भेड़ियाको ले जाता तो बकरी पान खा जाती। यदि पान लेकर जाता तो भेड़िया बकरी खा जाता है। बताइये, वह कैसे पार उतरा ?

२२　एक संख्या अपने अंकों के जोड़ से सात गुनी है। विपरीत करने पर वह कम जाती है। बताइये, ऐसी संख्या कौन है ?

२३　एक व्यक्ति ने कुछ रुपये १५ आदमियों को बराबर-बराबर दिये। तब उसके पास दो रुपये बच गये। दूसरे दिन उतने ही रुपये तेरह आदमियों के बीच बराबर-बराबर विभाजित किये तो तीन रुपये बच गये। बताइये, वह व्यक्ति कुल कितने रुपये लेकर चला था।

२४　यदि डेढ़ मुर्गियां डेढ़ दिनमें डेढ़ अण्डे देती हैं। तो छः मुर्गियां छः दिनमें कितने अण्डे देगीं।

२५　चार गाड़ीवान बम्बई से चार गाड़ी अनाज ले जा रहे थे। मार्गमें नं. १ की गाड़ी के बैल थक गये दूसरे गाड़ीवान ने कहा

तुम्हारे पास जितना जितना वजन है, उतना उतना और रख दो, और साथ चलो। आगे चलकर नं. २ की गाड़ी के बैल भी थक गये। उसने भी वैसा ही किया यही स्थिति चारों गाड़ियों की हुई। घर पहुंचनेपर सभी गाड़ियों से बराबर अनाज निकला। बताओ, जिससमय गाड़ियां बम्बई से चलीं उस समय उनमें कितना अनाज भरा था ?

२६ तीन व्यक्तियोंने कुछ रोटियां बनायीं। सभीने तय किया कि सुबह उठकर खायेंगें। उनमें से एक रातमें उठा। उसनें रोटियों के तीन समान भाग किये। एक रोटी बच गई। उसे कुत्ते को देदी। एक भाग खा गया। कुछ देर बाद दूसरा व्यक्ति भी उठा। उसने भी तीन समान भाग कर एक भाग खा गया। एक एक रोटी बची। उसे कुत्ते को दे दिया। इस प्रकार कुत्तें को चार रोटियां मिल गईं। बताओ, कुल रोटियां कितनी थीं।

२७ दो व्यापारी किसी गांवमें घी खरीदने गये। उनके पास तीन कुप्पीं थीं। एकमें ८ किलो, दूसरी मे ५ किलो और तीसरीमें ३ किलो घी बनता था। गांवमें उन्हें एक जगह आठ किलो घी मिला। न उनके पास और न अहीरके पास कोई बांट अथवा तराजू थी। बताओ, उन्होंने कैसे बांटा ?

२८ दो टुकडों की सिलाई दो पैसे तो तीन टुकडो की कितनी ?

२९ १८० के ऐसे टुकडे बनाओ जो एक दूसरे के दूने हों।

३० वह संख्या कौनसी है जो उलटकर लिखनेमें दूनी हो जाती है।

३१ ३१ के पांच ऐसे टुकडे बनाओ, जो दूसरे के दूने हों ?

३२ एक भौंरोंके एक झुण्डका पांचवां भाग चम्पाकली पर और तीसरा भाग केतकी पर बैठा। और इन दो संख्याओं के अंतरका तिगुना मालती पर जा बैठा। एक भौंरा चमेलीकी सुगन्धसे मुग्ध होकर चला गया। बताओ, भौंरोंकी संख्या कितनी थी ?

३३ एक आदमी के पास २५ गायें हैं। वे एक गाय एक लीटर, दूसरी दो लीटर, इस तरह पच्चीसवीं गाय २५ लीटर दूध देती हैं। आदमी को पांच सन्तान हैं। वह इन गायों को इस तरह उनमें बांटना चाहता है कि उन सभी को बराबर दूध और बराबर गायें मिल सकें। बताओ कैसे बांटेगा ?

३४ कुछ भैंसें थीं। वे घर से निकलीं, तो तीन दरवाजों से बराबर संख्यामें निकलीं। आगे गईं तो पांच कुओं पर बराबर संख्यामें पानी पिया। फिर आगे गईं तो सात पेड़ोंके नीचे बराबर संख्यामें बैठ गईं। बताओ कमसे कम कितनी भैंसें थी ?

३५ एक आदमी ने एक वृद्धा से कहा:- मैं व्यापार करता हूं तो छः महीनेमें रुपये दूने हो जाते हैं। वृद्धा ने उसे दो पैसे दिये और कहा कि मेरे ये पैसे भी व्यापारमें लगा लो। जब वापिस आओ तो हिसाब कर दे देना। वह आदमी बारह वर्षों बाद आया। बताओ, वृद्धा को कितने पैसे मिले होंगे।

३६ लाख रुपये किलो कोई वस्तु है तो दो किलो कितनेकी हुई ?

३७ दो और दो मिलकर चार होते हैं, यह सभी जानते हैं। परन्तु हम कहते हैं-दो और दो मिलकर कुछ और भी होता है। क्या आप बता सकते हैं ?

३८ २+२ और २×२ को छोड़कर ऐसी कोई भी दो संख्यायें बताइये जिनका योग और गुणनफल एक ही हो।

३९ एक मील लम्बा तार यदि चार एकड़को घेरता है, तो चार मील लम्बा तार कितने एकड़ खेतको घेरेगा ?

४० एक सुपरिचित कमरेमें अंधकार है। वहां रखी अलमारीमें २४ मोजे आपने रखे हैं जिनमें आधे लाल और आधे काले रंगके हैं, किसी एक रंगका जोड़ी मोजा निकालनेके लिए आप जाते हैं तो बताइये आप कमसे कम कितने मोजे लावेंगे कि आपको बाहर आनेपर एक ही रंग का एक जोड़ा मिले ?

४१ हजार रुपये दस थैलियोंमें इस प्रकार विभाजित करो कि एक रुपये से लेकर हजार रुपये तक थैलियोंको खोले बिना ही चाहे जितना रुपया दे सकें।

४२ एक धनी व्यक्ति के यहां कुछ पालतू पशु-पक्षी हैं। उनके कुल छत्तीस शिर और सौ पैर हैं, बताइये, उसके यहां पशु कितने और पक्षी कितने हैं।

४३ वह कौनसी पूर्ण संख्या है जिसे १००० से गुणा करनेपर जो संख्या आये उससे बड़ी संख्या उसमें १००० मिलाने पर आती है।

४४ निर्मल और विमल की उम्र का जोड़ ग्यारह (११) वर्ष है। निर्मल विमल से नव(९) वर्ष बड़ा है। तो दोनोंकी उम्र क्या होगी ?

४५ १ से ५१ तक की संख्याओं को क्रमशः लिखो तो चार (४) का उपयोग कितनी बार करना पड़ेगा ?

४६ एक टेबिलपर परस्पर सटी हुई छह (६) पुस्तकें रखी हुई हैं । प्रत्येक पुस्तक में १२८ पृष्ठ हैं । बताओ, पहले और अन्तिम पुस्तक के बीचमें कितने पृष्ठ होंगे ?

४७ एक घड़ी में ६ बजे छः डंके पन्द्रह सेकन्ड में लगते हैं ? बताओ, बारह बजे सभी डंके बजनेको कितना समय लगेगा ?

४८ एक मनुष्य सन् १९६५ की रातको सोकर सन् १९६६ की सुबह को उठने का दावा करता है । क्या वह एक वर्ष सोया होगा ?

४९ मोहन को बीड़ी पीनेकी बुरी आदत थी । किन्तु उसमें एक गुण यह था कि वह मितव्ययी था । बीड़ी पीकर उसके अवशिष्ट भागको वह जमा करता था । ऐसे ६ भागोंसे वह एक बीड़ी बना लेता था । एक बार उसने ऐसेही ३६ भाग जमा किये बताओ, उसने उन भागों से कितनी बीड़ी बनायी होगीं ?

५० एक संख्यामें ९ मिलाने के बाद जो जोड़ आये उसे जोड़ को ४ से भाग देने पर भी वही संख्या आ जाती है । बताओ, वह संख्या कौन है ?

५१. मेरी अवस्था के दोनों आंकडे उलटाओ तो पिताजी की उम्र होती है । (अर्थात यदि मैं १७ वर्ष का हूं तो पिताजी ७१

वर्ष के होंगे) मेरी अवस्था २० वर्ष से अधिक है और पिताजी की अवस्था ६० वर्ष से अधिक है। हम दोनों की उम्र में ३६ वर्ष का अन्तर है। बताओ, हमारी अवस्था कितनी होगी ?

५२ एक पौधा ऐसा है कि आज उसका एक बीज दूसरे दिन दो बीज, तीसरे दिन चार बीज, चौथे दिन आठ बीज, पाचवे दिन सोलह बीज, इस तरह पूरे खेत में फैल जाता है। यदि उसका एक बीज डालने की बजाय दो बीज डालें तो कितने दिनमें वही खेत बीजों से भर जायगा ?

५३ निर्मला को घडी देखना नहीं आता था। किन्तु उसे डंके गिनना बरोबर आता था एक दिन पौने पांच बजे उसनें माँ से कहा "माँ माँ" आज सुबह से अभी तक मैने चालीस डंके गिने है। तो बताओ उसने डंके गिनना कितने बजे प्रारंभ किया होगा ?

५४ एक कक्षा के विद्यार्थी एक पंक्ति में खडे थे। नरेश ने देखा कि बांयीं तरफ से उसका स्थान सत्तरवां था और दाहिनी तरफ से उसका स्थान छठवां था। बताओ, उस पक्ति में कितने विद्यार्थी खडे थे ?

५५ आठ (८) के आठ अंको को इस तरह रखो कि उसका जोड १,००० आये ?

५६ चार (४) के सात अंको को इस तरह रखो कि उसका जोड १०० हो जाय ?

५७ चार (४) के सोलह अंकों को इस तरह रखो कि उसका जोड १००० हो जाय।

५८   १ १ १   सामने की संख्याओं में से ६ अंक इस तरह हटा
    ७ ७ ७   दो कि अवशिष्ट संख्याओं का जोड़ (योग) २०
    ९ ९ ९   हो जाय।

५९   ९ – –   सामने के प्रश्न में १ से ९ तक के अंकों का
    – ४ –   प्रयोग एक ही बार हुआ है। बताओ, बाकी
    – – १.   के अंक कैसे लिखे जावेंगे।

६०   १ से ९ तक के अंकों में से सब अंक और सब अंकों का एक ही बार उपयोग कर दो ऐसी संख्यायें बताओ जिसका जोड़ ९९,९९९ हो जाय।

६१   राजीव ने आलोक का पुस्तकालय देखकर उस से पूछा, "मित्र, तुम्हारे पास कितनी पुस्तकें हैं?" आलोक ने कहा, "मेरी पुस्तकों की संख्या को २, ३, ४, ५ या ६ द्वारा भाग देने पर प्रत्येक बार केवल १ (एक) ही बचेगा किन्तु ११ (ग्यारह) से भाग देने पर कुछ भी नहीं बचेगा। बताओ, आलोक के पास पुस्तकों की संख्या क्या होगी?

६२   मेरी घड़ी प्रतिदिन पाँच मिनिट पीछे हो जाती है। इस सोमवार को वह बारह बजे सही है। बताओ, वह घड़ी कितने दिन बाद दूसरे सोमवार को सही समय बतायेगी?

६३   अनिल गाँव के टावर से स्टेशन जाने के लिये निकलता है। वह तीन मील प्रति घंटे की गति से चलता है। चन्द्रकान्त ठीक दो घंटे बाद टावरसे निकलता है। उसकी चलने की गति ६

मील प्रति घंटा है । वह भी स्टेशन जाने के लिये अनिल के रास्ते पर चलता है । बताओ अनिल के जाने के बाद चन्द्रकान्त उसे कितने समय में पकड़ लेगा ?

६४ गीता को बीस इंच लम्बी और दो इंच चौडी पट्टियाँ बनानी हैं । उसके पास बीस इंच चौडा और चालीस इंच लम्बा, ऐसे तीन कागज हैं । एक पट्टी काटने को उसे चार सेकंड लगते हैं । तो कागज को बिना मोडे कमसे कम कितने समय में वह सब पट्टियाँ काट लेगी ?

६५ सोहन को पानी का कुँआ बन्द करवाना था । उन्होंने जितने मजदूर लगाये उतने दिन में काम पूरा हो गया । यदि ६ मजदूर अधिक लगाये होते तो वह काम एक दिन में ही पूरा हो सकता था । बताओ, सोहन ने कितने मजदूर लगाये होंगे ?

६६ नटपूर गाँव की आबादी तीन हजार से कम नहीं और चार हजार से अधिक नहीं, जब गाँव के लोगो को आठ, नव, पन्द्रह, अठारह या पच्चीस के समूह में गिनते हैं तो हर बार सात व्यक्ति बच जाते हैं । बताओ, गाँव की आबादी कितनी होगी ?

६७ १ से ५ तक की संख्याओं में से कोइ भी अंक का उपयोग केवल तीन बार इस तरह करो कि उसका जोड़ २४ हो जाय ?

६८ एक व्यक्ति के पास कुछ मुर्गियां हैं । पाँच पाँच मुर्गियों की पंक्ति बनानेपर चार मुर्गियाँ, चार चार मुर्गियों की पंक्ति बनाने पर तीन, तीन तीन मुर्गियों की पंक्ति बनाने पर दो और दो दो की पंक्ति बनानेपर एक मुर्गि बच जाती है । बताओ, उसके पास कुल कितनी मुर्गियां हैं ?

६९ मेहता कुटुम्ब में कुल सात भाई बहन थे। प्रत्येक व्यक्ति-का जन्म तीन तीन वर्ष के अन्तराल पर हुआ था। सबसे बड़े-का नाम था रमणलाल और सबसे छोटे का नाम था दिनेश। रमण-लाल से उसकी स्वयं की अवस्था पूछने पर उसने बताया कि "मै दिनेश से चार गुना बड़ा हूँ। तो उसकी अवस्था बताओ ?

७० ६४ के चार खंड इस तरह बनाओ कि पहले खंड में ३ जोड़ने पर, दूसरे खंड में से ३ घटाने पर, तीसरे खंड में ३ से घटानेपर तीसरे खंड में ३ से गुणा करने पर और चौथे खंड को ३ भाग देने पर एक समान उत्तर आये।

७१ एक कक्षा में चालीस विद्यार्थी हैं। उनकी गणित और अंग्रेजी की परीक्षा ली गई। अठारह विद्यार्थी गणित में और बीस विद्यार्थी अंग्रेजीमें उत्तीर्ण हुए। दोनों विषयों में उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थी केवल चौदह थे। बताओ दोनों विषयों में अनुत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थी कितने होंगे।

७२ एक नौकर को सेठने कहा, "यदि तू एक वर्ष काम करेगा तो तुम्हें १०० रुपये और एक हाथ-घडी दूंगा।" किन्तु सात महिने काम करने के बाद उसने नौकरी छोड दी। प्रतिफल स्वरुप उसे हाथ घडी और बीस रुपये मिले। बताओ, घडीका मूल्य क्या होगा ?

७३ मैंने छोटे भाई को एक अपूर्णांक संख्या लिख दी और उसे ३ से गुणा करने को बताया। उसने गुणा करने के बदले उसमें ३ जोड़ दिया। किन्तु उत्तर के अन्दर कुछ भी अन्तर नहीं आया। बताओ, वह अपूर्णांक संख्या क्या होगी ?

७४ एक किसान के पास कुछ मुर्गियां और बकरियाँ थीं। एक व्यक्तिने उससे मुर्गियों और बकरीयों की संख्या पूछी। उत्तर में उसने कहा, "मेरे पास ३६ शिर और १०० पैर हैं।" बताओ मुर्गियों और बकरियों की संख्या क्या होगी ?

७५ एक रेलगाडी ४० मील प्रति घंटे की गति से दौडती है। मार्ग मे एक बोगदा आता है। उस बोगदे में संपूर्ण प्रवेश के लिये गाडी को तीन सेंकड लगते है। (अर्थात ऐंजिन के प्रवेश के बाद तीन सेंकड मे गाडी के आखरी डिब्बे का अंतिम हिस्सा बोगदे के अन्दर प्रवेश कर लेता है।) यदि बोगदा आधा मील लम्बा हो तो उसे पूर्ण रुपसे पार करने के लिये गाडी को कितना समय लगेगा ?

७६ रमेश, सुरेश और नरेश तीनों मित्र थे। उनका गणेश नामका एक साथी था। गणेश ने एक बार उनको सत्तर अखरोट भेंट किये और पत्र में लिखा, "ये अखरोट आप लोग अपनी उम्र के अनुसार बाँट लें।" तीनों मित्रों ने नीचे लिखे अनुसार अखरोट बाँटे। जब रमेश ने चार अखरोट लिये तब सुरेश को तीन अखरोट मिले। उसी तरह जब रमेशको छह अखरोट मिले तब नरेश को सात अखरोट मिले।

तीनों मित्रों की अवस्था का जोड ३५ वर्ष हो तो प्रत्येक को कितने अखरोट मिले होंगे ?

७७ एक सेठने सुतार को काम पर रखा। किन्तु उसके साथ ...... रखी।

सेठ सुतार को प्रति दिन चार रुपये दे जिस दिन सुतार गैरहाजीर रहे उस दिन सुतार सेठ को पांच रुपये दे। अठारह दिन के बाद जब सुतार हिसाब करने बैठा तो उसने पाया कि गैरहाजरी के कारण उसे एक भी पैसा नहीं मिला। बताओ, उसने कितने दिन काम किया ?

७८ मुकेश ने एक घोड़ा चारसौ रुपये में बेच डाला। थोड़े दिन बाद उस ग्राहक ने वह घोडा पसंद न आने के कारण मुकेश को ही ३३० रुपये में वापिस दे दिया। वही घोडा मुकेश ने दूसरे ग्राहक को ३८० रुपये में बेच दिया। बताओ, कि इस व्यापार में मुकेश को कितना लाभ हुआ ?

७९ एक सेठ को चार लड़के थे। एक बार सेठने सोलह थैलियां तैयार कीं। उन पर एक, दो, तीन, चार इस तरह सोलह थैलियों पर १ से १६ नंबर लगाये। प्रत्येक थैलीमें उपर जितने नंबर लिखे थे उतना तोला सोना था। बादमें सेठने चारों लडकों को बुलाकर यह रहस्य समझा दिया। और कहा- तुम चार चार थैलियाँ इस तरह आपसमें बाँट लो कि प्रत्येक को बराबर २ हिस्सा मिले। बताओ, कि लडकोंने किन किन नंबरो की थैलियां आपसमें बांटी होंगी ?

८० नागपुर और रामटेक के बीच साईकिल दौड़ती है। नागपुर से हर घंटे एक साईकिल छूटती है। उसी तरह रामटेक से हर घंटे एक साइकिल नागपुर को आती है। नागपुर और रामटेक के बीच पूरे साढे चार घंटे का रास्ता है। राजेश नागपुर से रामटेक जाने के लिये रवाना होते है, बताओ, कि इस मुसाफरी के अंदर उन्हें कितनी साईकिल सामने मिलेंगी ?

८१ एक राजा के पास सात इंच लम्बी सोने की पाट थी। एक समय राजा बीमार हुए। प्रसन्न बने रहने के लिए उन्होंने एक विदूषक को निमंत्रित किया और उसे भेंट के रूपमें राजाने सोने की पाट में से प्रतिदिन एक इंच का टुकड़ा देने को कहा। इसलिये राजाने सोनीको बुलाकर वह उस पाट के सात टुकड़े करने को कहा। लेकिन विदूषक ने कहा, "मैं बताता हूँ उस तरह केवल तीन टुकडे करना। इस तरह भी राजा प्रति दिन मुझे मेरा मेहनताना दे सकेंगे।" बताओ, विदूषक ने कितने कितने इंच के टुकड़े करवाये होंगे ? और अपना मेहनताना हर रोज किस तरह होगा ?

८२ एक जेलमें तीन खंड थे। अ, ब और क उनके वह नाम थे। अ खंड में (११) ग्यारह कैदी, ब खंड में सात कैदी और क खंड में छह कैदी रहते थे। एक बार जेलरने सोचा कि यदि प्रत्येक खंड में समान कैदी हों तो अच्छी तरह व्यवस्था रखी जा सकती है। इसलिये उसने प्रत्येक खंड में आठ कैदी रखने का निर्णय लिया। लेकिन कैदियों को यह बात पसन्द नहीं आयी। इसलिये उन्होंने जेलर से झगड़ा किया। कैदियों और जेलर के बीच बातचीत के बाद निम्न लिखित निर्णय लिये गये।

(१) कैदियों को एक खंड में से दूसरे खंड में हटाने का संपूर्ण अधिकार जेलर को है।

(२) जेलर जब भी कैदियों को हटाये तो उसे एक शर्त का पालन करना होगा। मान लो कि यदि अ खंड में से कैदियों को हटाकर ब खंड में लाना हो तो उन कैदियों की संख्या उतनी ही होनी चाहिये जितनी की ब खंड के कैदियों की हो। अर्थात् एक

खंड में से दूसरे खंड में उतने ही कैदी हटाये जा सकते जितने कि दूसरे खंड में पहले में मौजूद हों। उपरोक्त नियमों के पश्चात् जेलर ने केवल तीन बार इस तरह परिवर्तन किये कि सब खंड में समान कैदी हो गये। बताओ, कि उसने किस तरह परिवर्तन किये होंगे ?

८३ एक लड़के को उसके पिताने नीबू बेचने भेजा। रास्ते में मदारी का खेल हो रहा था। लड़का खेल देखनें में मग्न था तब किसीने उसके नीबू चुरा लिये। जब लड़के ने देखा कि उसके नीबू किसीने चुरा लिये हैं तब वह रो पडा। किन्तु एक आदमी उसकी मदद के लिये आया और उससे कहा, "चल, मैं तुम्हें दूसरे नीबू दिलाता हूँ। बता तेरे पास कितने नीबू थे ? "लड़के ने कहा, "जब मैंने दो दो नीबू की जोडी बनायी तब एक नीबू बचा था। तीन तीन नीबू की जोडी बनाई तो दो नीबू, चार चार नींबू की जोडी बनाई तो तीन नीबू, पाँच पाँच की जोडी बनाई तो चार नीबू छः छ: की जोडी बनाई तो पाँच नीबू बचे थे। किन्तु सात सात नीबू की जोड़ी बनानेपर कुछ भी न बचा था। बताओ, कि लड़के के पास कितने नीबू थे ?

८४ सात मित्र महावीरजी के मन्दिर में नियमित दर्शन करने जाते थे। पहला मित्र हर रोज दर्शन करने जाता था। दूसरा मित्र हर दूसरे दिन जाता था। तीसरा मित्र हर तीसरे दिन जाता था। चौथा मित्र हर चौथे दिन जाता था। पाँचवा मित्र हर पाँचवें दिन दर्शन करने जाता था। छठवाँ मित्र हर छटवें दिन दर्शन करने जाता था। सातवाँ मित्र हर सप्ताह एक बार शनिवार के दिन

सब मित्र मन्दिर में मिल जाते

हैं तो बताओ कि एसा दिन कितने दिन के बाद आता होगा।

८५ मगनलाल सेठने दो मकान खरीदे। किन्तु व्यापार में घाटा लगने से दोनों मकान ६०-६० हजार रुपये में बेच डाले। एकमें उन्हें बीस प्रतिशत का लाभ हुआ और दूसरे में उतने ही प्रतिशत का घाटा हुआ। बताओ, कुल मिलाकर उन्हें लाभ हुआ या घाटा ?

८६ एक वैद्य दिन में रोगी को जाँचने के लिये जाता है तो ढाई रुपया और रातको जाता है तो पाँच रुपये फीस लेता है। उसने एक रोगी को बारह (१२) बार देखा और साढे सैंतालीस रुपये लिये। बताओ, कि उसने उस रोगी को रातमें कितनी बार देखा ?

८७ एक कागज पर निम्न लिखित आकडे लिखो।
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ १०। अब दो, तीन या चार आंकडे लेकर ऐसे तीन भाग बनाओ कि प्रत्येक भाग के पीछे एक आंकडा ही आये ?

८८ मैंने उमेश से पूछा, "अभी कितने बजे हैं" ? उसने कहा, "रातके बारह बजने में जितने घंटे बाकी हैं उसमें पांच जोडो उतने बजे है।" तो मैंने पूछा तब क्या समय हुआ होगा ?

८९ पुराने समय की बात है। सेठ लक्ष्मीचन्द बहारगांव जा रहे थे। रास्ता निर्जन था। जंगल में उन्हे पांच (५) चोर मिल गये सेठने अपने पास मामूली सी रकम रखी थी। उतने से चोरों को संतोष हुआ नहीं। किन्तु एक चोर ने शेठ को पहचान लिया और अपने साथियों से कहा, "ये तो सेठ लक्ष्मीचन्द हैं। इनसे हुन्डी

लिखा लेंगे तो पैसे मिल जायेंगे ।" सरदार ने सेठ को कहा, "चल सेठ लो ये कागज और उसपर नाथूराम पर हुन्डी लिख दे । हम उसीके गांव जा रहे हैं । उसके पास से हम हुन्डी की रकम वसूल कर लेंगे । तेरे पास अभी कुछ नही है तो चिन्ता नहीं ।" सेठ डर गये । फिर भी साहस पूर्वक कहा, "कितने रुपये लिखूं । पहले ने कहा, "सौ रुपये ।" सेठजी ने लिखा, "सेठ नाथूराम ये हुन्डी लानेवाले को मेरे खाते में से रु. ००१ देना । पहले चोर ने देखा ओर उसे संतोष हुआ । इतने में दूसरे चोरने कहा,, "चल, उस पर मेरा एक शून्य चढा दे ।" चोर तो केवल इतना जानते थे कि जितने शून्य अधिक उतनी रकम अधिक । सेठ ने डरते डरते एक शून्य चढा दिया । इसी तरह तीसरे, चौथे और पांचवे चोर का शून्य रकम पर चढ़ा दिया । पांचों को संतोष हुआ । सेठ लक्ष्मीचन्द को छोड़ दिया किन्तु चतुर सेठ ने रकम ०००००० १ लिखी थी । कल्पना की जा सकती है कि चोरों को सेठ नाथूराम के यहाँ क्या मिला होगा ?

गुजराती विभाग

(गद्य–खण्ड)
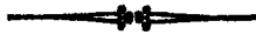
कोई नव संख्यानो सरवाळो ४५ थाय छे, ते संख्यामांथी तेवीज जातनी बीजी ४५ ना सरवाळावाळी संख्या बाद करी बाद-बाकीना अंकोनो सरवाळो ४५ आणो.

बे अेवी संख्या आपो के अेक बीजीथी बमणी होय; अने मोटी नानीने अेक आपे तो ते बन्ने सरखी थाय.

सुख दुःखनो खानार कोण ?

आपणा देशना कया स्व. शूरवीर हिंदु पुरूषना नामना अक्षरनो सरवाळो २०॥ छे ?

चार ९ ने अेवी रीते गोठवो के तेनो सरवाळो १०० थाय.

१ आज्ञार्थ, २ गवैयो, ३ अेक देशी राजानी अटक, ४ अेक रागनुं नाम अने ५ व्यंजन गोठवावाथी ते आडा ने ऊभा वांचतां अेकज वंचाशे.

अेक गामनुं नाम छ अक्षरमां छे. पहेला त्रण अक्षर मळीने 'ऊगवुं' अेवो अर्थ थाय छे. चोथो, पांचमो अने छठ्ठो अक्षर मळीने शहेर अेवो अर्थ थाय छे. बीजो अने छेल्लो अक्षर मळीने अेक प्राणीनुं घर थाय छे. पहेलो अने छेल्लो अक्षर मळीने शरीरनो अेक भाग थाय छे. चोथो अने पांचमो अक्षर मळीने 'पर्वत' थाय छे तो ते गाम कयुं ?

हुं ऊंघना अमल दरमियान बोलुं छुं. बाकी बीजे वखते तो भाग्येज घांटो पाडीने बोलुं छुं. हुं रडतुं नथी छतां छूपां आंसु पाडुं छुं. मने हवाना खोराक सिवाय कशी जरूर नथी. कहो, हुं कोण ?

९ हुं चार अक्षरनो अकारवाळो नरजातिनो शब्द छुं. मारो आदि ने अंतनो अक्षर मळवाथी 'पाणी' थाय छे. प्रथमना बे अक्षर 'फतेह' बतावे छे. छेल्ला बे अक्षर 'योद्धो' बतावे छे. बीजो ने त्रीजो अक्षर विकराळ दूत बतावे छे. बीजा अने छेल्ला अक्षरने उलटाववाथी, 'नाश' अेवो अर्थ थाय छे; तो कहो, हुं कोण ?

१० हुं त्रण अक्षरनी स्त्री पण चानक आपनारी छुं. वांकाने सीधो करनारी छुं मारो पहेलो अक्षर दाबो तो (अंग्रेजीमां) 'चोपडी' थाउं छु अने उलटावो तो अेक अरबी शब्द थाउं छुं. अने अंत्याक्षर दाबीने उलटावो तो चीना करी नाखुं छुं. हुं कोण ?

११ अेक स्त्री जातिनी वस्तुनुं बे सरखा भागमां बोडियां अक्षरमां नाम छे. तेनो पहेलो अने बीजो अक्षर छे तेज त्रीजो अने चौथो अक्षर छे. तेनो आदि ने अंतनो अक्षर मळे तो तिरस्कार सूचक शब्द थाय छे. ते मांथी अेक केफी वस्तु बने छे, छतां तेनो उपयोग उत्तम खोराकमां थाय छे. तो कहो, ते कई वस्तु हशे ?

१२ त्रण अक्षरनी अेक स्त्री छे. तेनो पहेलो अक्षर दाबो तो 'वाळी' अेवो अर्थ थाय छे. बीजो अक्षर दाबो तो 'कन्या' अेवो अर्थ थाय छे. वळी ते स्त्री आंधळां अने घरडांनी सारी सेवा बजावे छे, तेम ज जुवान शोखीला जनोनो शोख पूरो पाडे छे. कहो. ते स्त्री कई ?

१३ अेक पांच अक्षरनो मोटो ग्रंथ छे. तेना पहेला बे अक्षरनो अर्थ 'मोटो' थाय छे. त्रीजा अने चोथा अक्षरनो अर्थ 'बोजो' थाय

छे. चोथो अने पांचमो अक्षर अेक वाहन सूचवे छे. बीजो अने चोथो अक्षर मळीने अेक आभूषण थाय छे. बीजो अने छेल्लो अक्षर मळीने अेक अवयव थाय छे. त्यारे कहो, ते कयो ग्रंथ हशे ?

१४ अेक त्रण अक्षरनी अबळा जाति छे, पण प्रबळा छे. विद्वानो तेनुं मों काळुं करे छे, पण मनमां न लावतां ते तेनी कीर्ति फेलावे छे. तेनो पहेलो अक्षर दाबीने उलटावो तो 'जोद्धो' थाय छे अने तेने तद्दन उलटावो तो 'देश' अेवो अर्थ नीकळे छे. तो ते शुं हशे ?

१५ हुं त्रण अक्षरनो मरद छुं, मने पगथी के माथाथी वांचो पण हुं तो अेनो अे. जो जाणो तो हुं बहु उपयोगी अने किंमती छुं, अने न जाणो तो कंई नथी. मने काममां लई ने जवा देशों तो पण अने मफत जवा देशो, तो पण जवानो तो खरो ज पण पछी संभारशो. तो हुं कोण ?

१६ पांच अक्षरनो अेक पर्वत छे. पहेला अने छेल्ला अक्षरने उलटावो तो मुसलमाननुं जात्रानुं स्थळ थाय छे. बीजो अने पांचमो अक्षर मळीने अेक पात्र (रामायणनुं) थाय छे. पहेलो अने त्रीजो अक्षर मळीने पितृपक्षनुं अेक सगपण थाये छे. त्रीजो अने चोथो अक्षर मळीने अेक झाडना फुलनुं नाम थाय छे. कहो, ते कयो पर्वत ?

१७ हुं त्रण अक्षरनो नर छुं. मारो आखो अर्थ 'तरंग' थाय छे. मारो आद्याक्षर दाबवाथी संख्या बतावुं छुं. मध्याक्षर दाबवाथी 'बहादुर' अेवो अर्थ थाय छे. अने आदि तथा अंतना अक्षरो उलटा व्याथी 'सूर्य' अर्थ थाय छे. त्यारें कहो, हुं कोण ?

१८ हुं मारी जाति छुं त्यां हुं छुं त्यां तमे छो. हुने तमे साथे वसीअे छीअे. हुं नथी त्यां तमे पण नथी. मारा विना तमने बिलकुल चाले तेम नथी. आटलुं छतां तमे मने जोई उसता नथी. कहो. हुं कोण ?

१९ हुं आफ्रिकानुं अेक चार अक्षरनुं शहेर छुं. मारो पहेलो अने छेल्लो अक्षर मळीने 'पैसा' थाय छे. छेल्ला बे अक्षर अेक संख्या बतावे छे. त्रीजो अने पहेलो अक्षर मळीने अेक मांसाहारी पक्षी थाय छे. पहेली अने बीजो अक्षर मळीने 'दुनिया' अेवो अर्थ थाय छे, पण जो ते बन्नेने उलटावो तो अेक बळवान प्राणीनुं नाम थाय छे. तो कहो, हुं कोण ?

२० अेक दरेक रंगनो पदार्थ छे. तेनो छेल्लो अक्षर दाबवाथी अेक पक्षी थाय छे. वचलो अक्षर दाबवाथी मनुष्यने मय उपजावनार रूप थाय छे. पहेलो अक्षर दाबवाथी अेक गळयो पदार्थ (अपभ्रंश) थाय छे. कहो, ते कयो पदार्थ हशे ?

२१ अेक अेवी रकम छे. के तेम तेटला ज उमेरीअे, ने जे सरवाळो आवे तेने तेज रकमे गुणीअे, ने जे गुणाकार आवे ते मांथी तेज रकम बाद करी अे, ने जे बाकी रहे तेने ते ज रकमे भागीअे, तो ९ आवे. तो ते कई रकम ?

२२ अेक प्राणी अेवूं छे के सवारमां चार पगे चाले, बपोरे बे पग चाले, ने सांजे त्रण पगे चाले ?

उत्तर - विभाग

हिन्दी विभाग

(पद्य खण्ड)

१ कलम
२ कोयल
३ घड़ियाल
४ चोटी
५ तलवार
६ अनार
७ दीपक
८ भ्रमर
९ पोपट
१० मूल
११ बरसात, सर्प
१२ आंख
१३ चक्की
१४ चरखा
१५ चाक
१६ तबला
१७ तलवार
१८ तलवार
१९ ताला
२० तीर
२१ दर्पण
२२ दीपक
२३ नख
२४ नाड़ी
२५ नाड़ी

२६ परसेवा
२७ पान
२८ फूट
२९ बरछी
३० बगुला
३१ पक्षी का घोसला
३२ भ्रमर
३३ भुट्टा
३४ भुट्टा
३५ मैना
३६ मोढ़ुं
३७ रहाट
३८ रुपया
३९ बादल
४० बिजली
४१ हुक्का
४२ रुपया
४३ आग
४४ श्रवण के माता-पिता
४५ रात्रि
४६ श्रीकृष्ण
४७ जाली
४८ लक्ष्मी
४९ पाया नहीं
५० फेरा न था

५१ दाना न था (बुध्दिमान)
५२ लोटा न था
५३ अमल न था (नशा,काम)
५४ तला न था (तलवा)
५५ घड़ा न था
५६ मेल न था
५७ पार्वती-पति-पत्र
५८ सर्प
५९ अर्थ स्पष्ट है.
६० आरी
६१ आकाश
६२ आग
६३ तारे
६४ सूर्य, बादल, चन्द्रमा, तारे
६५ तारे और चन्द्रमा
६६ सूरज तपसी तप करै
ब्रह्मा निति नहायँ
इन्द्र जो सब रस उगिलै
धरती सब रस खाय
६७ तारे
६८ वर्ष, महीना, दिन
६९ समय
७० अंधेरा
७१ वर्ष, महीना और दिन
७२ तारे और चन्द्रमा
७३ दूजका चाँद
७४ धुवाँ, बादल
७५ धुवाँ
७६ आग
७७ ओस
७८ पानी
७९ ओला
८० ओस
८१ बर्र
८२ बर्र
८३ बिच्छू
८४ जोंक
८५ खटमल
८६ बया का घोंसला
८७ सुंइस (पानी का एक जानवर)
८८ दो आदमी एक ऊँट
८९ मोर
९० जूं
९१ घुन
९२ बिल्ली-मोर-घोड़ा-चील सारस-हाथी
९३ मधु मक्खीका छत्ता
९४ गाय, भैंस का थन
९५ चिड़ियों के पंख

९६ हिनहिनाना, चिंघाड़ना, रंभाना, भोंकना, मिमियाना, गरजना, कूकना, गुंजारना, भिनभिनाना, रेंकना.
९७ भुट्टा
९८ खिरनी
९९ सिंघाड़ा
१०० वरगद
१०१ महुवे की कली, फूल, फल और बीज
१०२ मूली
१०३ मूली
१०४ ईख
१०५ अमरबेल
१०६ लाल मिर्च
१०७ उड़द
१०८ कटहल
१०९ नारियल
११० चना
१११ अफीम का बीज
११२ अरहर
११३ हलदी
११४ पटुवा (सन्)
११५ तुलसीदल
११६ गोम
११७ खरबूजा
११८ आम
११९ जामुन
१२० गन्ना
१२१ आम, दो पैर, पाँच अंगुलियाँ, बत्तीस दांत, एक जीभ, एक पेट
१२२ लहसुन
१२३ प्याज या पानगोभी
१२४ मक्केका भुट्टा
१२५ कसेरु
१२६ लहसुन
१२७ नारियल की गिरी
१२८ इलायची
१२९ एक अंगूठा, चारअंगुलियाँ
१३० हाथ का अंगुठा
१३१ पीठ
१३२ आंख
१३३ आंख
१३४ सिरके बाल
१३५ ओंठ
१३६ दृष्टि
१३७ हाथ पैर के अंगूठ और अंगुलियाँ
१३८ जीभ

१३९ नाड़ी
१४० दांत और जीभ
१४१ नाड़ी
१४२ सरहज और ननदोई
१४३ दो बेटा एक बाप
१४४ माँ, बेटी, नवासी
१४५ नाईकी नहन्नी
१४६ दो कहारों की डोली
१४७ जाल
१४८ हथौडी
१४९ कुम्हार का चाक
१५० कोल्हू
१५१ निहाई, हथौडा, संडसी
१५२ मिट्टी के बर्तन
१५३ कुम्हार
१५४ कहार
१५५ मेघनाद=बादल की गरज
कुम्भ कर्ण – कुम्हार
चक्र – चाक
१५६ पकी हाँडी
१५७ कौर
१५८ पूरी
१५९ भैंस का थन और दूध
१६० उड़द या मूंगकी दाल
१६१ भात
१६२ बड़ी पकौडी
१६३ पान, सुपारी, कत्था, चूना
१६४ जलेबी
१६५ गन्नेका रस
१६६ दही
१६७ कचौडी (उड़द और गेहूँ)
१६८ पान, सुपारी, कत्था, चूना
१६९ चलनी
१७० दीपक
१७१ पलंग
१७२ कुआ
१७३ बत्ती और तेल
१७४ खाद
१७५ चूड़ीका जोड़
१७६ झाड़ू
१७७ खाट
१७८ नथुनी
१७९ दीपक
१८० सुई
१८१ पैवन्द
१८२ कढाई और तवा
१८३ सांकल
१८४ पोतना, जिससे चूल्हा पोता (साफ) जाता है
१८५ पीकदानी

१८६ सुई-धागा
१८७ चरस (मोट)
१८८ तराजू
१८९ साईकिल
१९० हेंग्न (सिरावन) हेंग्न चार बैल खींचते हैं और दो आदमी चलाते हैं
१९१ दुकन(पांचा)जिससे किसान अन्नका डठल इकट्ठा है.
१९२ किवाड़
१९३ मूसल
१९४ काजल
१९५ काजल
१९६ हल
१९७ नार(रस्सी) और मोट (चरस)
१९८ बेंडी (सिचाई के लिए कुंएसे डोल द्वारा पानी निकालना)
१९९ दातुन
२०० तराजू
२०१ सुई–धागा
२०२ चटाई
२०३ कंघी
२०४ दावात
२०५ ताला
२०६ सतरंज
२०७ माली चाहे बरसना,धोबी चाहे धूप। साहू चाहे बोलना, चोर चाहे चूक।।
२०८ नयन सरोवर पाल बिनु, धरम मूल बिनु डारि। जीव पखेरु पंख बिनु।। मौत नींद बिनु काल।।
२०९ पुस्तक
२१० केचुंआ
२११ आदमी
२१२ मृदंग
२१३ शंख
२१४ सींग
२१५ केंचुल
२१६ अक्षर
२१७ टट्टूर
२१८ धनुष्यबाण
२१९ रेलगाड़ी
२२० घड़ी
२२१ टेलीफोन
२२२ रेलगाडी
२२३ दस्ताना
२२४ धूल

२२५ घरघराहट
२२६ श्रवण कुमार
२२७ मैदान
२२८ दाल दलने की चक्की
२२९ साहूकार का ब्याज
२३० आगरा
२३१ मट्ठे में मक्खन
२३२ रावण और मंदोदरी
२३३ पार्वती, स्वामी कार्तिकेय और शिव
२३४ मोमबत्ती
२३५ स अक्षर
२३६ रहंट
२३७ खाई
२३८ तलवार
२३९ हड़ताल
२४० पानी की घड़ी
२४१ नरसिंह
२४२-४३ वांझ का पुत्र, अंधा, अमावस्या की रात में पुर्ण चंद्रमा
२४४ पायजामा
२४५ पगदंडी
२४६ चिकारा (सारंगी की तरह का एक बाजा)
२४७ महुआ
२४८ पान का बीड़ा
२४९ भौंरा
२५० घोंघा
२५१ झींगा, मछली
२५२ गगरी
२५३ पैबंद
२५४ हुक्का
२५५ तराजू
२५६ परछाई
२५७ आम
२५८ खरगोश
२५९ दर्पण (ऐनक)
२६० कुतुबनुमा
२६१ चाकू
२६२ सांपकी केंचुल
२६३ दूध, दही, मक्खन, मट्ठा
२६४ आग
२६५ हाथी
२६६ कुंआ
२६७ मशक
२६८ चिलम
२६९ आंत
२७० महुवा

२७१ बबूल
२७२ जुलाहे का गज और गजी
२७३ ढाकका पत्ता
२७४ हुक्का
२७५ मच्छर
२७६ चींटा
२७७ चक्की
२७८ झाडू
२७९ ग्राहक- उड़द क्या भाव ।
दुकानदार- ग्यारह किलो।
ग्राहक- साफ कर लूंगा
दुकानदार-तब दस किलो
दूंगा ।
२८० तीन तीतर
२८१ तीन भैंस, पन्द्रह गाय,
दो बकरी ।
२८२ मन
२८३ दो जोडी बैलों का पटेला
या हैंगा
२८४ १,३,९,२७ किलोके बांट
२८५ छब्बिस पर चौबिस धरे।
तापर चारि सुजान ।
सात सूत्र दहिने धरें,
यही विया परमान ॥
२८६ १०६४४४८०० दिनमें
२८७ —
२८८ आरी
२८९ आग
२९० चौकी
२९१ छाता
२९२ दीपक
२९३ कोयला
२९४ शहद का छत्ता
२९५ आग
२९६ दर्पण
२९७ दीपककी बत्ती
२९८ बंन्दूक
२९९ भुट्टा
३०० पान
३०१ फूट कलह

हिन्दी - विभाग

(गद्य - खण्ड)

१ पति या देवर।

२ भाई - बहन ।

३ मैं अपने भांजे की मांके पिताका पुत्र हूं।

४ दामादकी पत्नी व उसकी पुत्री । दामादकी पत्नी व पुत्री ये दोनो मां-बेटी हुई। दामादकी पत्नीका पिता उसका ससुर है। इसलिए दामादकी पत्नी अपने पिता को अर्थात् दामादके ससुरको और दामादकी पुत्री अपने पिताको अर्थात् दामादको भोजन करने के लिए कहती हैं।

५ आठा एककी बहन सबकी बहन होगी।

६ चारों बालकों का मुंह एक दुसरेकी ओर था। इसलिए परस्पर विरुद्ध था। बीचमें मिठाई रखी हुई थी। फिर हाथ पीछे ले जाने की क्या आवश्यकता ?

७ दोनो कारें पूनासे समान दूरीपर रहेंगी।

८ चाचा यदि अपने पिताके इकलौते लड़के रहे तो फिर मोहन-का जन्म कैसे हुआ।

९ एक भी नहीं, क्योंकि गोलीकी आवाज सुनकर सब उड़ जावेंगे।

१० बारह बजेका अन्तिम टोला सुना, फिर साढे बारहका, एकका, और डेढका ।

११ जानेवालें में पितामह, पिता और पुत्र ये तीन व्यक्ति थे। इसीमें से पिता और दो पुत्र आ जाते हैं।

१२ चार दिनमें

१३ उतनाही समय लगेगा। सम्बन्ध गतिसे है, न कि वजनसे।

१४ मनुष्य। मनुष्य अपने जीवनके सुबह (बाल्यावस्था) में चारपैरोंसे। दोपहर (युवावस्था) में दो पैरोंसे। शामको (वृद्धावस्था में) तीन पैरोंसे चलता है। तीसरा पैर उसका है लाठी।

१५ आंख, पैर, हाथ, नाक और मुंह।

१६ अण्डा

१७ पंचोंने दोनों पुत्रों को एक दूसरेके घोड़े बदलकर दौड़में भाग लेने को कहा। ताकि जो घुडसवार प्रथम आवेगा उसीका घोडा पीछे रहा माना जावेगा और वही हीराका अधिकारी माना जावेगा।

१८ तेईस बार।

१९ एक आदमी घरकी दूसरी ओर जाकर किसीके घरमें आग लगा दे। दोनो पहरेदार उसे बुलाने दौडेंगे। इधर किसी झाड़ीमें बौका, गीदड की बोली बोलदे। दोनों कुत्ते उस तरफ बढ जावेंगे। एक व्यक्ति मोरकी बोली बोलदे सर्प भाग जावेगा फिर चौथा व्यक्ति आनन्दसे कटहल तोड़ सकता है।

२० ७, ७, ७, १, ९, ९.

२१ आदमी सर्व प्रथम बकरी के साथ नावसे नदी पार गया। फिर पान ले गया और बकरी को वापिस लेता आया। फिर भेडियों को वापिस लेता आया। भेडियों को नदी पार ले गया और बकरी को वहीं छोड दिया। फिर वापिस आकर बकरी को ले गया।

२२ ६३

२३ १०७

२४ चार

२५ नं. १–३३ मन, नं.२–१७ मन, नं.३–९ मन, नं.४–५ मन।

२६ ७९

२७ पहले आठ सेरवाली कुप्पीमें से ५ किलो निकालकर पांच किलोकी कुप्पीमें भरा। फिर पाँच किलोकी कुप्पीमे से तीन किलो निकालकर आठ किलो की कुप्पीमें भर दिया। अवशिष्ठ दो किलो तीन किलो की कुप्पीमें भर दिया फिर आठ किलो वाली कुप्पीमें पांच किलो भरा। फिर पांच किलो वालीमें चार किलो बचा था और तीन किलो मिलाकर चार किलो दूसरेको मिल गया।

२८ चार पैसे

२९ १२, २४, ४८, ९६

३० ३

३१ १, २, ४, ८, १६

३२ १५ भौंरे

३३ पहला लड़का- १, ७, १३, १९, २५; दुसरा लड़का- २, ८, १५, २०, २१; तीसरा लड़का- ३९, १५, १६, २२., चौथा लड़का- ५, १०, ११, १७, २३., पाचवां लड़का- ५, ६, १२, १८, २५

३४ १०५ भैंसे

३५ ५२४२८८ रुपये

३६ दो रुपये की।

३७ बाईस २२

३८ ३ और– १½ या क और– १$\frac{१}{क-१}$ ।

३९ सोलह एकड़।

४० तीन

४१ १ + २ + ४ + ८ + १६ + ३२ + ६४ + १२८ + २५६ + ४८९

४२ चौदह पशु और बाईस पक्षी

गुजराती-विभाग

[पद्य - खण्ड]

१ कलम
२ जवासो नामक बनस्पति
३ थांभलो
४ चार पक्षी ने तीन पांवड़ा
५ समुद्र
६ घण्टा
७ कलम
८ खडीयो
९ हुक्को
१० नदी
११ मा-दीकरी
१२ कुसम्प
१३ दौडे (मकाई)
१४ बुरशी
१५ नाड़ी
१६ नाळियेर
१७ उगलो
१८ शेरडी
१९ केरी
२० ढाल
२१ बरछी
२२ पाणिनो करो
२३ श्रवण (कावडवालो)
२४ मिठु (नमक)
२५ कामळ
२६ सोगाठांवाली
२७ होड़ी
२८ चौर
२९ छत्रु (९६)
३० ७ ने ५
३१ रसना (जीभ)
३२ वरस
३३ घण्टे
३४ कोस
३५ दही
३६ रेतदानी
३७ रेंटियो
३८ आगगाड़ी
३९ चन्द्र (बीजनु)
४० मृदंग
४१ कलदार (रुपियो)
४२ चोटलो
४३ तीर
४४ धुमाडो
४५ कलम
४६ टाढ (ऊंडी)
४७ निद्रा
४८ भूख
४९ बीड़ी
५० तालुं

५१ शेरडी
५२ घड़ियाल
५३ राई
५४ तलवार
५५ पावड़ी- १ वर्ष २ माह
३ दिन ४ पलघड़िया
५ घडी ६ पावडी
५६ पड़छायो
५७ चांदलो
५८ मोती
५९ चूडो
६० दीवानु, काजलअथवा मेंश
६१ चम्पानो फूल
६२ ताम्बूल
६३ दीवो पवनथी ओलवायछेते
६४ कस्तूरी
६५ परवाज
६६ पाणीनी घटमाल
६७ पलंग
६८ हिण्डोला खाट
६९ मधपुडो
७० सर्पनी कांचली
७१ देवनी घण्टा
७२ कुम्भारनु चाक
७३ घाणी
७४ जे वड़े पोंआ संम्धाय छे
ते टीकडी।
७५ वलोणु
७६ पाणीनो कोष
७७ पाणी परवाल
७८ कपास
७९ तीर
८० कांचडो
८१ झारी
८२ चांचड
८३ छाश
८४ कोलु, शेरडी पीलवानो
८५ सोनु अने माटी
८६ मूंछ
८७ पडाई (पतंग)
८८ रेसमनो रेंटियो
८९ झरणाइ, अणगुं
९० कटारी
९१ चमण
९२ तलवार
९३ माटीना रमकड़ा
पडघाथी मांगी गया।
९४ घड़ियाल
९५ वीस मडनी कांडी
९६ संवत्सर अथवा वर्ष

९७ पावडी नो ओको
९८ पत्रानु
९९ सर्पिनी कांचली
१०० नावडुं
१०१ टिपडुं
१०२ दसशेरो
१०३ ओखानी रती
१०४ त्राजनुं
१०५ पींजारानी तात
१०६ तंबूरो
१०७ खाटलो अने भरवानी पाटी
१०८ माखी
१०९ तोप
११० नगारू
१११ नालियेर
११२ सोगटांबाजी
११३ पान, ताम्बूल, नागरवेल, चूनो, काथो, अने फोफल
११४ आडु
११५ आकाश
११६ नेत्र
११७ कवि
११८ ——
११९ मूंछ
१२० लवण (मीठ)
१२१ वींछी
१२२ सर्पिनी कांचली
१२३ शेरडी
१२४ आंकडो
१२५ करवत
१२६ खडियो—कलम
१२७ गरज
१२८ दोरडुं
१२९ पाघडी
१३० पितळनी दिवी
१३१ लाख

गुजराती – विभाग

(गद्य -- खण्ड)

१ ९८, ७६, ५४,३२१=४५

१२३४५६७८९=४५

८६४१९७५३२=४५

२ ४ ने २

३ समय

४ परताप, ५ + २ + ८॥+५=२०॥

५ ९९$\frac{९}{९}$

६

गा

गा य क

गा य क वा ड

क वा ली

ड

७ उदयनगर

८ नाक

९ जयमल

१० चाबुक

११ खसखस

१२ लाकडी

१३ महाभारत

१४ कलम

१५ कलाक

१६ काराकोरम

१७ विचार

१८ हवा

१९ जंगबार

२० कागल

२१ पांच

२२ मनुष्य